—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214915

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

दिसम्बर, 2006 वर्ष 5 अंक 10

हम से वतन का बांका पन

मुस्लिम हैं हम, हम से वतन,
हम से वतन का बांकापन
सहरा व बन, हम से चमन,
हम से रवां गंगो जमन
हिन्दोस्तां अपना वतन,
अपना वतन प्यारा वतन
हम बूए गुल्हाए चमन
हम मेहरे तांबां की किरन
मुस्लिम हैं हम, हम से वतन
हम से वतन का बांकापन

(मुहम्मद सानी हसनी)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द से अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❑ ईदे कुर्बां	सम्पादकीय	3
❑ कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंज़ूर नोमानी	5
❑ प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
❑ भारत की सभ्यता पर मुसलमानों का प्रभाव	मौ०स० अबुल हसन अली हसनी	9
❑ सीरतुन्नबी	सै० सुलैमान नदवी	11
❑ संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी	14
❑ भय और निर्भयता	एम हसन अन्सारी	16
❑ नाना नानी हज को चले	उबैदुल्लाह	17
❑ आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	19
❑ धार्मिक क्रान्ति का युग	श्री नेत्र पाण्डेय	21
❑ हुक्मे नबी है (स०)	अबू मर्गूब	23
❑ दिल की बीमारियां	आरती सक्सेना	24
❑ पाठकों से	इदारा	26
❑ इस्लाम और औरतों के अधिकार	अनीस अहमद नदवी	27
❑ अक्ल हैरान है	इदारा	30
❑ नाम हम रौशन करें इस्लाम का	मौ० मु० सानी हसनी	32
❑ सोंठ और सुहागा	दिहार्ती चिकित्सक	33
❑ कुर्बानी की कहानी (पद्य)	अबू मर्गूब	34
❑ प्रदूषण को करामत समझ बैठे...	शमीम तारिक़	36
❑ शैक्षिक पिछड़ा पन दूर करने के कुछ सुझाव	सय्यिद हामिद	37
❑ सच्चर कमेटी की रिपोर्ट	अन्दलीब अख़्तर	39
❑ अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी	40

❑❑❑

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

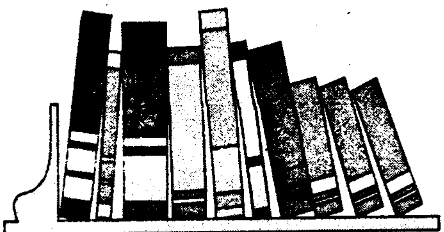

ईदे क़ुर्बां

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

जब हमारे नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा हिजरत फ़रमा कर आ गये तो मअ़लूम हुआ कि मदीने के मुसलमान साल के दो दिनों में खुशियां मनाते हैं और इन दिनों को मेहर जान और नव रोज़ कहते हैं। जब हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने इन दिनों के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया तो लोगों ने बताया कि इन दोनों दिनों में हम इस्लाम से पहले से ख़ुशी मनाते चले आ रहे हैं तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह ने इन दोनों दिनों के बजाए तुम लोगों के लिए दो दिन इस से बेहतर ख़ुशी मनाने के लिए मुक़र्रर (नियुक्त) किये हैं, ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा। (मफ़हूमे हदीस बहरूर्राइक़ रिवायत हज़रत अनस रज़ि०)

ईदुल फ़ित्र अभी आप रमज़ान के रोज़े रख लेने की ख़ुशी में पहली शव्वाल को मना चुके हैं। ईदे अज़हा जिसे अ़रबी में ईदुल अज़हा उर्दू में ईदे क़ुर्बा या बक़र ईद जिसे अ़वामुन्नास बक़रीद कहते हैं यह १० ज़िलहिज्जा को मनाई जाती है।

ईद की ख़ुशी हम लोगों ने नहा धोकर अच्छे कपड़े पहन कर ख़ुश्बू लगा कर क़िस्म क़िस्म की लज़ीज़ (स्वादिष्ट) सिवय्यां खाकर ग़रीबों को फ़ित्रा पहुंचाकर फिर धूम धाम से ईद गाह जा कर दो रकअ़ते शुकराने की अदा करके एक दूसरे को मुबारक बाद दे कर मनाई थी।

बक़रईद की खुशी भी हम उसी तरह मनाएंगे बस फ़र्क़ यह होगा कि सिवय्यां खाए बिना ज़रा जल्दी ईद गाह पहुंचे गे। रास्ते में एक साथ ज़ोर ज़ोर से तकबीरे तश्रीक़ *"अल्लाहु अक्बर् अल्लाहु अक्बर् लाइलाह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर् अल्लाहु अक्बर् व लिल्लाहिल् हम्द्"* इस तरह पढ़ते हुए जाएंगे कि सारा रास्ता अल्लाह की बड़ाई व तअ़रीफ़ की आवाज़ से गूंज जाए और सुनने वालों के लिए तनफ़्फ़ुर (घृणा) का नहीं कशिश (आकर्षण) का सबब बने फिर दो रकअ़तें पढ़ कर ख़ुत्बा सुन कर जल्द घर आएं और मालदार लोग क़ुर्बानी करें जल्दी से कलेजी या कोई गोश्त खा कर और अपने भाइयों को खिला कर ख़ुशी मनाएं। मैंने देखा बच्चे ईद के मुक़ाबले में बक़रईद में कुछ ज़ियादा ही ख़ुश नज़र आते हैं। बकरा ज़ब्ह होते देखते हैं, फिर गोश्त कटते देखते हैं कोई गुर्दा लेकर भून कर खा रहा है, कोई कलेजी औरतों तक पहुंचा कर भुनवा रहा है और मज़े ले लेकर खा रहा है। बच्चे मिलकर अ़ज़ीज़ों में गोश्त पहुंचा रहे हैं बड़ी चहल पहल है। दोपहर में गोश्त, शाम में गोश्त, ११ को गोश्त, १२ को गोश्त, बिरयानी कबाब, भूना, क़ोर्मा, जितना गोश्त साल भर में नहीं खाते वह तीन दिन में उड़ा जाते। मशहूर है और सच है कि क़ुर्बानी का गोश्त नुक़सान नहीं करता जब कि सिर्फ़ क़ुर्बानी का गोश्त हो किसी और खाने की और तेल मसालों की ज़ियादती न हो। ग़रज़ कि बकरईद की ख़ुशी १० ज़िलहिज्जा को तो रहती ही है लेकिन क़ुर्बानी की धूम धाम से ११, १२ को भी रहती है। अह़नाफ़ के यहां तो १२ तक क़ुर्बानी है, अहले ह़दीस ह़ज़रात तो १३ को भी क़ुर्बानी करते हैं।

बक़रईद के दिन जो तकबीरे तशरीक पढ़ी जाती है वह नौ ज़िलहिज्जा की फज्र की

नमाज़ से १३ ज़िलहिज्जा की अस्र तक हर फ़र्ज़ नमाज़ के बअ्द पढ़ी जाती है और इस की इतनी ताकीद है कि अगर इमाम सलाम फेरने के बअ्द ज़ोर ज़ोर से तकबीरे तशरीक़ न पढ़े तो मुक़तदी लोग (इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाले) ज़ोर ज़ोर से तकबीरे तशरीक़ पढ़ने लगें ताकि इमाम को याद आजाए और वह भी पढ़े।

बक़रअ़ीद की ख़ुशी के साथ एक मस्ताना इबादत भी जुड़ी हुई है जो बक़रअ़ीद की ८ से १२ तारीख़ में अदा की जाती है। जिसे ह़ज्ज कहते हैं। ह़ज्ज तो उन मालदार मुसलमानों पर जिन्दगी में एक बार फ़र्ज़ है जो अपने बाल बच्चों और जिन का रोटी कपड़ा उन पर फ़र्ज़ है उस के इन्तिज़ाम के बअ्द मक्का मुकर्रमा तक आने जाने और ह़ज्ज के दिनों के ख़र्च भर के पैसे रखते हों। लेकिन यह ऐसी इबादत है कि इस की तमन्ना हर मुसलमान करता है।

नमाज़ जिन पर फ़र्ज़ है हमारे मुल्क में उन में से मुश्किल से १० फ़ीसद लोग नमाज़ पढ़ते हैं, यही ह़ाल रोज़ों और ज़कात का है। इन बे नमाज़ियों में से एक को भी आप न पाएंगे कि वह दुआ करते हों कि ऐ अल्लाह मुझे नमाज़ का पाबन्द बनादे, रोज़ों का पाबन्द बना दे। अल्बत्ता बअ्ज़ नमाज़ी लोगों को ज़रूर इस की तौफ़ीक़ मिलती है और वह दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह हमारे जो भाई नमाज़ नहीं पढ़ते उन को नमाज़ी बना दे। लेकिन ह़ज्ज ऐसी इबादत है कि हर मुसलमान इस इबादत की तमन्ना करता है चाहे वह ग़रीब ही क्यों न हो और अक्सर लोग इस की दुआ भी करते हैं कि ऐ अल्लाह मुझे ह़ज्ज करना नसीब फ़रमा।

मक्का नगर के चारों तरफ़ कुछ जगहें मुक़र्रर हैं जिन को मीक़ात कहते हैं कहीं का भी ह़ाजी इह़राम बान्धे बिना मक्का की तरफ़ इन मीक़ातों के आगे नहीं बढ़ता। बहुत से ह़ाजी तो अपने मुल्क ही से इह़राम बान्धकर चलते हैं। इह़राम क्या है? पाक साफ हो कर सिले कपड़े अलग कर के बे सिली दो चादरें पहनना एक तहबन्द की तरह एक ऊपर से ओढ़ना, फिर मौक़अ़ हो तो दो रक़अ़त नमाज़ पढ़ना (हवाई जहाज़ में इस का मौक़अ़ नहीं रहता है) फिर ह़ज्ज या उ़म्रा जिस का इरादा हो उस की नीयत कर के ज़ोर ज़ोर से तल्बिया पढ़ना। तल्बिया यह है : लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक् लाशरीक लक लब्बैक इन्नल् ह़म्द वन्निअ़मत लक वल्मुल्क् ला शरीक लक

यह कलिमात अ़रबी में अदा किये जाते हैं लेकिन इनके मतलब पर ध्यान दीजिए, ह़ाजी बुलन्द आवाज़ से ऐसे जवाब दे रहा है जैसे उसे पुकारा गया हो : ऐ अल्लाह मैं ह़ाज़िर हूं, ऐ अल्लाह मैं ह़ाज़िर हूं, आप का कोई साझी नहीं मैं ह़ाज़िर हूं, सारी तअ़रीफ़ें, सारी निअ़मतें और सारी हुकूमतें तेरे लिये हैं तेरा कोई साझी नहीं। एह़राम की नीयत करके और तल्बिया पढ़ते ही आदमी ह़ज्ज की इबादत में दाख़िल हो जाता है। फिर वह चलता फिरता है, खाता पीता है, सोता है आराम करता है मगर इबादत में है। वह ८ ज़िल्हिज्जा को मिना जाएगा, ९ को अ़रफ़ात जाएगा, ९,१० के बीच की रात मुज़दलफ़ा में गुज़ारे गा, हर जगह यह मस्ताना नअ़रा बुलन्द रहेगा, १० ज़िल्हिज्जा को मिना आकर जब बड़े शैतान को कंकरी मारने को तैयार होगा तो तल्बिया बन्द हो जाएगा, अब अगर तमत्तुअ़ या क़िरान किया है तो क़ुर्बानी करे गा सर मुन्डाए गा अब इह़राम की चादरें उतर जाएंगी, नहा धोकर आम कपड़े पहनकर तवाफ़े ज़ियारत को ह़रम जाएगा तवाफ़े ज़ियारत कर के फिर मिना आएगा ११,१२ को रमी कर के मक्के आएगा फिर तवाफ़े वदाअ़ करके अल्लाह की तौफ़ीक़ से मदीना मुनव्वरा ह़ाज़िरी देगा। यह ह़ज्ज की पुरकैफ़ नूरानी इबादत इसी बक़रअ़ीद की ख़ुशियों के साथ जुड़ी हुई है।

क़ुरआन की शिक्षा

मौ० मंजूर नोमानी

आख़िरत

कुरआने-मजीद जिन हकीकतों को मानने कुबूल करने और उन पर ईमान लाने की पूरे ज़ोर से दावत देता है उन में खुदा की हस्ती और उस की सिफ़तों और तौहीद के बाद आखिरत का मसअला है।

यानी कुरआन कहता है कि जिस तरह अपने सिर की आंखों से खुदा को न देखने और अपने कानों से उस की आवाज न सुनने के बावजूद तुम्हारे नजदीक खुदा की हस्ती है, और उस का मौजूद होना एक ऐसी हक़ीक़त है जिस से किसी भी सलीम फितरत इन्कार नहीं कर सकती, इसी तरह यह भी हकीकत है जिस में किसी शक-व-शुब्हे की गुंजाइश नहीं है कि 'इस दुन्या की जिन्दगी के बाद एक और जिन्दगी है और वह दुन्या इस दुन्या की जिन्दगी की तरह आरजी (अस्थायी) और चंद दिनों की नहीं है, बल्कि वह दवामी (निरंतर) है और हर तरह से इस जिन्दगी की तुलना में हजारों लाखों गुना बढ़ी-चढ़ी है और उस जिन्दगी में हमारी इस दुन्या की नेकियों और बुरे अ़मलों की जज़ा और सज़ा मिलेगी।

खुदा की हस्ती और उस की सिफात की तरह आख़िरत की बात भी च्योंकि दीन-व-मजहब के लिए बुन्याद की हैसियत रखती है, इस लिए अल्लाह के सारे पैगम्बरों और उसकी नाज़िल की हुयी सब किताबों ने आख़िरत को मानने और उस पर ईमान लाने की दावत दी और कुरआने-मजीद चूंकि अल्लाह तआला की आखिरी किताब है इस लिये इस में तो आखिरत के बारे में इतना जोर दिया गया और अलग-अलग तरीकों से इस पर इतनी रौशनी डाली गयी कि बिलामुबालगा कहा जा सकता है कि इस का बड़ा हिस्सा आखिरत ही के बयान के सम्बन्ध में है।

कुरआने मजीद आखिरत पर ईमान लाने की दावत देने के साथ गौर-व-फिक्र करने वाले इन्सानों को यह भी बतलाता है कि "आखिरत" क्यों जरूरी है और इस का इन्कार कितनी बड़ी गुमराही है और उस के क्या-क्या नतीजे निकलते हैं, और आखिरत के बारे में जो शंकाएं जाहिलों और खुदा को न पहचानने वालों को होती हैं वे कितनी बे वकूफी की शंकाएं हैं।

फिर कुरआने-मजीद थोड़ी सी तफसील के साथ यह भी बतलाता है कि आखिरत में क्या-क्या सामने आने वाला है। नेक लोगों और अल्लाह के फर्मा बरदारों के लिये वहां क्या-क्या सामान हैं, और बदकारों और खुदा के ना फरमानों के लिय वहां कैसे-कैसे दिल-हिला देने वाले अजाब व सजाएं हैं। जन्नत में कैसी कैसी लज्जतें और बहारें हैं और दोजख में कैसी-कैसी होश उड़ा देने वाली तकलीफें और दर्दनाक सजायें हैं।

आखिरत क्यों जरूरी है ?

सबसे पहले आखिरत के जरूरी और यकीनी होने के मुतअल्लिक कुरआने-मजीद का बयान सुनिये।

कुरआन कहता है कि अगर जिन्दगी इसी दुन्या पर खत्म हो जाये और इस के बाद कोई और जिन्दगी न हो तो फिर दुन्या का यह सारा कारखाना, बिल्कुल बे मकसद हंगामा और एक व्यर्थ तमाशा और अपने पैदा करने वाले का एक बेकार का काम ठहरता है और फिर इस के पैदा किये जाने की कोई ऐसी वजाहत (व्याख्या) नहीं की जा सकती जो उस सब कुछ जानने वाले और हिकमत वाले अल्लाह के शायानेशान हो।

इस को जरा तफसील से यूं समझिये कि जरा सा गौर-व-फिक्र करने से साफ मालूम होता है कि इस सारे संसार में बनी नौअे-इन्सान (मानव जाति) की हैसियत और उसका दर्जा वही है जो एक घर में घर वाले का होता है मतलब यह है कि जिस तरह घर में घर के आदमियों के अलावा बहुत सी चीजें होती हैं मिसाल के तौर पर खाने पीने की चीजें पहनने के कपड़े, फर्श, तख्त, कालीन, पलंग, बिस्तरे, अलमारियां, मेज, कुर्सी, आइना और दूसरे खूबसूरती और आराइश के सामान, इसी तरह खाने पीने के बरतन,

रोशनी के लिए बिजली के कुमकुमे, सवारी के लिए सायकल, मोटर या सवारी के जानवर, दिल बहलाने के लिए तोता मैना, कबूतर जैसे परिंदे या बिल्ली, कुत्ते, इसी तरह बच्चों के तरह–तरह के खेल–खिलौने। लेकिन इन में से कोई चीज भी खुद मकसूद नहीं है बल्कि हर चीज घर में इसलिए रखी जाती है कि इनसान उस से काम ले, चाहे वह दिल बहलाने का, या घर की संजावट का या बच्चों के खेलने ही का काम क्यों न हो। बस इसी तरह इस दुन्या के कार खाने में गौर करने से मालूम होता है कि इन्सान के सिवा यहां जो कुछ भी है, जमीन, पहाड़, हवा, पानी, नदियां, नहरें, चांद, सूरज, चरिन्दे, परिन्दे, नबातात, मादनीयात (खनिज पदार्थ) सब की सब इन्सान के लिए हैं मानो इस सारी काईनात में अस्ल मक्सूद सिर्फ इन्सान है और जमीन व आस्मान का यह सारा कारखाना सिर्फ इन्सान के लिए बनाया गया है – और यह एक बिल्कुल खुली हुई हकीकत है कि इन्सान की इस दुन्या की यह चंद दिनों की जिन्दगी ख्वाब–व–खयाल से जियादा कुछ हैसियत नहीं रखती। और फिर सौ में एक दो भी तो ऐसे नहीं हैं जो अपनी जिन्दगी से खुश और सन्तुष्ट हों, बल्कि इस नाचीज लेखक का खियाल है कि अगर आखिरत की वह जिन्दगी न होती जिस की खबर नबियों (अ०) ने दी है, और कुरआने–मजीद ने जिस को पूरी तफसील से बयान किया है, तो फिर इन्सानों के लिए इस दुन्या में पैदा होने से हजार दर्जे बेहतर यह था कि वे सिरे से पैदा ही नहीं किये जाते, बल्कि इस से भी एक कदम और आगे बढ़ कर कहता हूं कि अगर आखिरत की जिन्दगी पर ईमान न होता तो मैं अपने पैदा किये जाने पर एहतिजाज करता, और यहां की हजारों फिक्रों और परेशानियों वाली इस चन्द दिनों की ज़िन्दगी के मुकाबले में सिर्फ अपने लिये नहीं बल्कि सब इन्सानों के लिए मैं किसी ऐसे तरीके से खुद कुशी (आत्म हत्या) को उचित समझता जिस में जियादा तकलीफ न होती।

बहर हाल इस दुन्या में पैदा होने से लेकर मौत तक इन्सानों को जो चंद सालों (वर्षों) की जिन्दगी मिलती है, जिस के शुरू का बड़ा हिस्सा बचपन की कमज़ोरियों और बेमजा बातों में गुजर जाता है, उस के बाद जवानी आती है तो ताकतों और तवानायियों के साथ हजारों की फिक्रों को और उन चाहतों और उमंगों को साथ लाती है जिन को पूरा करने का हर आदमी कोई सामान व साधन नहीं पाता फिर जवानी में ढलाव और ताकतों में कमजोरी आना शुरू होती है और कुछ समय के बाद बुढ़ापा अपनी सारी मजबूरियों बीमारियों और दुखों के साथ आ जाता है और अंततः इन्हीं मंजिलों से गुजर कर आदमी मौत के रास्ते इस दुन्या से चला जाता है। बस यही है कि हर इन्सान की दुन्या की जिन्दगी वह भी इस शर्त के साथ कि उस को पूरी तबई (सामान्य) उम्र मिल जाये। सोचिये, क्या किसी समझदार की अक्ल यह मान सकती है कि इन्सान की यह जिन्दगी कोई ऐसी बड़ी चीज के लिए इस सारे संसार का रचाया जाना दुरुस्त और हिकमत के मुताबिक कहलाया जा सकता हो?

बहरहाल बे चारे इन्सानों की इस मुख्तसर और बेमजा जिन्दगी के लिए ज़मीन–व–आसमान के इस पूरे निज़ाम को बनाना बल्कि खुद इन्सानों का पैदा किया जाना भी, हकीकत में एक एतिराज की बात और बेमकसद खेल–तमाशा है, अगर उस दुन्या की जिन्दगी न हो जिस की खबर नबियों (अ०) ने और अल्लाह तआला की किताबों ने हम को दी है।

कुरआने–मजीद ने इस पूरे मजमून को अपने बलीग (सारगर्भित) तकरीके और बहुत ही मुख्तसर शब्दों में इस तरह बयान किया है।

तर्जमा : क्या तुम्हारा खियाल है कि हम ने तुम को यूं ही बेकार पैदा किया है और अपनी दुन्या की जिन्दगी खत्म करने के बाद हमारी तरफ तुम्हारी वापसी नहीं होगी। पस बरतर है अल्लाह तआला की जात जो हकीकी बादशाह है, अकेला माबूद है जिस के सिवा कोई इबादत के काबिल नहीं, वह अर्शे–अजीम का मालिक है। (मोमिनून : ११५, ११६)

खुलासा यह है कि अल्लाह तआला जो हकीकी बादशाह, लाशरीक माबूद, और अर्श का रब है, उस के बारे में इस खयाल व गुमान की कोई गुंजाइश नहीं है कि उस ने इन्सानों को यूं ही बिला मक्सद और बेकार पैदा किया हो, बल्कि उस ने इन्सान को एक अहम (महत्वपूर्ण) मक्सद के लिए पैदा किया है और वह मकसद यह है कि इस दुन्या में रहकर वह अल्लाह तआला के दरबार की हाजिरी और आखिरत की जिन्दगी में अल्लाह तआला का खास फज्ल–व–इनाम हासिल करने की तैयारी करे जो उस

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

बुरी बात की ना पसन्ददीदगी और इन्कार

हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमः (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम पर उमरा हाकिम बनाये जायेंगे। इनकी बाज चीजों को पसन्द करोगे और बाज को नापसन्द करोगे। सो जिसने (ना पसन्दीदा बातों को) नापसन्द किया वह बरी हुआ, जिस ने (उन का) इन्कार किया वह बच गया, लेकिन जो राजी हुआ और उन का शरीक हो गया (वह खतरे में है) उन्होंने कहा, या रसूलुल्लाह ! हम उन से लड़ें। आपने फरमाया, नहीं, जब तक वह तुम में नमाज कायम करें। (मुस्लिम)

बुराई के बढ़ जाने पर अजाब

उम्मुलमोमिनीन ज़ैनब (र०) बिन जहश से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घबराये हुए तशरीफ लाये और जबान मुबारक से यह फरमा रहे थे, लाइलाह इल्लल्लाहु। (अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं), उस बुराई से जो करीब आ गयी है अरब के लिये खराबी है। याजूज-माजूज का पुश्तः आज खोल दिया गया। फिर अपने अंगूठे और कलमा की उंगली मिलाकर बताया कि इस तरह। मैंने कहा या रसूलुल्लाह ! क्या हम हलाक कर दिये जायेंगे हालांकि हम में नेक बन्दे भी हैं। आपने फरमाया, हां, जब बुराई बहुत बढ़ जायेगी। (बुखारी- मुस्लिम)

रास्ते का हक

हजरत अबू सईद (र०) खुद्री से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, तुम रास्ते में बैठने से बचो। लोगों ने कहा, या रसूलुल्लाह ! ये (मजलिसें) तो हमारे लिए जरूरी हैं। आपने फरमाया, अगर तुम्हारे लिए यह मजलिसें जरूरी हैं तो रास्तः को उसका हक दो। उन्होंने कहा, रास्तः का क्या हक है? आपने फरमाया, निगाहें नीची रखना, तकलीफदिह चीज को रास्ते से हटा देना, सलाम का जवाब देना, नेकी का हुक्म देना और बुराई से मना करना। (बुखारी-मुस्लिम)

आंहजरत (सल्ल०) का खिलाफशरअ़ काम न देख सकना

हज़रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सोने की अंगूठी एक आदमी के हाथ में देखी तो उसको उंगली से निकाल कर फेंक दिया, और फरमाया, बाज लोग इरादतन आग के अंगारे अपने हाथ में रखते हैं। आंहजरत (सल्ल०) के जाने के बाद लोगों ने उस शख्स से कहा कि अपनी अंगूठी ले और इस से दूसरे फायदे उठा। कहा कसम खुदा की मैं इसको कभी नहीं ले सकता। हुजूर (सल्ल०) तो इसे फेंक चुके हैं।

ज़ालिम हाकिम को नसीहत

हज़रत हसन बसरी (र०) से रिवायत है कि आअिज इब्नि अुमर (र०) अुबैदुल्लाह बिन ज्याद के पास आये और कहा, ऐ अजीज मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है, फरमाते थे कि बुरे हाकिम वह जालिम हैं जो लोगों को पाएमाल कर दें। पस तुम इससे बचो, ऐसा न हो कि तुम भी उनमें से हो। अुबैदुल्लाह (र०) ने कहा बैठिए भी, आप तो सहाबा के चोकर हैं। कहा क्या उनका भी चोकर था। चोकर तो उनके बाद हुआ है और दूसरों में है। (मुस्लिम)

बुराई न रोकने का वबाल

हजरत हुजैफः (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, उसकी कसम जिसके कब्जः में मेरी जान है, तुम जरूर नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको। वरना करीब है कि अल्लाह तआला तुम पर अजाब भेजे और फिर तुम उसको पुकारो और वह तुम्हारी पुकार न सुने। (तिर्मिजी)

अफ़ज़ल जिहाद

हज़रत अबू सईद (र०) खुदरी से रिवायत है कि नबीसल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, सबसे अफजल जिहाद जाबिर सुल्तान के मुंह पर इन्साफ की बात कहना है। (अबूदावूद-तिर्मिजी) •

हज़रत तारिक बिन शिहाबिल्बजली से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक आदमी ने ऐसे वक्त में सवाल

किया कि आप रकाब पर पांव रख चुके थे। पूछा, या रसूलुल्लाह ! कौन सा जिहाद अफजल है। फरमाया, इन्साफ की बात सरकश बादशाह के मुंह पर कहना। (नसई)

बनी इसराईल की पहली खराबी

हज़रत इब्नि मसऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, पहली खराबी जो बनी इसराईल में पैदा हुई वह यह कि कोई किसी बुरे आदमी से मिलता और कहता कि अल्लाह से डरो और जो कुछ तुम करते हो उसको छोड़ दो यह तुम्हारे लिये जाइज नहीं। फिर जब दूसरे दिन मिलता और उसको उसी हालत में पाता तो फिर उनको न रोकता, और (उल्टे) उनका हमप्याला हो जाता। पस जब वह यह करने लगे तो अल्लाह तआला ने उनके दिलों को यकसां कर दिया है। फिर फरमाया –

तर्जमा : बनी इसराईल के उन लोगों पर लानत की गयी, जिन्होंने कुफ्र किया। हजरत दाऊद (अ०) और ह० ईसा (अ०) की जबान पर एक वजह से कि वह नाफरमानी करते थे और हद से बढ़ने वाले थे, एक दूसरे को बुराई से नहीं रोकते थे जो उन्होंने की। बुरी बात थी जो वह करते थे। तुम उनमें बहुतों को देखते हो कि वह उन लोगों की सरपरस्ती करते हैं जिन्होंने कुफ्र किया। बुरी बात है जो उनके नफ्सों ने उनके लिए भेजा। अल्लाह उन पर नाराज हुआ और वह हमेशा अजाब में रहेंगे। अगर वह अल्लाह पर और उसके रसूल पर और जो उनकी तरफ उतारा गया है ईमान ले आते तो उनको दोस्त न बनाते लेकिन उनमें बहुत फासिक हैं। (सूरे माअिदः , रू०११ आ० ७८–८१)

फिर आपने फरमाया, मैं तुमको ताकीद करता हूं कि तुम उनको जरूर नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको। और जालिमों के हाथ पकड़ लो। उनको जबरदस्ती हक पर रोको और उनको हक पर मजबूर करो। वरना अल्लाह तआला तुम लोगों के दिलों को यकसां कर देगा। और तुम पर लानत करेगा जैसे उन पर की। (अबू दाऊद, तिर्मिजी)

अपना राहे–रास्त पर होना काफी नहीं

हजरत अबू बक्र सिद्दीक (र०) ने फरमाया, ऐ लोगो, तुम इस आयत को पढ़ते हो : –

तर्जमा : ऐ ईमानवालो ! तुम अपनी फिक्र करो, तुमको नुकसान न पहुंचा सकेगा जो गुमराह हो, जबकि तुम हिदायत पा चुके हो। (सू० माअिदः, रु० १४ आ० १०५)

और मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते सुना है कि जब लोग जुल्म करते देखें तो उनके हाथ पकड़ लें, वरना करीब है कि अल्लाह तआला अपने अजाब को आम कर दे। (तिर्मिजी, निसाई)

एअ़लान

अगर आप को इस्लाही तकरीर के लिए मुकर्रिर चाहिए तो आप शोब–ए–दावत व इरशाद से सम्पर्क करें, आप को सिर्फ़ लखनऊ से आने जाने का किराया देना होगा।

इन्चार्ज

शोब-ए-दावत व इरशाद

नदवतुल उलमा लखनऊ

मो0 9839274145

(पृष्ठ ६ का शेष)

की आखिरी और आला मंजिल है।

इसलिए इन्सान की यह चंद दिनों की जिन्दगी ही इस की निशानी और दलील है कि इस के बाद आखिरत की वह पायदार और तरक्की वाली जिन्दगी भी होनी चाहिए जिस की खबर नबियों (अ०) ने और अल्लाह की किताबों ने दी है, वरना इस दुन्या में इन्सान का आना एक बेमक्सद खेल–व–तमाशा होगा और अल्लाह की जात इस से पाक और बरतर है। इसी हकीकत को दूसरी जगह इन शब्दों में इर्शाद फरमाया गया है –

तर्जमा : और हम ने आसमानों को और जमीनों को और जो कुछ इन के बीच है, खेल तमाशे के तौर पर बेकार और बेमकसद नहीं बनाया है। (दुखान : ३८)

और सूरए–कियामह में इर्शाद है –

तर्जमा : क्या इन्सान खयाल करता है कि वह यूंही मोहमल (बेकार) छोड़ दिया जाए (अपने किये की जजा–सजा न पायेगा)

अस्ल में इन्सान की दुन्या की जिन्दगी में और यहां उस के पैदा किये जाने में मानवियत (सार्थकता) जब ही है जबकि जजा और सजा पर ईमान लाया जाये और इस हकीकत को माना जाये कि यहां की यह जिन्दगी अगली दुन्या की यानी आखिरत की आला (उत्तम) और तरक्की वाली हमेशा–हमेशा की जिन्दगी हासिल करने का जरीया है, अगर इस को न माना जाये और आखिरत का इन्कार किया जाये तो इस का लाजिमी (अनिवार्य) नतीजा यह होगा कि इन्सान की पैदाइश जैसे, अल्लाह तआला के अजमत वाले (सर्वोच्च) काम को बेकार और बेमक्सद करार दिया जाये।

भारत की सभ्यता और संस्कृति पर मुसलमानों का प्रभाव

मौ० स० अबुल हसन अली हसनी

मुसलमान मुबल्लिग (धर्म प्रचारक) और दरवेश :

इस महान देश में कभी तो हर प्रकार के दुन्यावी फाइदा और भौतिक फाइदा से बेपरवाह होकर खालिस दीनी जजबात (भावना) के तहत दाखिल हुए, वह यहां इस्लामी अद्ल व इन्साफ का पैगा़म लेकर आए, ताकि तंग व तारीक (अंधेरी दुन्या में रोशनी व कुशादगी (विस्तृत) के लिए तरसती हुई इन्सानियत को ख़ुदा की वसीअ (विशाल) जमीन में फितरत (प्रकृति) के अनमोल खजानों से फाइदा उठाने का तरीका सिखलाएं और गुलामी व महकूमी (प्राधीनता) की आहनी (लोही) जनजीरों से जकड़े हुए बेबस इन्सानों को खा़लिके काइनात (विश्व सृष्टा) की बख़्शी हुई आज़ादी से फाइदा उठाने का मौक़अ़ः (अवसर) दिलाएं, इस्लाम के बे लौस खादिमों (निःस्वार्थ सेवकों) और "शाहाने बोरिया नशीं ("बोरियों पर बैठने वाले बादशाह) की ज़िन्दगियां उन मुखलिस मुबल्लिगों (निःस्वार्थ धर्म प्रचारकों) की बेहतरीन मिसाल है जिनके साए आतिफत (शान्ति छाया) में हिन्दुस्तानी समाज के सताए हुए हजारों मजलूमों को न सिर्फ पनाह मिली बल्कि वह उनके यहां हकीकी (वास्तविक) बाप बेटों और भाई बहनों की तरह रहने लगे, हजरत सय्यद अली हजवेरी (रह०) खुवाजा मुईनउद्दीन अजमेरी (रह०) और सय्यद अली बिन शहाब हमदानी कशमीरी (रह०) का शुमार उन्हीं बुजुरगों में होता है।

फातेह व बानियाने हुकूमत (विजयता और शासन संस्थापक)

कभी मुसलमान इस देश में फातेह सिपहसालारों (विजयता सेनाध्यक्ष) और बलन्द हिम्मत बादशाहों की हैसियत से आए जैसे सुल्तान महमूद ग़ज़नवी, शहाबउद्दीन ग़ौरी और ज़हीरुद्दीन बाबर तैमूरी, इन बादशाहों के हाथों इस देश में ऐसी अज़ीमुशशान (महान) हुकूमत की बुनियाद पड़ी जिसने लंबे ज़माने तक इस देश की खिद्मत की और उसे तरक्की व खुशहाली (उन्नति, समृद्धिशाली) की बलन्दतरीन मनज़िल तक पहुँचा दिया।

देश से हमेशा रहने वाला तअल्लुक और खिदमत का जज़्बा :-

गरज़ कि मुसलमान जिस हैसियत से इस मुल्क में आए उन्होंने उसे अपना वतन समझा, उनका अक़ीदा (विश्वास) था कि ज़मीन खुदा की है, वही जिसके चाहता है अपनी ज़मीन का वारिस व निगहबान (संरक्षक) बना देता है, वह अपने को खुदा की तरफ़ से उसकी ज़मीन का मुन्तज़िम (प्रबंधक) और उसकी मखलूक (मानव जाति) का ख़ादिम (सेवक) समझते थे और इस पर अक़ीदा रखते थे कि–

" हर मुल्क मुल्के मास्त कि मुलके खुदाए मास्त" हर मुल्क हमारा इसलिऐ है कि वह हमारे ख़ुदा का मुल्क है, इसलिये मुसलमानों ने हमेशा इस मुल्क को अपना वतन, अपना घर और अपनी दाइमी क़ियामगाह (हमेशा का निवास स्थान) समझा, जिस से वह कभी अपनी नजरें फेर न सके थे, चुनांचि इस मुल्क की ख़िदमत के लिए उन्होंने अपनी बेहतरीन सलाहियतें (उत्तम योग्यताऐं) और खुदा दाद क़ाबलियत व ज़िहानत (प्रतिभा) ख़र्च कर दी, उनका ख्याल था कि वह इस मुल्क की दौलत में जो भी इजाफा करेंगे वह गोया खुद उनकी अपनी धनदौलत में इज़ाफ़ा होगा, क्योंकि उनका मुसतकबिल (भविष्य) इसी सर ज़मीन से वाबस्ता (संबधित) है। इस तसव्वुर (विचार) का कुदरती नतीजा यह था कि हिन्दुस्तानी मुसलमान इस मुल्क को जिस नजर से देखते थे वह अंग्रेजों और दूसरी सामराज पसन्द ताक़तों से बिल्कुल मुखतलिफ (मित्र) थी, यूरोप की सामराजी ताक़तों का मक़सद सिर्फ़ यहां की दौलत खींचना था उनके नज़दीक दरअस्ल (वास्तविकता) में इस मुल्क की हैसियत एक मुस्तआ़र (मांगी हूई) दूधारी गा[illegible] की सी थी जो उनके पास थोड़े दि[illegible] रहकर वापस जाने वाली थी, इसलिए वह उसको अच्छी तरह दूह लेना चाहिते थे इस मुल्क की तरक़्क़ी व खुशहाली में मुसलमानों ने जिस दिल्चस्पी से काम लिया उसका हक़ीकी राज़ (वास्तविक मर्म) यही है।

बाहर की मुतमद्दिदन (ससुस्कृत) दूनया से हिन्दुस्तान की बेतअल्लुक़ी

मुसलमान जब हिन्दुस्तान में आए तो यहां क़दीम उलूम और फ़लसफ़ा (दर्शन शास्त्र) मौजूद था फल, ग़ल्ला, मेवह खाम अशया **(Raw Meterial)** बहुत ज़ियादह पैदा होती थीं, लेकिन तहज़ीबी लिहाज़ से वह मुतमद्दिदन दुनया से लंबे ज़माने से बिल्कुल अलग थलग था, एक तरफ़ ऊँचे–ऊँचे पहाड़ और दूसरी तरफ़ वसीअ़ (विस्तृत) समन्दर उसे बाहरी दुनया से राब्ता (संबंध)

करने से रोकते थे सबसे आखिरी ताजदार जो बाहर की मुतमद्दिन (सुसंस्कृत) दुनया से यहां आया था वह सिकन्दर आज़म था, उसके बाद से मुसलमानों के आने तक बाहर की दुनया से इस मुल्क का कोई रिश्ता न था, न तो बाहर के अफ़कार व ख्यालात, (विचारधाराएं) उलूम व तमद्दन (नागरिकता) और नज़मो नस्क़ (प्रबंध व्यवस्था) के नए तरीके यहां तक पहुंच सकते थे और न यहां के कदीम उलूम बाहर जा सकते थे।

सुसंस्कृत और उन्नतशील दुनया से संबन्धः-

ऐसी हालत में मुसलमान (जो उस वक़्त मशरिक़ (पूरब) की सब से ज़ियादह तरक्की याफ़ता कौम थे) इस मुल्क में दाखिल हुए, उनके साथ एक नया, बुद्धि और ज्ञान पर आधारित, व्यवहारिक दीन था, पुखता उलूम, तरक्की याफ़ता तमद्दुन (उन्नतशील नागरिकता शाइस्ता तहजीब, बहुत सी तहजीबों के कीमती तजरिबात (अनुभव) और बहुत सी दिमागों और दुनया की बहुत सी कौमों के नताइजे फ़िक्र थे जिसमें अरबों का जौके सलीम, ईरानियों की लताफत और तुर्कों की सादगी थी, इसके अलावा बहुत सी नादिर (अद्भुत) चीजें और यकताए रोज़गार (अद्वितीय) तोहफे थे।

तौहीद (अद्वैत वाद) और खुदा परस्ती का इस्लामी अतीयह (अनुदाना)

सबसे जियादा कीमती और नादिर तोहफा (अनुपम भेंट) जो मुसलमान यहां लाए वह इस्लाम का खालिस और बेमेल अकीद–ए– तौहीद (एकेश्वर वाद का विश्वास था जिसके तहत अब्द व मअबूद (अल्लाह और इंसान) के बीच दुआ और इबादत के लिए किसी दरमियानी (मध्य) हसती की जरूरत नहीं है। इस अक़ीदे में ''तअद्दुदइलाह'' (बहुइशवरी) खुदा के मज़हर या साया का तसव्वुर (छाया की कल्पना) और हुलूलव इत्तिहाद (खुदा का किसी मख़लूक में सरायत कर जाना) के अक़ीदे व नज़रये की गुनजाइश नहीं, बल्कि खुदा ए वाहिद व बेनयाज की उलूहियत और वहदानियत (अल्लाह को एक जानता और उसी को लाइके इबादत समझना) का एतराफ व इकरार है जिसके न कोई बेटा है न बाप और न खुदाई में उसका कोई शरीक, काएनात (विश्व) की खिलकत व पैदाइश, दुनया का नज्म व नस्क (प्रबंध, व्यवस्था) और ज़मीन व आसमान का एकतिदारे आला (सर्वोच्च सत्ता) उसी के हाथ में है, इस अकीद–ए–तौहीद का असर हिन्दुस्तान पर जो सदयों से इस तौहीद खालिस से ना आशना (अज्ञान) था कुदरती स्वाभाविक था, हिन्दू तहजीब और हिन्दू मजहब पर इस्लाम के असरात (वर्ण) का तजकिरह करते हुवे प्रसिद्ध विद्वान और इतिहास कार डाक्टर के एम पानीकर लिखते हैः–

''यह बात तो वाजेह (स्पष्ट) है कि उस अहद (काल) में हिन्दू मज़हब पर इस्लाम का गहरा असर (प्रभाव) पड़ा, हिन्दुओं में खुदा परस्ती का तसव्वुर (विचार) इस्लाम ही की बदौलत पैदा हुवा और उस जमाने के तमाम हिन्दू पेशवाओं (धर्मगुरू) के अपने देवताओं का नाम चाहे कुछ भी रखा हो खुदा परस्ती ही की शिक्षा दी अर्थात खुदा एक है वही इबादत के लाएक़ (योग्य) है और उसी के ज़रये हमको नजात मिल सकती है।''

इस्लामी भाईचारा और बराबरी का तोहफाः-

सामूहिक जीवन में हिन्दुस्तान के लिए सबसे नई और कीमती चीज़ ''इस्लामी भाईचारा और बराबरी का तस्ववुर था, मुसलमानों के यहां न तो तबकाती (वर्गी) ऊँच नीच थी उनका अकीदा था कि काई शख्स जन्म का नापाक (अपवित्र) या जाहिल नहीं होता कि जिसको इल्म हासिल करने का हक न हो किसी पेशे या सनअत के लिए कोई जात खास, नहीं थी बल्कि एक साथ रहते थे, खाते पीते थे और अमीर गरीब सब एक साथ इल्म हासिल करने की कोशिश करते थे, हर आदमी को हक था जो पेशा (धंधा) चाहे अपनाए।

इनसानी बराबरी का यह निजाम (व्यवस्था) हिन्दुस्तानी ज़हन (सोच) और हिन्दुस्तानी समाज के लिए एक नया तजरिबह (अनुभव) और गौर फ़िक्र (चिन्तन और विचार) की दअवत थी जिससे इस मुल्क को बहुत फाईदा पहुंचा, इसी के नतीजे के (फलस्वरूप) में राएजुल वक़्त तबकाती निजाम (प्रचलित वर्गीकरण व्यवस्था) की बंदिशें (गांठे) बड़ी हद तक ढीली पड़ गई और मुल्क में तबकाती निज़ाम (वर्ग व्यवस्था) के खिलाफ रद्दे अमल (प्रतिक्रिया) शुरूअ हो गया, और इससे समाज सुधारकों को बड़ी मदद मिली। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इस ऐतिहासिक वास्तविकता का एतराफ (स्वीकृत) इन शब्दों में किया हैः–

उत्तरी पश्चिम से आने वाले हमलावरों और इसलाम की आमद हिन्दुस्तान की तारीख में काफी अहमियत रखती है उसने उन खराबियों को जो हिन्दू समाज में पैदा हो गई थी यानी जातों की तफरीक (बटवारा) छूत छात और आखिरी दर्जे की खलवत पसन्दी (एकान्त रूचि) को बिल्कुल आशकारा (प्रकट) कर दिया, इस्लाम के भाईचारे के नजरये और मुसलमानों की अमली मसावात (व्यवहारिक समानता) ने हिन्दुओं के ज़ेहन पर बहुत गहरा असर (प्रभाव) डाला, विशेष कर वह लोग जो हिन्दू समाज में बराबरी के हुकूक (अधिकारों) से महरूम (वंचित) थे, इससे बहुत प्रभावित हुए।

छठवीं किस्त

सीरतुन्नबी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक़

सय्यिद सुलैमान नदवी

ख़ौफ़ व रजाअ

यूनान के फल्सफ़ियों में दो गिरोह गुजरें है एक को रोने वाले फल्सफी दूसरे को हंसने वाले फल्सफी कहते हैं। पहला गिरोह वह है जो हर वाक्यः से ना उम्मीदी और मायूसी का नतीजा पैदा करता है इसको दुनिया तमाम तर अन्धेरी और कांटों भरी नजर आती है। दूसरा गिरोहवह है जिसको दुनिया में चहल पहल, ऐश व आराम और बहार व रौनक के सिवा कुछ सुझाई नहीं देता। पहले गिरोह की तालीम यह है कि खामोश रहो और जिन्दगी में मौत की सूरत बना लो कि दुनिया की आखिरी मंजिल यही है, दूसरे का नज़रियः यह है कि खाओ पियो और खुश रहो और कल के गम की फिक्र न करो। अखलाकी लिहाज से यह दोनों रायें तरमीम के काबिल हैं। पहले नजरियः पर अगर यकीन हो तो इन्सान के तमाम अंग सर्द होकर रह जाते हैं और वह दुनिया में किसी काम के सर अंजाम देने योग्य नहीं बाकी रहता। और जो दूसरे अक़ीदा पर ईमान रखाता है, वह बाद–ए–गफ़लत में मसत व सरशार होता है और उसको नेक व बद की तमीज नहीं रहती। इस्लाम की शाहराह (राजमार्ग) इन दोनों गलियों के बीच से निकली है। वह एक तरफ दुनिया की फ़ना व ज़वाल (पतन) का क़िस्सा बार बार सुनाता है कि दिल बाद–ए–गफ़लत में सरशार न हो और दूसरी तरफ ~~वह इस~~ को खुदा की रहमत से मायूस नहीं होने देता। वह अख़ीर अख़ीर वक़्त तक खुदा के सहारे जीने की तालीम देता है। इस की शरीअत में खुदा से ना उम्मीदी और कुफ़्र एक है। वह एक मुसलमान के दिल को मुश्किल से मुश्किल अवकात में भी ना उम्मदी बनाकर बेसहारा नहीं होने देता। कुर्आन पाक में हज़रत इब्राहीम अ० को फरिश्तः की जबानी कहा गया:–

तर्जमा : "(इब्राहीम) नाउम्मीदों में से न बन।" (सूरः हिज्र–५५) फिर हजरत याकूब अ० की जबानी तालीम मिली :–

तर्जमा : "और अल्लाह के फैज से नाउम्मीद मत हो। अल्लाह के फैज़ से नाउम्मीद वही है जो खुदा के मुनकिर हैं। (सूरः युसुफ – ८७)

इस उम्मत के गुनहगारों को किस प्यार से खिताब होता है :–

तर्जमा : " ऐ मेरे वह बन्दों ! जिन्हों ने अपनी जानों पर आप जुल्म किया, तुम खुदा की रहमत से नाउम्मीद मत बनो।" (सूरः जुमर–५३)

इसी लिये आंहजरत सल्ल० ने अहादीस में इन्सान को हमेशा पुर उम्मीद रहने की ताकीद की है। आप ने फरमाया कि अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है कि "मैं अपने बन्दे के गुमान के पास रहता हूं।" यानी जैसा वह मेरी निस्बत गुमान करता है वही उसके लिये हो जाता है। इस बारे में इस्लाम के अक़ीदा की आइनादार ~~यह~~ आयत है :–

तर्जमा : "भला एक वह जो बन्दगी में लगा है, रात की घड़ियों में सज्दा करता है और खड़ा होता है, आखिरत से डरता है और अपने रब की रहमत का उम्मीदवार है।" (सूरः जुमर–९)

यानी उस के दिल में यह दोनों कैफियतें एकजा हैं। गुनाहों और भूल चूक की बाज पुर्स का डर भी है और खुदा की रहमत का सहारा भी। खुदा के गजब से डरना और उस की रहमत का उम्मीदवार रहना यही इस्लाम की तालीम है। यह डर उस को गाफिल, बेबाक और गुस्ताख नहीं होने देगा और यह उम्मीद उसको मायूस, गमज़दा और निराश नहीं होने देती। इसलिए एक मुसलमान का दिल हमेशा बुरे नतीजा से भयभीत लेकिन अपेक्षाओं से लबरेज रहता है। इसी की तरफ इशारा करके कुर्आन ईमान वालों से कहता है :–

तर्जमा : "और तुम को खुदा से वह उम्मीद है जो काफिरों को नहीं।" (सूर : निसा – १०४)

यही वह जेहनी फर्क है जो कठिनाइयों में एक मोमिन और एक काफिर के दिल में पैदा होता है। काफिर अपने हर काम और हर अमल के

दुनियावी बदला का इच्छुक होता है और जब वह उस को नहीं पाता तो निराश हो जाता है। वह कामयाबी सिर्फ भौतिक कामयाबी ही को समझता है और जब वह नहीं मिलती तो दुखी हो जाता है लेकिन मोमिन अगर जाहिरी और दुनिया की भौतिक कामयाबी नहीं भी पाता तब भी उसका दिल खुश रहता है कि उस ने नेकी का काम किया है बहर हाल इस नेकी का यहां नहीं तो वहां मुवावज़ा जरूर मिलेगा। अगर दुनिया की कामयाबी नसीब न हुई तो न हो, खुदा की खुशनूदी और सवाब तो बहर हाल मिलेगा। इस यकीन का नतीजा है कि इसने मुसलमानों को हर नेक काम में जरी और बहादुर बना दिया है। और उन को बिना किसी भौतिक गरज के निष्ठा के साथ काम करना सिखा दिया है। इसी का असर है कि दुनिया की तमाम गैर इस्लामी कौमों में नाकामी और निराश की आत्महत्याओं का आमतौर से रिवाज है। हिन्दुस्तान में हिन्दू औरतों के जान देने की घटनायें हर रोज अखबार में पढ़ी जाती हैं। योरोप और अमरीका के सभ्य देशों में जरा जरा सी निराशा पर आत्महत्या कर लेना एक मामूली घटना बन गयी है। जिस समय यह सतरें लिख रहा हूं (१९२५) वारसा (पोलैण्ड) में नाकाम नवजवान लड़कियों को आत्महत्या पर आमादा करने की एक संस्था स्थापित करने की खबरें अखबारों में छप रही हैं। मगर किसी मुसलमान में अन्तिम पल में भी निराशा की यह भावना पैदा नहीं होती और खुदा के फज्ल व करम से उस की आस नहीं टूटती। अमीर हो कि गरीब, तन्दुरुस्त हो कि बीमार, औलाद वाला हो कि बे औलाद, कामयाब हो या नाकाम, दौलतमन्द हो या दीवालिया हर हालत में वह आशावान रहता है। कठिनाइयों में, बीमारियों में, मुहताजियों में, नाकामियों में हर समय वह हिम्मत के साथ खुदा की रहमत का उम्मीदवार है। और यकीन रखता है कि नाउम्मीदी और कुफ्र दोनों उस के मजहब में एक हैं और उस के अमल का मुवाविजा अगर यहां नहीं तो वहां जरूर है। उस के खुदा का यह वायदा हैं कि :—

तर्जमा : "मैं तुम में से किसी काम करने वाले के काम को नष्ट (जाया) नहीं करता।" (सूर : आले इमरान)

अख़लाक़ और रहबानियत

अख़लाक़ दर हकीकत इन्सानों के आपसी तअल्लुकात में खुशनीयती और अच्छाई बरतने का नाम है। या यूं कहिये कि एक दूसरे पर जो इन्सानी फरायज आयद हैं उन को अदा करने को अखलाक कहते हैं। इस से यह बात साफ है कि अख़लाक़ के वजूद (अस्तित्व) के लिये आपस में इन्सानों में सम्बन्ध और मिलने जुलने का वजूद जरूरी है जो रहबानियत, कुंवारापन और जोगीपन में नहीं पाया जाता है। इसी लिये गोशा नशीनी (एकान्त) लोगों से कम मिलना, जमाअत से अलग रहना, बाल—बच्चों, नाते रिश्तेदार और दोस्तों के तअल्लुक़ात से आजादी, अखलाक बरतने के अवसर ही खो देती है या काम कर देती है।

इस मसअले पर बहस की जरूरत इस लिये है कि खल्क से कट कर रहने और गोशानशीनी ने मजहब में अकसर नेकी और दीनदारी की बेहतरीन शक्ल की हैसियत हासिल कर ली है। इस्लाम से पहले राहिब और जोगी इसी उसूल पर अपनी जिन्दगी बसर करते थे और वह खुद और उनके अकीदतमन्द (श्रद्धालु) भी इस को उन की इन्तेहाई नेकूकारी और दीनदयारी करार देते थे। लेकिन दरअसल इन मजहबी व्यक्तियों और जमाअतों ने जयादातर इस पर्दा और हिजाब को इसलिए अखतियार किया कि इससे एक तरफ अपने को आम नजरों से छिपाकर बादशाहों की तरह अपने रोब और असर को नुमायां करने और अपन को बालातर हस्ती मनवाने में मदद मिले और दूसरी तरफ अपनी जिन्दगी को पर्दे में रखकर झूठी दीनदारी का ढोंग खड़ा कर सकें और तीसरी तरफ अपनी गोशानशीनी के झूठे उज्र की बिना पर किसी मलामत का निशाना बने बगैर बाल—बच्चों, नातेदार रिश्तेदार, दोस्तों और कौम व मिल्लत के फरायज व हुकूक को बजा लाने की तकलीफ से बच जाये। इसी लिये इस्लाम ने अपने उसूले अखलाक में राहिबाना, जोगियाना और कुंवारे जीवन को बढ़ावा नहीं दिया है। नबूवत के बाद आंहजरत सल्ल. ने अपनी पूरी तेईस साल की जिन्दगी इसी मानव—समाज में रहकर और तमाम इन्सानी संघर्ष में शरीक होकर गुजारी है। यही तर्जे अमल (कार्यशैली) चारों ख़लीफ़ा और चन्द के सिवातमाम अकाबिर (प्रमुख) सहाबः का था। और पूरा कुर्आन पाक इसी इन्सानी संघर्ष और इन्सानी मजमा के साथ अमले स्वालेह (सन्कर्म) की तालीम से भरा है। कुंवारापन, अलेहदगी, एकान्तवास, कर्मत्याग, और तर्के जमाअत के लिए एक इशारा भी पूरे कुर्आन में मौजूद

नहीं है।

यह बात साफ है कि सामूहिक अधिकार और कर्तव्य समूह के अन्दर ही रहकर अदा हो सकते हैं, इन से हट कर नहीं । वह लोग जो आबादी से दूर किसी जंगल या वीराने में एकान्त वास करके जिन्दगी बसर करते हैं क्या वह सामुदायिक कठिनाइयों को हल करते हैं? क्या वह कौम की अखलाकी निगरानी का फर्ज अंजाम देते हैं? क्या वह ग़रीब जनता की कोई सेवा करते हैं? क्या वह लोगों को गुमराही और ज़लालत से बचाते हैं? क्या वह स्वयं अपनी मेहनत से अपनी रोजी कमाते हैं? क्या उनको धार्मिक प्रचार, शिक्षा, प्रवचन, अच्छी बातों को करने के लिए कहने और बुरी बातों से रोकने और संघर्ष करने और जूझने से छूट है? हालांकि अख़लाक़ी इबादतों के यही बेहतरीन अवसर हैं। इसी लिए इस्लाम की नजर में निजात तलबी (मोक्ष) का सामान्यतः यह पसन्दीदः तरीकः नहीं। कुर्आन पाक में है :-

तर्जमः "तुम अपने को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाओ।" (सूरः तहरीम – ६)

यानी इन्सान का फर्ज अपने ही को आग से बचाना नहीं बल्कि अपने साथ दूसरों को भी बचाना है आंहजरत सल्ल० ने साफ तौर से दूसरे तमाम मुसलमानों को खिताब करके फरमाया तुम में से हर एक दूसरे का जिम्मेदार है और उस से उसकी जिम्मेदारी और निगरानी में आये हुए लोगों की निस्बत पूछा जायेगा। अमीर अपने प्रजा का चरवाहा, मर्द अपने बाल-बच्चों का रखवाला और बीवी अपने शौहर के घर की निगहबान है।

जमाअती मुसीबतें जब आती हैं तो किनारा किये हुए लोगों को भी नहीं छोड़तीं। यह आग अन्दर और बाहर सब को जला कर राख कर देती है। इसी लिए कुर्आन ने साफ कहा कि-

"और उस फसाद से बचो जो चुनकर सिर्फ गुनाहगारों ही पर नहीं पड़ेगा।" (सूरः अनफाल-२५)

बल्कि उस की लपट गुनहगार और बेगुनाह सब तक पहुंचेगी दुनिया दरअसल संघर्ष और कोशिश का एक मैदान है जिस में तमाम इन्सान आपसी सहयोग से अपना अपना रास्ता तय कर रहे हैं। रास्ते में सब के साथ चलने में यकीनन बहुत कुछ तकलीफें हैं। हर एक को दूसरे की तकलीफ व आराम का लिहाज व ख्याल करना पड़ता है। इसलिए वह व्यक्ति जो इन सामुदायिक कठिनाइयों से घबरा कर अलग हो जाता है और सिर्फ अपना बोझ कन्धे पर रख कर चल खड़ा होता है, दुनिया के मार्के का एक नामर्द सिपाही है। आंहजरत सल्ल० ने फरमाया-

तर्जमः "वह मुसलमान जो लोगों में मिलजुल कर रहता है और उन से होने वाली तकलीफ पर सब्र करता है, उस से बेहतर है जो लोगों से नहीं मिलता और उन से होने वाली तकलीफ पर सब्र नहीं करता।" (बेहकी व तिरमिजी)

एकान्त वास और जमाअत से अलग रहने की इजाज़त इस्लाम ने सिर्फ एक ही मौके पर दी है कि जमाअत का किवाम (तत्व, निजाम) इतना बिगड़ जाये कि उन का कोई मर्कजी निजाम बाकी न रहे। और फितना व फसाद की आग इतनी भड़क चुकी हो कि उसका बुझाना काबू से बाहर हो जाये तो ऐसे समय में वह लोग जो इस फसाद के रोकने और इस आग के बुझाने की ताकत अपने में न पायें वह मजमा से अलग हो जायें। फितना में एकान्तवास की हदीसें इसी मौके से तअल्लुक रखती हैं। वरना हर जोर रखने वाले मुसलमान का फर्ज है कि वह इस हालत में तबलीग और अमर फारूक अर्थात प्रचार व प्रसार तथा अच्छी बात का हुक्म करने के फर्ज को अदा करके जमाअत के बचाने में पूरा प्रयास लगा दे। यही वह नमूना है जिस को आंहजरत सल्ल० ने दुनिया में पेश किया और तमाम बड़े बड़े सहाबः ने अपने अपने दायरे में इसी की पैरवी की।

आप सल्ल० ने फरमाया कि, बदी को अपने हाथ से रोकना और मिटाना हर मुसलमान का फर्ज है अगर हाथ से न मिटा सके तो जबान से मिटाये। अगर यह भी न हो सके तो उसको दिल से बुरा समझे और यह सब से कमजोर ईमान है।" (जारी)

प्रस्तुति – एम० हसन अन्सारी

अनुरोध

हमारा ६० फीसद पढ़ा लिखा नवजवान उर्दू बोलना तो जानता है मगर लिखना पढ़ना नहीं जानता वह सिर्फ़ हिन्दी लिखता पढ़ता है, ऐसे नव जवानों से तअल्लुक क़ाइम करने और उन तक इस्लाम को पहुंचाने की गरज़ से सच्चा राही जारी किया गया है। अपने पाठकों से अनुरोध है कि वह ऐसे नव जवानों तक सच्चा राही पहुंचायें।

बाइसवीं किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

सुलतान मुहम्मद फातेह

मुहम्मद फातेह के जमाने में बहुत सी ईसाई हुकूमतों से लड़ाई हुई जिस में सुलतान को सफलता मिली लेकिन उसका सबसे बड़ा कारनामा कुसतुनतुनिया की विजय है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बशारत (शुभ–समाचार) की वजह से मुसलमानों को इसकी फतह का बड़ा शौक था। चुनानचः शुरू ही से लोग कोशिश करते रहे और हज़रत माविया के समय से सुलतान मुराद द्वितीय के समय तक आठ हमले किये गये लेकिन यह फतह तो मुहम्मद फातेह की किस्मत में लिखी हुई थी। सन् ८५५ हि० में बादशाह होते ही तैयारी शुरू कर दी और ८५७ हि० में शहर पर कब्जा कर लिया और अदरना की जगह पर उसे राजधानी करार दिया। उस समय सुलतान की उम्र केवल २६ वर्ष की थी।

कुसतुनतुनिया के अतिरिक्त सुलतान मुहम्मद फातेह ने और भी देश फतह किये। उसने सरविया और बोसीनिया को फतह कर के अपनी सलतनत में शामिल कर लिया। उसने *अलबानिया* के बागियों को परास्त किया और वहां अपनी हुकूमत काईम कर ली। उसने वेनिस गणतंत्र पर हमला करके उसके द्वीप नगरूपून्ट पर कब्जा कर लिया। उसने यूनान और बहरैन के द्वीपों में अपना शासन काईम कर लिया और श्वेत सागर के तट पर सोनूप और तराबजून के नगरों को फतह कर लिया। उस के बाद क्रिमिया पर जो चंगेज खां की औलादों की हुकूमत में था कब्जा कर लिया। सब से आखिर में एक तुर्क जनरल ने इटली के दक्षिणी तट पर उतर कर अटरहिंटो का किला फतह कर लिया। उसके बाद रूमा ही को फ़तह करने का इरादा था और सुलतान इस के लिए तैयारियां कर रहा था मगर ६८६हि० में उसका देहान्त हो गया। सुलतान मुहम्मद फातेह बड़ा बहादुर सुलतान था। जंग में उसे खास महारत प्राप्त थी। इस वजह से अकसर लड़ाइयों में फतह उसी की होती थी लेकिन वह केवल मुल्क फतह करने पर बस नहीं करता था। जो मुल्क फतह करता उसकी हुकूमत का इन्तज़ाम भी बहुत अच्छी तरह कर देता था। उसको प्रजा की भलाई का खास खियाल था और ईसाइयों के साथ खास तौर पर नर्मी करता था। इल्म का भी उसे बहुत शौक था। बड़े–बड़े विद्वानों को हमेशा अपने साथ रखता था और उनसे वाद विवाद (बहस मुबाहिसा) करने में रूचि लेता था बहुत ही बुद्धिमान और योग्य था। कवि भी बड़े दर्जे का था। उसकी कविताएं तुर्की भाषा में बहुत ख्याति (शुहरत) रखती हैं।

सुलतान बायज़ीद द्वितीय

सुलतान मुहम्मद के बाद बायजीद बादशाह हुआ। यह स्वभाव का बहुत सरल था। इसलिए कुछ अधिक लड़ाइयां नहीं हुईं। उस जमाने में ईरान में शाह इस्माईल सफवी की हुकूमत थी। यह शीया धर्म का मानने वाला था। उसकी कोशिश थी कि सारा ईरान यही धर्म इख्तियार कर ले। तुर्क चूंकि सुन्नी थे, इसलिए उन से दुश्मनी थी और कभी कभी आपस में झड़प होती रहती थी।

उस जमाने में एक खास घटना घटित हुई। उन्दुलुस की दशा पहले बताई जा चुकी है *कि वलीद बिन अब्दुल* मलिक के जमाने में तारिक ने केवल बारह हजार सवारों से यह मुल्क फतल किया था। उसके बाद सैकड़ों वर्षों तक वहां बड़ी शानोशौकत से इस्लामी शासन काइम रहा। अन्त में आपस में झगड़े शुरू हुए जिन्होंने मुसलमानों को चूर चूर कर दिया और बायज़ीद के जमाने में उनकी हुकूमत बिल्कुल खत्म हो गई। यहां केवल यह बात याद रखने की है कि उन्दुलुस के अन्तिम बादशाह अबूअब्दुल्लाह ने इस मुसीबत में तमाम मुसलमान बादशाहों से मदद मांगी थी लेकिन अफसोस किसी ने भी ध्यान नहीं दिया बायज़ीद करीब था लेकिन उसने भी जियादा *ख्याल नहीं* किया और केवल एक मामूली सा बेड़ा भेज दिया। नतीजा जाहिर है कि मुसलमान चुनचुन कर मारे गये और चन्द ही दिनों में सारा देश उन्हीं से नहीं बल्कि उनकी एक एक चीज से खाली हो गया। मस्जिदें गिराई गईं,

महल खोदे गये, मकान बरबाद किये गये, पुस्तकालय जलाए गये तात्पर्य यह कि आन की आन में सदियों की मेहनत पर पानी फिर गया सन् ९१८ हि० में बायज़ीद का देहान्त हो गया।

सुलतान सलीम प्रथम

बायज़ीद अपने बाद शाहजादा अहमद को बादशाह बनाना चाहता था लेकिन इनकशारी फौज उस से खुश न थी, इसलिए उन्होंने शाहजादा सलीम को बादशाह बनाया। अहमद और करकू दोनों भाइयों ने मुकाबला किया परन्तु प्राजित होकर कत्ल हुए। शाह इसमाईल सफवी का जिक्र आ चुका है। मजहबी मतभेद की वजह से सुलतान सलीम से भी मुकाबला हुआ। सलीम ने ईरान पर चढ़ाई की। इरान के बादशाह की प्राजय हुई और तुर्क तबरेज में दाखिल हो गये। इस लड़ाई में मिस्र की मातहत रियासत जुलकदरिया ने तुर्कों की राह में रूकावट डाली थी, इस लिए विजय के बाद उसके सरदार को गिरफतार करके कत्ल कर दिया गया। मामला यहीं पर समाप्त हो चुका था लेकिन शामत के मारे के मिस्र कान्सूहग़ौरी ने सुलतान सलीम को लिखा कि जुलकदरिया में मेरे नाम का खुतबा चढ़ जाए। इस पर सलीम को बहुत क्रोध आया और तुरंत मिस्र की तरफ फौज लेकर चल पड़ा। ग़ौरी लड़ाई में मारा गया और शाम व फिलिस्तीन पर तुर्कों का कब्जा हो गया। उस समय यहां मुतवक्किल अली अल्लाह खां तृतीय अब्बासी खलीफा था। सलीम उसे अपने साथ कुसतुनतुनिया लेता गया जहां जामअ अबू सूफिया में उसने तबरुकाते खिलाफत अर्थात तलवार, इल्म और चादरे नबवी (सल्ल०) सुलतान सलीम के हवाले की और उस दिन से सुलतान तुर्की के मुसलमानों का खलीफा हो गया। उस के बाद सुलतान ने समुद्र के रास्ते से रोड्स द्वीप और थल के रास्ते से ईरान पर हमले की तैयारी शुरू की ताकि उस तरफ से हमेशा के लिए इतमीना हो जाए लेकिन जिन्दगी ने साथ नहीं दिया और ८ शौवाल (ईद) सन् ९२६ हि० को देहान्त हो गया।

सुलतान सुलैमान आज़म

सुलतान सलीम के बाद सुलैमान तख्त पर बैठा। यह बड़ा शक्तिशाली बादशाह था। उसने शाम की बगावत समाप्त की, रोड्स, हंग्री और बलगारिया को फतह कर लिया और आस्ट्रिया की राजधानी व्याना तक इस्लामी फौजें पहुंचा दीं। अलजजाएर को खुद वहां के बादशाह हाकिम खैरूद्दीन पाशा ने हवाले कर दिया।

उस जमाने में सारी दुन्या पर तुर्कों की धाक बैठी हुई थी। और तमाम राज्य उनके नाम से कांपते थे। उस समय मौका था कि सारी दुन्या पर मुसलमानों का कब्जा हो जाता लेकिन अफसोस कि ईरान से मेल न हो सका। इसमाईल सफवी तो मर चुका था लेकिन उस का बेटा तहमासप उस से अधिक कठोर था। उसने जो देखा कि सुलैमान यूरोप की लड़ाइयों में लगा हुआ है तो तुरंत आगे बढ़कर तबरेज़ पर कब्जा कर लिया। सुलैमान सुनते ही आग बगूला हो गया। तुरन्त ईरान पर हमला कर दिया और तबरेज़ फतह कर लिया, इस के बाद बग़दाद पर भी करब्जा कर लिया। सन् ९७४ हि० में सुलैमान के देहान्त नुकरस की बीमारी में हो गया।

सुलतान सलीम द्वितीय

सुलैमान आज़म के बाद मुस्तफा बादशाह होने वाला था लेकिन सुलतान की रूसी बीवी अपने बेटे सलीम की बादशाहत चाहती थी। उसने कुछ ऐसी तरकीबें लड़ाईं कि मुस्तफा और दूसरे भाई खुद सुलतान के आदेश से क़त्ल कर दिये गये और केवल सलीम बाकी रह गया जो सुलतान के बाद तख्त पर बैठा।

सलीम दूसरे देश क्या फतह करता उस में तो अपने देश को बचाने की भी क्षमता न थी। वह तो कहो प्रधानमंत्री मुहम्मद पाशा कुछ ऐसा बुद्धिमान और अनुभवी मंत्री था कि सलतनत की साख बाकी रही अन्यथा देश के जाने में क्या कसर रही थी। उसी का दम था जिसने क़बरस फतह किया, यमन की बग़ावत खत्म की। अस्ट्रिया और फ्रांस को दबाए रखा और टयूनिस को स्पेन के हाथ से छीन लिया और सबसे बढ़कर यह कि यूरोप, वेनिस और स्पेन के जोर को तोड़ा जिन्होंने मिलकर तुर्कों को समाप्त ही करने की ठान ली थी। सन् ९८२ हि० में सलीम का देहान्त हो गया।

सुलतान मुराद द्वितीय

मुराद बाप की जगह बादशाह हुआ। यह बड़ा ऐय्याश मिजाज था। तख्त पर बैठते ही भायों को कत्ल कराया। मुहम्मद पाशा अब भी सदरे आज़म (प्रधानमंत्री) था जिस की वजह से सलतनत को अधिक हानि नहीं पहुंचने पाई अन्यथा यहां दशा यह हो गयी थी कि महल के बेगमें तक सलतनत के कामों में दखल देने लगी थीं फौज, जिस पर सब कुछ भरोसा था, शरारत और सरकशी पर तुली हुई थी लेकिन सदरे आजम ने अपनी कूटि नीति से सबको दबाए रखा था। उसी

(शेषअगले पृष्ठ पर नीचे)

भय और निर्भयता

एम हसन अन्सारी

भय, डर, खौफ, अन्देशा, तशवीश हर आदमी की जिन्दगी का एक हिस्सा है। अंग्रेजी में इस को **Apprehension** कहते हैं। व्यक्तित्व (शखसियत) अमल के साथ हर व्यक्ति को कोई न कोई और किसी चीज बनायें तो उस में बदसूरती (कुरूपता) का भय, जानकारी में नाजानकारी का डर, जीत में हार का डर, सुख में दुख का अन्देशा, प्रशंसा में निन्दा का भय, इत्यादि इत्यादि। निर्भय वह है जो खुदा से डरता है जिसको अल्लाह का खौफ है जो आकबत अन्देश है, जो सीधी राह इख्तियार और निडर लोगों की संख्या जितनी अधिक होगी उस समाज में उतनी ही अधिक आत्मनिर्भरता होगी, पुरूषार्थ होगा, आत्मविश्वास होगा, ईशविश्वास होगा, तरक्की होगी।

पोरूष देने की शक्ति धर्म में है, भक्ति में है, बन्दगी में है। इस के लिए चार चीजें जरूरी हैं, (१) प्रयास (२) प्रतिकार क्षमता (३) निर्भयता (४) आक्रमकता प्रयास अपने संसाधनों की सीमा तक, कोशिश अपनी सकत तक। इस भावना के साथ कि मुझे मुफ्त का नहीं चाहिए। मैं प्रयास कर के पाऊंगा। मुझे बिना प्रयास के कुछ नहीं चाहिए। आज सभी को बिना प्रयास के ज्ञान चाहिए, धन चाहिए। एक रूपये में लाख रूपये। हमारे अन्दर निष्ठापूर्वक प्रयास करने की ललक होना चाहिए। प्रयास रचनात्मक हो और सीधी राह पर चलने वाला हो।

प्रतिकारक्षमता अर्थात बचाव की ताकत। बाहर की वस्तु के आक्रमणा से अपने को बचाना, रक्षा करना। अन्दर के विकार भी संघर्ष करेंगे उनका प्रतिकार करना है, विकारों के साथ लड़ना है। इस के लिए प्रतिकार क्षमता होनी चाहिए। आजकल दौलत का राज है। उस प्रलोभन के सामने टिकने के लिए प्रतिकारक्षमता चाहिए। कुछ ऐसा दृश्य दिखाई दे कि सोने की मोहरें रास्ते में पड़ी हों और कोई उनको इस लिए न उठाए कि उस का उन मोहरों पर हक् नहीं है। यह मोहरें उस की नहीं हैं। और उसे मुफ्त कोई चीज चाहिए नहीं।

निर्भयता जब आती है जब आदमी बेगुनाह हो। या फिर उसे अपने गुनाहों का ऐतराफ हो। निष्पाप बन पाना बहुत मुश्किल है। लेकिन जिसने खुदा का बनकर रहना सीख लिया उसके लिए मुश्किल आसान है।

आक्रमकता वह जो पराक्रम से जुड़ी हो। पराक्रम शब्द में आक्रमण अपेक्षित है, संरक्षण नहीं। हमारे पास दुर्गुण नहीं आने चाहिए, इसी लिए उन पर आक्रमण कर के लड़ना होगा। सद्गुणों को उठाना होगा। दूसरों के दुर्गुणों की छाया से अपने को बचाना होगा।

प्रयत्नशीलता, प्रतिकारक्षमता, निर्भयता और आक्रमण यह चार गुण जमा हों तो उसे पौरूष कहते हैं। जिस में पौरूष हो वह पुरूषार्थ है। पुरूषार्थ को अंग्रेजी में **Manful** कहते हैं अर्थात बहादुर, निडर, बेखौफ,साहसी। कुर्आन में ऐसे लोगों के लिए "ला तहज़न" कहा गया है। पौरूष नाम है कर्म का अमल का। "अमल से जिन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नम भी

यह खाकी अपनी फितरत में न नूरी है न नारी है।"

" नर हो न निराश करो मन को कुछ काम करो कुछ काम करो।"

के साथ मराकश को पुरतगाल से बचाकर तुर्की हुकूमत में शामिल किया। ईरान का जोर कम किया और यूरोप की हुकूमतों की किसी न किसी तरह रोके रखा। मुराद का सन् १००३ हि० में देहान्त हुआ।

सुलतान मुहम्मद तृतीय

मुराद के बाद उसका बड़ा बेटा मुहम्मद तख़्त पर बैठा। उसने भी पहले ही भाइयों पर हाथ साफ किया लेकिन बाद में किसी कदर सभल गया और सलतनत की देख भाल शुरू की। मुराद की फजूल खर्ची का यह हाल था कि केवल तरकारी का मूल अस्सी हजार अशरफियां बाकी थीं। मुहम्मद ने यह कर्ज अदा किया। फौज की हालत खराब थी, उकी ओर ध्यान दिया। दुश्मनों को प्राजित किया ऐशिया कोचक की बगावत समाप्त की।

शाह ईरान अब्बास सफवी के मुकाबले में फौजें भेजी लेकिन यह जंग अभी खत्म नहीं हुई थी कि १०१२ हि० में खुद सुलतान का देहान्त हो गया।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आजमी

नाना नानी ह़ज को चले

उ़बैदुल्लाह

नाना जान की उ़म्र साठ साल होगी, अभी वह चार, चार कि०मी० पैदल चल लेते हैं, माशाअल्लाह किसी बीमारी में नहीं है, न बाई, न सूगर न ब्लेड प्रेशर। दान्त सब मौजूद चलने फिरने में चश्मे की ज़रूरत नहीं, हां जब तिलावत करते हैं तो चश्मा लगाते हैं। यही हाल तक़रीबन नानी जान का है। अल्ह़म्दुलिल्लाह इस साल दोनों ने ह़ज्ज का इरादा किया है।

मेरी ड्यूटी लगाई गई कि मैं दोनों को ह़ज्ज की तैयारी कराऊं, नाना जान तो पुराने मिडिल पास हैं अल्बत्ता नानी जान क़ुर्आन शरीफ़ नाज़िरा अटक अटक कर पढ़ती हैं कुछ उर्दू भी पढ़ लेती हैं लिखना बिल्कुल नहीं जानतीं जिस दिन से ह़ज्ज का इरादा किया है दोनों बहुत ख़ुश हैं। और लग कर ह़ज्ज की तैयारी में हैं।

मैं नदवे का तालिबे इ़ल्म, ह़ज्ज का तरीक़ा अज़बर, नाना नानी का चहीता, दोनों ने मेरे बताने से ज़ियादा पूछ पूछ कर ह़ज्ज का सबक़ याद किया और एक रोज़ नाना ने मुतालबा किया कि मैं देर तक उन के पास बैठूं और वह ह़ज्ज का सबक़ दुहराएं। नानी भी साथ बैठें, जुमे की सुब्ह़ नाश्ता कर के हम लोग बैठ गये। नाना ने शुरूअ़ किया।

बेटे ! मैं ने गुनाहों से ख़ूब तौबा की है और अस्तग़फ़िरूल्लाह बराबर पढ़ता हूं। ख़ूब याद कर के जिन का ह़क़ मुझ पर था। इम्कान भर अदा किया या मुआफ़ी चाह ली और बेटे सुनो कभी तुम को भी दो एक हाथ लगा दिये हों या ऐसी बात कही हो जिससे तुम को तक्लीफ़ पहुंची हो तो तुम भी मुआफ़ कर दो। यह सुन कर मेरी आखों में आंसू आ गये और नानी तो फूट फूट कर रोने लगीं, दस मिनट तक हम सब पर सक्ता तारी रहा फिर नाना बोले— बेटे देखो जहाज़ पर चढ़ने से पहले हम नहा धो कर इह़राम की चादरें बान्ध लेंगे, दो रकअ़त नमाज़ भी पढ़ लेंगे तुम्हारी नानी भी यही कर लेंगी उन को तो अपने सिले कपड़े ही पहनना हैं। फिर जब जहाज़ पर एअ़लान होगा कि मीक़ात आने वाला है तो हम दोनों उ़म्रे की नीयत करके सर खोल कर ज़ोर ज़ोर से पढ़ेंगे : "लब्बैक् अल्लाहुम्म लबैक्, लब्बैक् ला शरीक लक लब्बैक् इन्नल्ह़म्द व न्निअ़्मत लक वल्मुल्क् ला शरीक लक्" नानी बोलीं : और मुझे तो यह तल्बिया धीरे धीरे कहना है और सर नहीं सिर्फ़ चेहरा खोलना है। नाना बोले और यह तल्बिया मुझे बराबर पढ़ना है और एह़राम की पाबन्दियां करना है, जूं, चीलर, मक्खी, मच्छर नहीं मारना है नाख़ुन नहीं काटना है, बाल नहीं उखेड़ना है न काटना है न सर बन्द करना है न किसी को तकलीफ़ पहुंचाना है। जब अल्लाह तआ़ला ह़रम में दाख़िल करा दे और कअ़्बे पर नज़र पड़े तो ख़ूब दुआ़एं मांगना है। अब हजरे अस्वद पर आकर तल्बिया बन्द करके तवाफ़ करना है। तवाफ़ की नीयत ह़जरे अस्वद के पास कर के ह़जर को बोसा दे कर तवाफ़ शुरूअ़ करना है। अगर ह़जर को बोसा न दे सकें तो उस की ओर दोनों हथेलियां कर के उन्हीं को चूम कर तवाफ़ इस तरह़ करेंगे कि कअ़्बा बाएं हाथ रहे। पहले तीन चक्करों में रमल करना है यअ़्नी ज़रा अकड़ अकड़ कर चलना है और इस तवाफ़ में इज़्तिबाअ़ यअ़्नी दाहिना शाना खोल देना है। इस तरह़ कि चादर दाहिने शाने से नीचे से निकाल कर बायें शाने पर डालना है। नानी बोलीं कि मुझे तो न रमल करना है न इज़्तिबाअ़, नाना बोले : तवाफ़ में ख़ूब दुआ़एं करना है और जब ह़जर के सामने आएं तो इस्तिलाम यअ़्नी ह़जर को चूमना या भीड़ के सबब ह़जर तक न पहुंच सके तो उस की तरफ़ दोनों हथेलिया कर के हथेलियों को चूम लेना है इस तरह़ जब ह़जर पर सात चक्कर पूरे हो जाएं तो मुम्किन हो तो मक़ामे इब्राहीम के पास, नहीं तो जहां मुम्मिकन हो दो रकअ़तें पढ़कर ख़ूब दुआ़ए करना है, फिर ज़म–ज़म पर जाकर पेट भर ज़म ज़म पी कर दुआ़एं करना है। फिर ह़जर का इस्तिलाम कर के सफ़ा से सअ़ी शुरूअ़ करना है, सफ़ा से मरवा तक एक शौत फिर मरवा से सफा तक दो शौत हुए इस तरह़ सात शौत करने हैं। हर शौत में ख़ूब दुआ़एं करना है। दो हरे खम्बों के बीच में झपट कर चलना भी हैं। नानी बोलीं : और मुझे तो आहिस्ता ही चलना है। नाना बोले : फिर सात शौत पूरे होने पर मुझे बाल छोटे कराना है। मैं अपने बाल कटवा

कर क़ैंची से तुम्हारी नानी के बालों से एक अंगुल सारे बाल काट दूंगा, बस हम लोगों का उ़म्रा पूरा हो गया, एह्राम की पाबन्दियां ख़त्म हुईं अब आम कपड़ों में आ जाएंगे और सात जिल्हिज्जा तक ह्स्ब तौफ़ीक़ नमाज, तिलावत, दुआ तवाफ़ करते रहेंगे। आठ ज़िल्हिज्जा को ह्ज्ज की नीयत से दो चादरें पहन कर दो रक्अत नमाज पढ़ कर सर खोल कर ह्ज्ज की नीयत कर के ज़ोर ज़ोर से तल्बिया पढ़ेंगे। नानी बोलीं : और मुझे तो सिर्फ़ चेहरा खोलना है और तल्बिया आहिस्ता पढ़ना है। नाना बोले : फिर मुअ़ल्लिम के इन्तिज़ाम में मिना जाना हैं एक दिन रात वहां इबादत व दुआ और तल्बिया के साथ गुज़ारना है ९ ज़िल्हिज्जा की सुब्ह् को मुअ़ल्लिम के इन्तिज़ाम में अ़रफ़ात जाना है। पूरा दिन वहां नमाज़ें और दुआ में गुज़ारना है। मग़रिब बअ़्द, मग़रिब की नमाज़ पढ़े बिना मुअ़ल्लिम के इन्तिज़ाम में मुज़दल्फ़ा आना है। मुज़दल्फ़ा पहुंच कर मग़रिब व इशा की नमाज़ एक साथ अदा करना है फिर रात मुज़दलफ़ा में दुआओं के साथ गुज़ारना है। फ़ज्र की नमाज़ पढ़ कर दुआ करते हुए, मुअ़ल्लिम के इन्तिज़ाम में फिर मिना आना है, रमी की ४९ कंकरियां (इहतियातन कुछ ज़ियादा) मुज़दलफ़ा से साथ लाना हैं। मिना पहुंच कर पहले कंकरियां मारने जाना है। १० तारीख़ को एक, एक करके बड़े शैतान को सात कंकरियां मारना है। बड़े शैतान के पास पहुंचते ही तल्बिया बन्द हो जाएगा दुआएं चलती रहेंगी। फिर क़ुर्बानी करना है। हम तो क़ुर्बानी का पर्चा कटवा लेंगे और बैंक वालों से कह देंगे कि हमारी क़ुर्बानी १० को हो जाना चाहिए। फिर मैं सर मुंडा कर तुम्हारी नानी के बाल एक अंगुल काट दूंगा। फिर नहा धो कर कपड़े बदल कर मुअ़ल्लिम के इन्तिज़ाम में ह्रम जा कर हम दोनों तवाफ़े ज़ियारत करेंगे, इस तवाफ़ में रमल और इज़्तिबाअ भी करूंगा। फिर तवाफ़ की दो रक्अतें पढ़ कर, ज़म ज़म पी कर, ह्जर का इस्तिलाम कर के सफ़ा पर आ जाएंगे और जैसे उ़म्रे की सअ़ी की थी हम दोनों ह्ज्ज की सअ़ी करेंगे। फिर मिना वापस चले जाएंगे। ११ ज़िल्हिज्जा को चाहे अपना इन्तिजाम करना पड़े भीड़ के सबब दिन गुज़ार कर देर रात में कंकरियं मारने जाएंगे पहले छोटे शैतान को एक एक करके सात कंकरियां मारेंगे, फिर मंझले शैतान को उसी तरह सात कंकरियां मारेंगे फिर आगे बढ़ कर बड़े शैतान को सात कंकरियां मार कर अपने ख़ेमे आ जाएंगे। १२ को कोशिश कर के ज़ुहूर बअ़्द तीनों शैतानों को कंकरियां मारूंगा। हर शैतान को पहले अपनी कंकरियां मारूं गा फिर तुम्हारी नानी का वकील बन कर उन की तरफ से मारूंगा इस लिए कि इतनी भीड़ में उन के बस की बात नहीं और अगर भीड़ के सबब कंकरियां न मार सकूंगा तो दोनों की तरफ़ से दम दे दूंगा। अब हम लोग मक्के में रहेंगे और जब मुअ़ल्लिम ले जाएगा वदाअ़ी तवाफ़ कर के मदीना तय्यिबा हाज़िरी देंगे। मदीना पहुंच कर मस्जिदे नबवी में पांचों वक़्त की नमाजें पाबन्दी से हम दोनों अदा करेंगे। मैं रोज़ाना मवाजिह शरीफ़ पर हाज़िर होकर अदब से सलाम पेश करूंगा सुना है औरतों की हाज़िरी का ख़ास वक़्त होता है, तुम्हारी नानी उस वक़्त हाज़िर होकर सलाम पेश करेंगी। मदीने के औक़ात में तिलावत व दुआ के साथ दुरूद की कस्रत का एहतिमाम रहेगा। फिर जब मुअ़ल्लिम इन्तिज़ाम करेगा वापसी होगी अल्लाह तआ़ला मदद फ़रमाएं और क़बूल फ़रमाएं।

मैने कहा नाना जान ह्ज्ज का सबक़ आप को पक्का याद है। लेकिन ऐन मौक़िअ़ पर घबराहट में आदमी से भूल हो जाती है लिहाज़ा जानकारों से पूछते रहना चाहिए और मदद लेते रहना चाहिए। नाना जान! ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के रौज़े पर मेरी तरफ़ से भी सलाम अ़र्ज़ कीजियेगा।

लेकिन नाना जान आप ने पूरे सबक़ में कहीं भी मुझे याद नहीं फ़रमाया। नाना जान ने मुझे चिम्टा लिय और कहा तुझे कहीं न भूलूंगा इन्शा अल्लाह और मेरी आंखें आंसुओं से भर गईं।

अल्लाह तआ़ला तमाम हाजियों को खैर व आफियत से मक्का मुकर्रमा पहुंचाए और ह्ज्ज के अरकान अदा करने में आसानियां पैदा फ़रमाये और मदीना तय्यिबा की हाज़िरी भी आसान फ़रमाए।

Noor Ahmad
Prop.
Mob. 9335384273
0522-2005079
2273297

Haji Noor Ahmad Jewellers

143/75, Joote Wali Gali,
Behind Mumtaz Market,
Aminabad, Lucknow

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न : क्या हाजी जो क़ुर्बानी मिना में करता है उस से वह क़ुर्बानी भी अदा हो जाती है जो बक़रईद में घर पर किया करता था ?

उत्तर : हज्ज की क़ुर्बानी और है माल की क़ुर्बानी और है। मालदारी की क़ुर्बानी हर साहिबे निसाब पर कुर्बानी के दिनों में वाजिब है, वह हज्ज की क़ुर्बानी से अदा न होगी, वह क़ुर्बानी हाजी अलग से चाहे मिना में करे चाहे अपने शहर, गांव में किसी अज़ीज़ को मुक़र्रर कर दे वह उस की तरफ़ से कर दे। याद रहे मुसाफ़िर पर मालदारी वाली क़ुर्बानी नहीं है, लिहाज़ा अगर कोई हाजी मक्का मुकर्रमा ऐसे वक़्त पहुंचा है कि अब उसे मक्के में १५ दिन या उस से ज़ियादा ठहराना है और इन ही दिनों में क़ुर्बानी के दिन पड़ते हैं तो उसपर माल वाली क़ुर्बानी वाजिब है वर्ना नहीं। जैसे कोई ५ ज़िल्हिज्जा को अपने मुल्क से मक्के पहुंचा और १५ ज़िल्हिज्जा को वह मदीना तय्यिबा जाएगा मक्के में वह क़ुर्बानी के दिनों में मुसाफ़िर है उस पर माल वाली क़ुर्बानी नहीं है अल्बत्ता अगर १५ दिन मक्के में रह कर मदीने जाना है तो उस पर माल वाली क़ुर्बानी वाजिब होगी।

आम तौर से हाजी लोग तमत्तुअ़ हज करते हैं यअ़नी पहले मक्के पहुंच कर उम्रा करते हैं फिर बाल मुंडा कर इहराम से बाहर हो जाते हैं। फिर आठ तारीख़ को हज्ज का इहराम बांध कर हज्ज करते हैं ऐसे हाजियों पर हज की क़ुर्बानी वाजिब है वह १० ता० को कुर्बानी कर के सर मुंडाते हैं और आम कपड़े पहन लेते हैं। हज्जे क़िरान ज़रा मुश्किल है उस में उम्रा व हज्ज दोनों की नीयत एक साथ होती है। उम्रा करके इहराम से बाहर नहीं आते जब हज्ज कर लेते हैं तब इहराम से बाहर आते हैं। हज्जे क़िरान में लम्बी पाबन्दी रहती है क़िरान हज्ज वाले पर भी हज्ज की क़ुर्बानी वाजिब है। एक हज्ज इफ़राद होता है। इस में हाजी उम्रे की नीयत नहीं करता सिर्फ़ हज्ज की नीयत करता है और हज्ज करने के बअ़द ही इहराम से बाहर आता है, इस में भी लम्बी पाबन्दी होती है लेकिन इफ़राद हज्ज करने वाले पर हज्ज वाली क़ुर्बानी वाजिब नहीं है कर दे तो बड़ा सवाब है।

प्रश्न : क्या अरफ़ात में ज़ुहर व अ़स्र की नमाज़ एक साथ पढ़ना ज़रूरी है?

उत्तर : अगर मस्जिदे नुम्रा के इमाम के साथ नमाज़ पढ़ना मिल जाए तो दोनों नमाज़ें एक साथ पढ़ें। यहां इमाम दोनों नमाज़ें एक ही अज़ान से पढ़ेगा। अलबत्ता इक़ामत दोनों नमाज़ों की अलग–अलग कही जाएंगी। दोनों नमाज़ें क़स्र से पढ़ी जाएंगी, दोनों नमाज़ों के बीच कोई सुन्नत या नफ़्ल न पढ़ेंगे। अपने ख़ेमे में जमाअ़त से नमाज़ पढ़ें तब भी इसी तरह पढ़ें, अल्बत्ता अगर जमाअ़त छूट जाए तनहा पढ़ें तो अहनाफ़ के नज़दीक दोनों नमाज़ें अपने वक़्त पर पढ़ें। अहनाफ के नज़दीक मुक़ीम क़स्र करेगा तो नमाज़ न होगी।

प्रश्न : क़ुर्बानी किस वक़्त से किस वक़्त तक की जा सकती है ?

उत्तर : १० ज़िल्हिज्जा को बक़रअ़ीद की नमाज़ के बअ़द १२ ज़िल्हिज्जा को सूरज डूबने से पहले तक मगर अहले हदीस लोग १३ ज़िल्हिज्जा की शाम तक क़ुर्बानी करते हैं।

प्रश्न : क्या क़ुर्बारनी रात में की जा सकती है?

उत्तर : हां बीच में जो दो रातें पड़ती हैं, उन में क़ुर्बानी करें तो हो जाएगी लेकिन बेहतर यह है कि क़ुर्बानी दिन में की जाए।

प्रश्न : क़ुर्बानी का जानवर कैसा होना चाहिए और किस उम्र का होना चाहिए।

उत्तर : क़ुर्बानी का जानवर सिहत मन्द हो, बकरा, बकरी भेड़ वगैरह एक साल के हों, पड़वा यअ़नी बड़े जानवर दो साल के और ऊंट पांच साल का। उम्र सहीह न मअ़लूम हो तो दांत देख लें अगर आगे के दो बड़े दांत निकल आए हैं जिसे जानवर वाले दान्तना बोलते हैं तो जानवर क़ुर्बानी की उम्र का है।

प्रश्न : क्या बड़े जानवर (पड़वा वग़ैरह) में सात हिस्से ज़रूरी है या कम भी हो सकते हैं ?

उत्तर : सात हिस्से ज़रूरी नहीं, एक हिस्से पर भी पड़वा ज़ब्ह किया जा सकता है। दो, तीन, चार, पांच, छे हिस्से भी हो सकते हैं, ज़ियादा से ज़ियादा सात हिस्से हो सकते हैं।

प्रश्न : हमारे इलाक़े में रिवाज है कि बड़े जानवर में छे ही हिस्से रखते हैं और कहते हैं कि सातवां हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़

से है। ऐसा करना कैसा है?

उत्तर : अगर छे हिस्से दार राज़ी हैं कि सातवा हिस्सा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से होगा जिस के पैसे छे हिस्सेदार बर्दाश्त करेंगे तो अच्छी बात है, मगर ज़ब्ह करने वाला छे हिस्से दारों के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी नीयत करे। लेकिन बेहतर यह था कि इस को उर्फ़े आम न बनाया जाता जिसको अल्लाह तौफ़ीक़ दे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जानिब से पूरा हिस्सा ज़ब्ह करे न कि सातवें हिस्से में उर्फ़न शरीक हो। एक हिस्से में कई का साझा ठीक नहीं।

प्रश्न : लंगड़े जानवर की क़ुर्बानी दुरुस्त है या नहीं ?

उत्तर : जिस पांव से लंगड़ा रहा है अगर उससे सहारा लेकर चलता है तो उस की क़ुर्बानी दुरुस्त है लेकिन एक पैर से सहारा ले ही नहीं पाता तो उसकी क़ुर्बानी दुरुस्त नहीं इसी तरह अन्धे, काने, एक तिहाई कन कटे, एक तिहाइ दुम कटे, आधे से ज़ियादा दान्त गिरे जानवर की क़ुर्बानी दुरुस्त नहीं जिस जानवर के सींग जड़ से टूट जाएं उस की क़ुर्बानी भी दुरुस्त नहीं।

प्रश्न : क़ुर्बानी ज़ब्ह करते वक़्त कुर्बानी की दुआ याद न हो तो क्या करे?

उत्तर : क़ुर्बानी की दुआ याद न हो तो देख कर पढ़ दे वैसे दुआ पढ़ना ज़रूरी नहीं जिन लोगों की तरफ़ से क़ुर्बानी करना है उन की तरफ़ से नीयत करके बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह कर ज़ब्ह कर दे क़ुर्बानी हो जाएगी।

प्रश्न : क़ुर्बानी के गोश्त के हक़दार कौन कौन लोग हैं?

उत्तर : क़ुर्बानी के गोश्त का एक तिहाई गरीबों में तक़सीम करना चाहिए, एक तिहाई अज़ीज़ों में बांटना चाहिए और बाक़ी एक तिहाई घर वालों को खाना चाहिए लेकिन यह ज़रूरी नहीं है अगर किसी के घर में ज़ियादा लोग हैं और वह सारा गोश्त खा जाएं तक़्सीम न करें तो गुनहगार न होंगे।

प्रश्न : क़ुर्बानी की खाल का क्या मसरफ़ होना चाहिए।

उत्तर : क़ुर्बानी की खाल अपने किसी काम में ला सकते हैं जैसे मुसल्ला बना लें, झोला बना लें, मश्कीज़ा बना लें लेकिन अगर खाल बेची गयी तो अब क़ीमत का सदक़ा वाजिब है, ग़रीबों का हक़ है। क़ुर्बानी की खालों का बेहतरीन मसरफ़ वह मदरसे हैं जिन में ग़रीब बच्चों को खाना कपड़ा या ख़र्चा दिया जाता है।

प्रश्न : क्या क़ुर्बानी का गोश्त ग़ैर मुस्लिम भाइयों को दिया जा सकता है?

उत्तर : हां अगर गुंजाइश हो तो ग़ैर मुस्लिम भाइयों को क़ुर्बानी का गोश्त दिया जा सकता है। लेकिन मुसलमानों को महरूम करके ग़ैर मुस्लिमों को गोश्त देना अच्छी बात नहीं है।

प्रश्न : क्या पड़वे के क़ुर्बानी में अक़ीक़े का हिस्सा लिया जा सकता है ?

उत्तर : हां बड़े जानवर में क़ुर्बानी के हिस्सों में अक़ीक़े का हिस्सा लिया जा सकता है।

प्रश्न : अक़ीक़े में तो सातवें दिन का लिहाज़ किया जाता है। अगर क़ुर्बानी के दिनों में सातवां दिन न पड़ता हो तो क्या अक़ीक़ा हो जाएगा?

उत्तर : अक़ीक़े में सातवां दिन बेहतर है ज़रूरी नहीं, इस लिये सातवां दिन न पड़े तब भी अक़ीक़ा हो जाएगा।

प्रश्न : क़ुर्आने मजीद के अल्फ़ाज़ किसी और ज़बान में लिखना कैसा है?

उत्तर : हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में क़ुर्आने मजीद जिस रस्मुल ख़त में लिखा गया उम्मत का इज्माअ हो गया कि अब क़ुर्आने मजीद किसी और ख़त में न लिखा जाएगा चुनांचि अरबी के बहुत से अलफ़ाज़ जो आम अरबी में और तरह लिखे जाते हैं। लेकिन क़ुर्आने मजीद में ख़त्ते उस्मानी ही में छापे जाते हैं जैसे अलआलमीन, अर्रहमान, अलकिताब, अलकाफ़िरीन, अलमलाइकति वग़ैरह लेकिन इस फ़र्क़ को आलिम ही समझ सकेगा। लिहाज़ा अरबी में क़ुर्आने मजीद सिर्फ़ ख़त्ते उस्मानी ही में लिखा जाएगा। रही बात क़ुर्आने मजीद की आवाज़ की किसी और ज़बान में महफ़ूज़ करना मेरे नज़दीक ना दुरुस्त नहीं है लेकिन उस तहरीर पर मुसहफ़ का इतलाक़ न होना चाहिए। उसे अगर दूसरी ज़बान वालों की सहूलत के लिए छापें तो साथ में अरबी मत्न ज़रूर हो।

Mob: 9935316659
9235849619

STAG INDIA

Dealer Supplier

Ultra Modern Armscovers, Belt, Sting, Bag Toy Air Rifle, Toy Air Pistol, Clearing Implements & All Kinds of Gun Acessories.

9, LATOUCHE ROAD, LUCKNOW-226018, U.P. (India)

धार्मिक क्रान्ति का युग

श्री नेत्र पाण्डेय

गौतम बुद्ध का जीवन-परिचय:

सिद्धार्थ का जन्म ५६३ ई०पू० में हुआ था। उनके पिता का नाम शुद्धोधन था। वे सूर्यवंशीय शाक्य जाति के क्षत्रिय थे। वे कपिलवस्तु नामक एक छोटे से गणराज्य के प्रधान थे जो वर्तमान बस्ती जिले की पूर्वी सीमा पर स्थित था। सिद्धार्थ की माता का नाम महामाया अथवा मायादेवी था जो गोरखपुर जिले में स्थित एक गणराज्य के प्रधान की कन्या थीं। जब माया देवी मायके जा रही थीं तो मार्ग में लुम्बिनी नामक वन में जो नेपाल के तराई में स्थिति है, सिद्धार्थ का जन्म हो गया। प्रसव-पीड़ा से मायादेवी का परलोकवास हो गया अतएव सिद्धार्थ का पालन-पोषण उनकी विमाता प्रजापति देवी गौतमी ने किया।

सिद्धार्थ बाल्यकाल से ही बड़े गम्भीर तथा चिंतनशील थे और प्रायः वे एकांत में जाकर मनन तथा चिन्तन किया करते और इतने विचार-मग्न हो जाते थे कि उन्हें किसी बात की सुध-बुध नहीं रह जाती थी। सिद्धार्थ सर्वगुण-सम्पन्न थे। उनके जन्म पर ही ज्योतिषियों ने यह भविष्यवाणी की थी कि राजकुमार या तो एक महान चक्रवर्ती सम्राट होगा या वह एक महान सन्यासी। अपने पुत्र की चिन्तनशील प्रवृत्ति को देखकर राजा को बड़ी चिन्ता हुई और उन्होंने सुख तथा भोग-विलास की सारी सामग्री एकत्रित करके अपने पुत्र की उस चिंतनशील तथा त्यागमय प्रवृत्ति को बदलने का यथाशक्ति प्रयत्न आरम्भ कर दिया। अपने मंत्रियों के परामर्श से उन्होंने केवल सोलह वर्ष की अवस्था में सिद्धार्थ का विवाह गोपा (यशोधरा) नामक एक अत्यन्त रूपवती राजकुमारी के साथ कर दिया। उस से एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ। परन्तु पुत्र के जन्म से सिद्धार्थ को कोई प्रसन्नता न हुई, वरन् उनके मुख से यह शब्द निकल पड़े, "यह एक और राहु अर्थात् बंधन उत्पन्न हुआ जिसे मुझे तोड़ना पड़ेगा।" इसी से नवजात शिशु का नाम राहुल पड़ा। विवाह तथा वैभव का सिद्धार्थ की चिंतनशील तथा वैराग्यमयी प्रवृत्ति पर कोई प्रभाव न पड़ा। उनका कोमल तथा दयालु हृदय मानव-जीवन की पीड़ा-जनक समस्याओं पर विचार करता रहा। वृद्धावस्था, रोग तथा मृत्यु उन्हें मनुष्य के सबसे भयंकर शत्रु प्रतीत हुए। अतएव इनसे मुक्ति पाने के मार्ग को ढूंढने के लिए व्यग्र हो उठे। विवाह के बारह तेरह वर्ष बाद तक गृहस्थाश्रम में रहकर ही वे चिंतन करते रहे। अंत में जब वे २६ वर्ष के हुए तो एक दिन रात्रि के समय उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया और अपनी सोती हुई पत्नी तथा पुत्र और सारे राज्य-वैभव को त्यागकर अपने सारथी छंदक के साथ एक रथ में बैठकर सत्य की खोज के लिए उन्होंने प्रस्थान कर दिया। बौद्ध साहित्य में इसी घटना को महाभिनिष्क्रमण (महा+अभि+निष्क्रमण) के नाम से पुकारा गया है। निष्क्रमण का अर्थ होता है निकल जाना अथवा चला जाना। चूंकि राज्य के सारे वैभव को ठुकरा कर चला जाना एक बहुत बड़ी घटना थी अतएव इसे महाभिनिष्क्रमण के नाम से पुकारा गया है। जब सिद्धार्थ अपने पिता की सीमा से बाहर निकल गये तब उन्होंने अपने सारथी तथा घोड़े को लौटा दिया। इसके पश्चात् उन्होंने अपने राजसी वस्त्री आभूषण एक भिखारी को दे दिया और स्वयं एक सन्यासी का रूप धारण करके सत्य की खोज में आगे बढ़े।

सर्व-प्रथम सिद्धार्थ मगध की राजधानी राजगृह गये जहां पर दो बड़े ही उच्च कोटि के ब्राह्मण आचार्यों के आश्रम थे। सिद्धार्थ इनके शिष्य बन गये। परन्तु उन्हें निराश होकर वहां से जाना पड़ा क्योंकि वह ब्राह्मण आचार्य उन्हें निवृत्ति का मार्ग न दिखा सके। जब सिद्धार्थ ने राजगृह छोड़ तब उनके पांच और साथी उनके साथ हो लिए। अब सिद्धार्थ ने गया के समीप उरुवेल नामक वन में पांच साथियों के साथ प्रवेश किया और ६ वर्ष तक ऐसी कठिन तपस्या की कि उनका शरीर सूखकर कांटा हो गया परन्तु उन्हें सच्चे ज्ञान की प्राप्ति न हुई। तब वे इस नतीजे पर पहुंचे कि शरीर को कष्ट देने से कोई लाभ नहीं और स्वस्थ शरीर से ही ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। इसका परिणाम यह हुआ कि उनके पांचों साथियें की श्रद्धा उनमें समाप्त हो गयी और वे उनका साथ छोड़कर काशी की ओर चले गये। अब सिद्धार्थ ने अकेले ही चिंतन आरंभ किया। ३५ वर्ष की अवस्था में वैशाखी पूर्णिमा की रात्रि के समय जब वे एक बरगद के वृक्ष के नीचे समाधि लगा कर चिंतन में लीन थे तब उन्हें सत्य के दर्शन हुए। बौद्ध-धर्म में इसी घटना को सम्बोधि (उचित ज्ञान की प्राप्ति) के नाम से पुकारा गया है। सिद्धार्थ इसी समय बुद्ध कहलाये

क्योंकि उन्हें बोधि अर्थात् ज्ञान प्राप्त हो गया था। और उनके द्वारा प्रचारित धर्म बौद्ध–धर्म कहलाया। जिस वृक्ष के नीचे उन्हें सम्बोधि प्राप्त हुई थी वह बोधि–वृक्ष कहलाया और गया का नाम बोधिगया पड़ गया। सम्बोधि में सिद्धार्थ को 'प्रतीत्य समुत्पात' के सिद्धांत का बोध हुआ और उन्होंने निर्वाण प्राप्त कर लिया। प्रतीत्य का अर्थ है प्रतीत अथवा विश्वास और समुत्पात का अर्थ होता है उत्पत्ति। अतएव प्रतीत्य समुत्पात का शाब्दिक अर्थ हुआ उत्पत्ति में विश्वास। परन्तु व्यापक अर्थ में 'प्रतीत्य समुत्पात' का अर्थ है 'संसार की सभी वस्तुएं और वासनाएं कार्य और कारण पर निर्भर है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि कार्य तथा कारण अवश्य होता है। निर्वाण का शाब्दिक अर्थ होता है मुक्ति। परन्तु व्यापक अर्थ में निर्वाण सांसारिक तृष्णाओं, दुखों और बन्धनों से छुटकारा पा लेने की अवस्था है जो चरम सत्य है। इस प्रकार बुद्ध जी को सांसारिक बन्धनों से छुटकारा पाने का मार्ग ज्ञात हो गया।

कहा जाता है कि बुद्ध जी अपने धर्म का प्रचार करना नहीं चाहते थे परन्तु जब उन्होंने देखा कि संसार के लोग दुख में डूबे हुए हैं और उससे छुटकारा पाने के लिए छटपटा रहे हैं तब उनका कोमल उदार हृदय अपार करूणा से पिघल गया और उन्होंने अपने धर्म का प्रचार करने का निश्चय कर लिया।

बुद्ध जी ने अपना प्रथम उपदेश काशी के समीप सारनाथ नामक स्थान पर अपने उन पांचों साथियों को दिया जो उनका साथ छोड़कर चले गये थे। बौद्ध साहित्य में उस प्रथम उपदेश को 'धर्म–चक्र–प्रवर्तन' के नाम से पुकारा गया है जिसका अर्थ होता है धर्म–रूपी चक्र का चलाना। बुद्ध जी ने अपने शिष्यों से कहा, 'चारों दिशाओं में जाओ और अपने धर्म का प्रचार करो।'' बुद्ध जी ने स्वयं भी अपने जीवन के शेष ४५ वर्ष अपने धर्म का प्रचार करने में व्यतीत किये। उन्होंने अपने उपदेश जन–साधारण को पाली भाषा में देने प्रारंभ किये। उनके धर्म–प्रचार का प्रधान क्षेत्र आधुनिक बिहार, उत्तर–प्रदेश का कुछ भाग तथा नेपाल था। बुद्ध जी के व्यक्तित्व में कुछ ऐसा आकर्षण था कि राजा तथा रंक सभीने उनके उपदेशों का स्वागत किया और उनके जीवन काल में ही उनके अनुयायियों का एक अच्छा संघ बन गया। अपने धर्म का प्रचार करते हुए वे मल्लों की राजधानी पावा पहुंचे। यहां पर वे अतिसार (पेचिस) के रोग से पीड़ित हो गये। पावा से वे कुशीनगर चले गये और यहीं पर अस्सी वर्ष की आयु में ४८३ ई० पूर्व में उनका परलोकवास हो गया। बौद्ध धर्म में इस घटना को महापरिनिर्वाण (महान मोक्ष की प्राप्ति) कहा गया है। बुद्ध जी का स्थान संसार के महान् धर्म–प्रवर्तकों में है। जिनके धर्म का न केवल सारे भारतवर्ष में वरन् ऐशिया के बहुत बड़े भाग में प्रचार हुआ। अब इस धर्म की प्रमुख विशेषताओं पर विचार कर लेना आवश्यक है।

बौद्ध धर्म की विशेषताएं-

बुद्ध बड़े क्रान्तिकारी थे, वास्तव में छठी शताब्दी ई० पू० के क्रान्तिकारियों में उनका सबसे ऊंचा स्थान है। उन्होंने वैदिक धर्म के विरुद्ध उसी प्रकार का एक महान आन्दोलन आरम्भ किया जिस प्रकार यूरोप में कैथोलिक धर्म के विरुद्ध मार्टिन लूथर ने किया था। वास्तव में बुद्ध किसी धर्म के संस्थापक न थे। वरन् वे एक बहुत बड़े धार्मिक तथा सुधारक थे। वे हिन्दू–धर्म तथा हिन्दू–समाज के दोषों को दिखा कर जनता को एक नये मार्ग पर ले जाना चाहते थे जो आदि में कल्याणकारी था, मध्य में कल्याणकारी था और अन्त में कल्याणकारी था। जिस धर्म का बुद्ध जी ने प्रचार किया उसकी निम्नलिखित विशेषताएं थीं –

(१) बुद्धिवादी धर्म : धर्म पूर्ण–रूप में बुद्धिवादी था। बुद्ध जी ने वेदों को प्रामाणिक ग्रन्थ नही माना। वे इस बात को मानने के लिए तैयार न थे कि वेदों में जो कुछ लिखा है वह सर्वथा सत्य है। वेदों के स्थान पर उन्होंने तर्क का सहारा लिया और वे केवल उन्हीं बातों को मानने के लिए तैयार थे जो तर्क संगत हों। अंध विश्वास, रूढ़ियों तथा परम्पराओं के लिए उनके धर्म में कोई स्थान नहीं था।

(२) सत्कर्म तथा सदाचार पर बल : वेदों में यज्ञ तथा बलि को मोक्ष की प्राप्ति का साधना बतलाया गया है। बुद्ध जी ने इन दोनों ही क्रियाओं का घोर विरोध किया। यज्ञों के स्थान पर उन्होंने सत्कर्म तथा सदाचार का पाठ पढ़ाया। उनका कहना था कि मनुष्य अच्छे–अच्छे कार्य करके और अपने आचरण को शुद्ध रख कर मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। बलि के स्थान पर बुद्धजी ने अहिंसा का पाठ पढ़ाया। उनका कहना था कि सभी जीवों पर दया करनी चाहिए।

(३) लोकतन्त्रात्मक धर्म : बुद्ध जी जाति–प्रथा के घोर विरोधी थे क्योंकि इसके विपरीत बुद्ध जी का धर्म बड़ा ही लोकतंत्रात्मक था। वह सभी को समान समझता था उसमें ऊंच–नीच का भेद भाव न था। वह किसी वर्ग विशेष की संपत्ति न था वरन् उसका द्वार सबके लिए खुला था।

(४) सीधा तथा सरल धर्म – बौद्ध धर्म बड़ा ही सीधा तथा सरल

था। उसमें किसी भी प्रकार की दार्शनिक विवेचना न थी। ईश्वर है अथवा नहीं, आत्मा है या नहीं, यह सृष्टि क्या है, इसकी रचना कैसे हुई है, इन सब दार्शनिक विवेचनाओं के जाल में बुद्धजी नहीं पड़े। उनका कहनाथा यदि कोई इनके झमेले में फंस जायेगा तो वह जीवन भर उससे निकल न पायेगा और सारा जीवन विवेचना में ही नष्ट हो जायेगा। अतएव बुद्ध जी ने बड़ी ही सीधी तथा सरल बात कही जो साधारण से साधारण व्यक्ति की समझ में आ जाये और उनके मन में किसी प्रकार का सन्देह न पैदा हो। उन्हें ने बताया कि संसार दुखमय है और इस दुख का कोई न कोई कारण होता है। बुद्ध जी ने इन कारणों को समझाया और उनके दूर करने का उपाय भी बतलाया, और दुखों के दूर हो जाने पर जिस परम आनन्द की प्राप्ति होती है उस के विषय में बुद्धजी ने बताया। इस परम आनन्द को बुद्ध जी ने 'निर्वाण' कहा है। निर्वाण जीवन की वह स्थिति है, जब मनुष्य संसार के सभी बंधनों से मुक्त हो जाता है और सुख–दुख उसके लिए समान हो जाते हैं। बौद्ध धर्म की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह निर्वाण अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति इसी जीवन में करा देता है न कि मृत्यु के उपरान्त। अब बुद्ध जी की शिक्षाओं तथा बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक है।

बुद्ध की शिक्षाएं तथा बौद्ध धर्म के सिद्धान्त :

बुद्ध की शिक्षाओं को हम केवल एक वाक्य में प्रकट कर सकते हैं। अर्थात् दुःख, दुख समुदय, दुःख–निरोध तथा दुःख–निरोध–मार्ग। यही चार उपदेश बुद्ध ने सर्व–प्रथम अपने पांच शिष्यों को सारनाथ में दिये थे। बौद्ध–धर्म में इन्हीं को 'चत्वारि–आर्य–सत्यानि' अर्थात् चार श्रेष्ठ सत्य के नाम से पुकारा गया है। अब इनकी विस्तृत विवेचना कर देना आवश्यक है।

(१) दुःख – बुद्ध ने इस संसार को दुःखमय माना है। उनके विचार में मनुष्य का सारा जीवन दुःखों से भरा हआ है और उसके जीवन में दुःख की ही प्रधानता रहती है। जन्म, रोग, बुढ़ापा, मृत्यु सभी दुख है। जब मनुष्य को प्रिय वस्तु नहीं मिलती और अप्रिय वस्तु को उसे ग्रहण करना पड़ता है तब वह दुःखी होता है। इच्छा की पूर्ति न होने पर दुःख होता है। संसार का कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है जो इन दुःखों से मुक्त हो।

(२) दुःख–समुदाय : समुदाय का अर्थ होता है उदय अथवा निकलना। दुःख समुदाय का यह तात्पर्य है कि दुःख का कोई–न कोई कारण होना चाहिए क्योंकि अकारण कोई चीज नहीं होती। इस प्रकार बुद्ध ने न केवल दुःख रूपी रोग बतलाया वरन उसका कारण भी बतलाया। बुद्ध के विचार में अविद्या अर्थात् अज्ञानता दुःख का मूल कारण है। जब मनुष्य अपने स्वरूप के सम्बन्ध में गलत विचार बना लेता है तब उसी को अविद्या कहते हैं। जब मनुष्य अपने शरीर तथा मन को अपना वास्तविक स्वरूप समझने लगता है और उस में भौतिक अथवा सांसारिक सुखों की इच्छा उत्पन्न हो जाती है। जब वह अपनी इच्छाओं के वश में हो जाता है तब वह नाना प्रकार के स्वार्थ के कामों में फंस जाता है और अपने कामों के अनुसार उसे सुख दुख मिलते रहते हैं और वह दुख मय संसार के बन्धन में फंसा रहता है इस प्रकार बुद्ध ने अविद्या तथा तृष्णा (इच्छा) को दुख का मूल कारण बतलाया। (जारी)

हुक्मे नबी है शिर्क हरगिज मत करो

अबू मर्ग़ूब

इब्तिदा है नाम से अल्लाह के
और हज़रत पर दुरूदे पाक से
रहमतें लाखों नबीये पाक पर
और सलाम अपने हुज़ूरे पाक पर
अक्ल कहती थी खुदा है तो जरूर
मअरिफ़त से उस की थे हम दूर दूर
जब पढ़ा हम ने हदीसे पाक में
जानकारी तब हुई ज़ातो सिफ़ात में
रहमान है, रहीम है, क़ाहिर है और गफ़ूर है
आलिमे ग़ैबो शहादत और वो शकूर है
अलग़रज़ रब का रसूले पाक से इर्फ़ां मिला
और रसूले पाक ही से तो हमें क़ुर्आं मिला
हम इताअ़त में रसूलुल्लाह की
पा सके हैं राह हुब्बुल्लाह की
और मुहब्बत से रसूलुल्लाह की
पाई हम ने राह तक़्वल्लाह की
मक्सूद गर ये हो ख़ुदा राज़ी रहे
ज़िन्दगी क़ुर्आन व सुन्नत पर रहे
चाहता जो भी है अब राहे नजात
उस को अपनाना है अब सुन्नत की बात
डाले जाओ आग में या क़त्ल हो
हुक्मे नबी है शिर्क हरगिज़ मत करो
हम रसूलुल्लाह की तअ़लीम से
हां नहीं झुकते हैं आगे क़ब्र के
मांगो जब मांगो तो बस अल्लाह से
है बताया ये रसूलुल्लाह ने
क़ब्र वालों से नहीं हम मांगते
मगफ़िरत उन की ख़ुदा से मांगते
बस तरीक़ा ये ही तो मस्नून हे
और हमारा भी यही मअ़मूल है
हज़रत ने बिदअ़त को तो गुमराही कहा
बिदअ़तों से दूर रहना है सदा
सुन्नते नबवी से जो भी दूर है
वह अ़मल हरगिज़ नहीं मक़्बूल है
दीन के जो काम भी करते हैं हम
बस नबी के हुक्म से करते हैं हम
जिस बुरी भी बात से रुकते हैं हम
बस नबी के हुक्म से रुकते हैं हम
ऐ मेरे अल्लाह तू रहमत उतार
हज़रत नबीये पाक पर तू बार–बार
आल व अस्हाबे नबी पर भी सदा
रहमतें नाज़िल हों ऐ मेरे ख़ुदा

दिल की बीमारी

आरती सक्सेना

प्रीवेंशन इज बैटर दैन क्योर (इलाज से बेहतर रोग की रोकथाम है). यह कहावत बरसों से चली आ रही है. जहां तक ह्रदय रोग की बात है तो यह रोग आज के समय में आम रोग हो चुका है. इस रोग के बारे में जानने के लिए मुंबई के जानेमाने ह्रदय रोग विशेषज्ञ डा. रमेश आर. दरगड़ से बातचीत की गई जो मुंबई के प्रसिद्ध लीलावती अस्पताल बांद्रा और हीरानंदानी अस्पताल अंधेरी में ह्रदय रोग विशेषज्ञ हैं. पेश है डा. रमेश आर दरगड़ से की गई बातचीत के प्रमुख अंश:

आप के हिसाब से दिल की बीमारी से बचने के लिए सरकार द्वारा क्या कार्यक्रम किए जा सकते हैं?

जब भी इनसान के शरीर में कोलेस्टाल बढ़ने लगता है तो उस का सीधा असर दिल पर होता है. ऐसे में कोलेस्ट्रल को नियंत्रित कैसे किया जाए और दिल की समस्या से बचने के लिए क्या सावधानियां बरती जाएं अगर इस तरह के कुछ कार्यक्रम सरकार द्वारा पेश किए जाएं तो दिल की बीमारी से छुटकारा पाने के प्रति आम लोगों में जागरूकता जरूर आएगी.

कोलेस्ट्राल की जांच कर लें तो दिल की बीमारी से बचा जा सकता है. ज्यादातर होता है कि लोग ४० की उम्र के बाद जब दिल की बीमारी का एहसास होता है तब डाक्टर के पास जाते हैं.

दिल की बीमारी का एक कारण इस का वंशानुगत होना भी है. देखा गया है कि जिन के घर में हार्ट अटैक से किसी की मौत हुई थी उस घर में अगली पीढ़ी के साथ भी इस तरह की समस्या सामने आती है. इसीलिए ऐसे घर में जिस में कोई हार्ट का मरीज है तो घर में दूसरे सदस्यों को भी २०–२५ साल की उम्र में कोलेस्ट्राल टेस्ट करा लेना चाहिए. अगर रिपोर्ट सामान्य है तो भी हर ५ साल में एक बार अपना कोलेस्ट्राल चेक करवा लेना चाहिए.

कोलेस्ट्राल टेस्ट के अलावा भी एक टेस्ट होमोसिस्टीन लेवल टेस्ट होता है जो कि सामान्य तौर पर ०.५० होना चाहिए. अगर होमोसिस्टीन ०.५० से ज्यादा है तो हार्ट अटैक होने के मौके अधिक होते हैं. इसका इलाज काफ़ी साधारण है. इसके इलाज में डाक्टर फौलिक एसिड नामक गोली

एक टेस्ट एलपीए(वन) होता है जिस में निकोटनिक एसिड गोली दी जाती है. इस के अलावा देश में शुगर और उच्च रक्तपात भी हार्ट की बीमारी का अहम कारण है. अतः इन्हें भी नियंत्रण में रखना बहुत जरूरी है.

लोगों में डायबिटीज और कोलेस्ट्राल बढ़ने के पीछे खास वजह क्या है?

पहले लोग जितनी कसरत, मेहनत करते थे वह आज के लोग नहीं करते हैं. सीढ़ियों के बजाए लोग लिफ्ट का इस्तेमाल करते हैं. अगर कहा जाए कि लोग पैदल चलने से जी चुराते हैं तो गलत न होगा. लोगों में मेहनत करने की घटती प्रवृत्ति से उन का कोलेस्ट्राल बढ़ रहा है. उस पर लाइफ स्टाइल काफी आरामदेह होता जा रहा है जिस की वजह से मोटापा भी बढ़ रहा है. इस के अलावा लोगों के खानपान में भी काफी अंतर आ गया है. अब लोग फास्ट फूड, चाइनीज, बर्गर जैसी चीजें ज्यादा खाने लगे हैं जिन में कैलोरी ओर कोलेस्ट्राल दोनों ही ज्यादा होते हैं. आज भी जो लोग ८ से १० घंटे कड़ी मेहनत करते हैं, पसीना बहाते हैं उन को बीमारियां कम होती हैं. इस के अलावा शहरी जीवन में मैंटल स्ट्रेस (मानसिक तनाव) भी बहुत ज्यादा है जिस की वजह से ब्लड प्रेशर की बीमारी होती है और जो दिल की बीमारी होती है. इन्हीं वजहों से हार्ट अटैक की बीमारी ज्यादा बढ़ रही है.

क्या आप इस से सहमत हैं कि मोटे लोगों को हार्ट अटैक ज्यादा होता है और पतले लोगों को नहीं?

यह कोई जरूरी नहीं है पतले लोगों को भी दिल की बीमारी होती है. लेकिन ज्यादातर मामले में देखा गया है कि मोटे लोगों में कोलेस्ट्राल ज्यादा होता है इसलिए दिल की बीमारी में मोटापा भी एक कारण बताया जाता है. लेकिन अगर किसी दुबले इनसान में कोलेस्ट्राल, डायबिटीज या ब्लड प्रेशर ज्यादा है तो उस को भी हार्ट अटैक हो सकता है. लेकिन शारीरिक तौर

पर स्वस्थ हैं तो आप का मोटापा किसी बीमारी का कारण नहीं बनेगा.

एंजियोप्लास्टी के जरिए दिल की बीमारी से कैसे बचा जा सकता है?

हार्ट में कहीं रुकावट (ब्लाकेज) आ जाए तो एंजियोप्लास्टी की जाती है. लेकिन अगर आप का लाइफ स्टाइल बिना मेहनत करने वाला है तो एंजियोप्लाटी से एक रुकावट खोल दें तो दूसरा ब्लाकेज भी हो सकता है. अगर इन सब से बचना है तो पहले से ही खानपान के साथ कसरत पर ध्यान देना चाहिए. क्योंकि बारबार एंजियोप्लास्टी कराना आम लोगों के लिए आसान नहीं है. यह बेहद खर्चीला इलाज है.

आप के लिए जरूरी है कि एंजियोप्लास्टी से बचने के लिए अपना लाइफ स्टाइल बदलें. अगर आप ऐसा नहीं करते हैं तो दिल की बीमारी से पूरी तरह छुटकारा नहीं पा सकेंगे.

हार्ट की बाईपास सर्जरी अंतिम उपचार माना जाता है. यह कहां तक सुरक्षित है?

एंजियोप्लास्टी और बाईपास सर्जरी लगभग एक जैसे हैं. बाईपास सर्जरी में हार्ट को गति में रखने के लिए दूसरी नस लगा कर हार्ट का काम करना शुरू करते हैं. इसे कराने के बाद आप को अपनी दिनचर्या में डाक्टर की सलाह के अनुसार बदलाव लाना ही पड़ता है तभी इस का लंबे समय तक आप लाभ उठा सकते हैं.

दिल की बीमारी के लक्षण क्या हैं ?

छाती में दर्द होने लगता है. चलने के बाद छाती में दर्द होना, गले में या हाथों में दर्द होना. ट्रेड मिल पर चलने से अगर सांस फूलती है या सीने में दर्द होता है तो भी दिल की बीमारी के लक्षण हैं.

सिटी स्केन करने पर धमनियों में रुकावट का पता चल जाता है. वैसे हिंदुस्तान में ८० प्रतिशत लोग बाईपास सर्जरी या एंजियोग्ररफी कर खर्चा बरदाशत नहीं कर सकते हैं. इसलिए शुरूआत में ही अगर सावधानी बरतें तो अच्छा हो.

कहते है कि डेढ़ मिनट के हार्ट अटैक में भी मरीज का बचना नामुमकिन होता है. इस बारे में आप क्या कहेंगे?

कभी–कभी ऐसा हार्ट अटैक होता है जो बहुत ही खतरनाक होता है. उस में मरीज अस्पताल तक भी नहीं पहुंच पाता है. अगर दिल के पास ही कहीं मेजर फाल्ट आ गया है और आसपास की मसल्स खत्म हो गई है तो ऐसे में मरीज को बचाना मुश्किल हो जाता है, लेकिन इस तरह के मरीज को भी दिल की बीमारी पहले से होती है, अचानक से कुछ नहीं होता है.

पहले के मुकाबले अब दिल की बीमारी के इलाज में कितनी तरक्की हुई है?

पहले से काफी तरक्की हुई है. अब तो ऐसी मशीनें आ गई हैं जिन में पता चल जाता है कि मरीज में दिल की बीमारी कहां तक पहुंची है. पिछले १ साल में ई.सी.जी., कार्डियोथेरैपी आ गई है जिस से दिल की बीमारी का जल्दी ही पता चल जाता है. अब तो कई सारी अति आधुनिक मशीनें आ गई हैं लेकिन ये सारी सुविधाएं हर अस्पताल में उपलब्ध नहीं हैं. इसलिए आम लोगों को तो अपना लाइफ स्टाइल ही बदलना पड़ेगा.

दिल की बीमारी का जड़ से दूर करने का कोई इलाज है?

नहीं, पूरी तरह जड़ से दिल की बीमारी दूर नहीं होती. एक बार अगर दिल में ब्लाकेज है और उस को आपरेशन करा कर दूर कर दिया तो यह जरूरी नहीं है कि दूसरी बार ब्लाकेज नहीं होगा. दवा तो आप को नियमित लेनी ही पड़ेगी ताकि भविष्य में कोई परेशानी न हो।

दिल की ताक़त के लिए

आज कल बाजार में आमला भी है और गाजर भी। आमला का मुरब्बा तय्यार करके जार में रख लें रोज़ाना सुब्ह नहार मुंह एक आमला खा लिया करें मगर ज़ुकाम की हालत में न खाएं। इसी तरह गाजर का मुरब्बा तैयार कर लें और सुब्ह नहार मुंह ५० से ६० ग्राम तक खा लिया करें।

Mob. 9336230892
2462215
खालिद हुसैन चिश्ती

इंजीनियर्स मार्बल

डीलर
हर प्रकार के मार्बल
ग्रेनाइट एवं टाइल्स

जाजमऊ, लखनऊ कानपुर रोड, केसा के सामने, कानपुर

पठकों से

इदारा

आप हज़रात का शुक्रिया कि आप सच्चा राही मंगवा कर सिर्फ़ इस्तिक़्बालिया कमरे की मेज़ पर नहीं रख देते बल्कि पढ़ते है, तभी तो कोई कहलवाता है कि आप के लेखों में उर्दू अल्फ़ाज़ (शब्द) होते हैं जिन को हम समझ नहीं पाते, कोई कहलवाता है कि आप के परचे में हिन्दी इतनी कठिन होती है कि लुग़त से मदद लेना पड़ती है, कोई लिख भेजता है कि आप शुक्रिया की जगह धन्यवाद, सख़्त की जगह कठिन, दरख़्वास्त की जगह अनुरोध, माँ, बाप की जगह माता पिता लिख कर हमारी इस्लामी सिक़ाफ़त क्यों बिगड़ रहे हैं? आप सब का शुक्रिया और सब को धन्यवाद, हम कोशिश कर रहे हैं कि इम्कान भर, (जहां तक हो सके) हर एक की शिकायत दूर करें, हम बराबर एअ़लान करते रहते हैं कि लेखक (कातिब) लोग ज़बान भी आसान लिखें और बात पेश (प्रस्तुत) करने का उस्लूब (शैली) भी आसान हो। परन्तु यह बात अच्छी नहीं लगती, और अच्छी है भी नहीं कि योग्य लेखकों के लेखों का संशोधन किया जाए, फिर भी कुछ लेख तो सुधारने पड़ते ही हैं, कुछ लेखक तो पाठकों या समाज में सुधार लाने का ऐसा उस्लूब अपनाते हैं कि उन की मान मर्यादा (इज़्ज़त) पर आ बनती है ऐसे लेखों का संशोधन (इस्लाह) तो कर दिया जाता है, लेकिन क़ाबिल (योग्य) लिखने वालों कै मज़ामीन (लेखों) के सख़्त अल्फ़ाज़ (कठिन शब्द) नहीं बदले जाते अल्बत्ता आगे इरादा है कि कठिन शब्दों के सरल अर्थ (आसान मअ़ना) लिख दिये जाया करेंगे।

हम अपने पढ़ने वालों का शुक्रिया अदा करते हुए दरख़्वास्त करते हैं कि वह आगे भी अपने मशवरों (परामर्शों) से हम को महरूम (वंचित) न करें आप लिखें कि:

- परचे का कौन सा लेख आप को पसन्द आया।
- कौन सा मज़मून आप के नज़दीक़ कोई फ़ाइदा नहीं रखता।
- आप के नज़दीक़ किस तरह के मज़ामीन का परचे मे इज़ाफ़ा होना चाहिये।
- जिन पढ़ने वालों को जो अलफ़ाज़ मुश्किल लग रहे हों उन में से कम से कम दस अल्फ़ाज़ एक कार्ड पर लिख भेजें ताकि अन्दाज़ा हो सके कि किस तरह के अल्फ़ाज़ हमारे पढ़ने वाले मुश्किल समझते है।
- बासलाहीयत (योग्य) हज़रात से दरख़्वास्त है कि वह सच्चा राही का एक पैराग्राफ़ ऐसा लें जिस में उन के नज़दीक सख़्त अलफ़ाज़ हों फिर वह उस पैराग्राफ़ को सरल कर के लिख दें यह काम मस्लहतन मुझे नहीं करना चाहिये लिखने वाले हज़रात मेरी मदद फ़रमाएं।

मैं अपने लिखने वालों के लिए एक प्रकाशित ख़बर दे रहा हूं, और उन से दरख़्वास्त करता हूं कि वह इसे आसान हिन्दी में एक कार्ड पर लिख भेजें जिस में अरबी फ़ारसी के कठिन शब्द न हों ख़बर यह है :

विवादास्पद राष्ट्रगीत अनिवार्य नहीं

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री एम०ए०ए० फातमी ने गत दिनों कहा कि राष्ट्रीगीत को गाना स्वैच्छिक है, इसे अनिवार्य नहीं बनाया जा सकता। उन्होंने कहा, इसका गायन अनिवार्य करना इस गीत का अपमान होगा। हम आप क़ी सरल की हुई ख़बर आप के नाम से छापेंगे।

एक शिकायत पढ़ने वालों से ज़ियादा ख़ुद मुझे है कि प्रूफ़ रीडिंग में ग़लतियां रह जाती हैं, वैसे ग़लतियों से ख़ाली शायद कोई मैगज़ीन न होगी फिर भी प्रूफ़ रीडिंग की ग़लतियों पर मुझे खेद है, अपने पढ़ने वालों से मुआफ़ी चाहता हूँ और बराबर कोशिश में हूँ कि ग़लतियां कम से कम हों। •

अनुरोध

सच्चा राही २००० पर ठहरा हुआ है आगे नहीं बढ़ रहा है। जो लोग किताबें छापने का काम कर रहे हैं वह सच्चा राही का कागज और छपाई देख कर तस्दीक़ करें गे कि इस का चन्दा लागत ख़र्च से भी कम है। अब अगर किसी को दौर पर भेजें तो वह चार पांच सौ ख़रीदार ज़रूर बना लाएगा लेकिन उसका ख़र्च निकालने पर और घाटा होगा अतः हम अपने पाठकों से अनुरोध (दरख़्वास्त) करते हैं कि हर पाठक कम से कम एक ख़रीदार बना दे तो यह सच्चा राही का बड़ा सहयोग होगा।

शोब-ए-दावत व इरशाद

नदवतुल उलमा ने शुरूअ़ ही से दअ़वत व इर्शाद का शोबा (विभाग) खोल रखा है जिस का काम तक़रीरें नीज बात चीत से मुआशरे (समाज) की ख़राबियों को दूर करना और मिल्लत में इत्तिहाद क़ाइम करना है आप इस की मदद भी करें और इससे काम भी लें।

फोन : ०५२२–२७४१२३१

मोबाइल : ९८३९२७४१४५

इस्लाम मर्द औरत दानों को बराबर का अधिकार प्रदान करता है

अनीस अहमद नदवी

इस्लाम एक मुकम्मल दीन है एक स्थाई सभ्यता। यह नस्ल, जाति, पद व रंग तथा बिना किसी भेद भाव के सभी मानव जाति का मार्गदशर्न जीवन के हर पक्ष में करता है। इस में कोई संदेह नहीं है कि इस्लाम पूरे ब्रहमाण्ड (काइनात) पूरी मानवता और संसार की तमाम नसलों और स्थानों के लिए उतारा गया है। इस्लाम मानव जाति के लिए एक वर्दान है। यह लोगों को जीने का ढंग, शानदार कलचर और सभ्यता की सीख देता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि लोग शानो शौकत का जीवन व्यतीत करते थे परन्तु उन के जीवन में बहुत सी त्रुटियां और बिगाड़ थे जो दुखों से कराहती हुई मानवता के दुख दर्द को दूर नहीं कर सकते थे। एक तरफ एक वर्ग के पास जीवन की सभी सुविधाएँ थीं और दूसरी तरफ एक ऐसा बड़ा वर्ग भी था जो तमाम अधिकारों से वंचित था। इस्लामी सभ्यता से पूर्व लोगों में नाबराबरी और ऊँच नाच का चलन था जिस को बहुत उचित और मानव के लिए मित्रता पूर्ण समझा जाता था। अन्य सभ्यताओं और धर्मों में स्त्रियों की दशा पर एक गहरी नजर डालें तो हम इस नतीजे पर पहुंचेगे कि औरत की दशा समाज में सब से अधिक दैनीय थी। वह तमाम अधिकारों से वंचित थीं।

पैतृक (मौरूसी) जायदाद में उन का कोई हिस्सा नहीं था। उन्हें सामान की तरह बेचा और खरीदा जाता था। उन को गुलाम की तरह समझा जाता था और अपने शौहरों के मुर्दा शरीर के साथ ज़िन्दा जलादिया जाता था। संक्षिप्त में कहा जा सकता है कि सबसे अधिक परदलित, परेशान और सभी अधिकारों से वंचित वर्ग में उन की गिनती थी। उनकी हालत (स्थिति) में किसी सुधार की आशा नहीं की जा सकती थी। भारत में मनु का विचारधारा के अनुसार औरत का अपना कोई अस्तित्व (हसती) नहीं था और न उसकी कोई अलग पहचान थी। हेमूरबी (**Hamurabi's**) की देवमाला और आस्था में उसे आजाद मानवी स्थान नहीं दिया जाता था बल्कि उसे एक पालतू जानवर समझा जाता था।

यूनान में भी वह तमाम अधिकारों और पदों से वंचित समाज का अंग थी। ऐसी ही दुर्दशा दूसरे देशों में भी स्त्रियों की थी। अरब लोग औरतों पर जुल्म व अत्याचार करने में सबसे आगे थे। उस ज़माने की सभ्यताओं में औरतों पर अत्याचार व अधिकारों से वंचित रखना एक आम प्रथा थी। उस ज़माने की सभ्यता में लोग औरत के वजूद को एक बुरा शगुन मानते थे। उन की सोच और मनो वैज्ञानिक विचारों के बारे में क़ुर्आन यूं बयान करता है–

अनुवाद "जब उनमें से किसी को लड़की के पैदा होने की सूचना दी जाए तो सारा दिन उस का चेहरा बे रौनक़ रहे और वह दिल ही दिल में घुटता रहे, जिस चीज की उस को सूचना दी गई है उसकी लज्जा से लोगों से मुंह छुपाए फिरे या उसको ज़िल्लत (अपमान) पर लिए रहे या उसकों मिट्टी में गाड़ दे खूब सुन लो उनकी यह तजवीज़ (प्रस्तावना) बहुत बुरी है।"

इस्लाम , जो एक महान धर्म है, शांति, भाईचारे, इंसाफ, बराबरी, मेलजोल का पैग़ाम लेकर आया और इसने दुनिया को एक शानदार कलचर और सभ्यता प्रदान की। इस्लाम ने सभी मर्दों और औरतों को समान अधिकार दिया। पवित्र क़ुर्आन बयान करता है:

अनुवाद–"जो शख्स (व्यक्ति) नेक काम करेगा चाहे वह मर्द हो या औरत हो बशर्ते कि साहिबेईमान हो तो हम उस शख्स को बालुत्फ़ जिन्दगी देगें और उनके अच्छे कामों के बदले में उनका अज्र (बदला) देंगे (सूरः नहल ९७)।

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया " तुम आदम की औलाद हो और आदम मिट्टी से पैदा किये गए थे।" समान धार्मिक अधिकार और दर्जा मर्द और औरत को दूसरे धर्मों के विपरीत बिना किसी भेद भाव के प्रदान किया गया है।

इस्लाम ने औरत को एक बलन्द मुक़ाम दिया है और सामाजिक जीवन के निर्माण में उसकी भागीदारी महान और हैरत अंगेज़ है। इस में ऐसे सिद्धांत और अक़ीदे (आस्थाएं) हैं कि जब उस पर अमल किया जाता है तो एक आदर्श समाज वजूद में आता है। जब संसार के दूसरे धर्मों और व्यवस्थाओं की शिक्षा का मुकाबला इस्लामी शिक्षा से किया जाए और जो कार्य उसने औरत को समाज में एक सम्मान जनक स्थान दिलाने का किया है उस पर ग़ौर किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि उसने मानव को मुख्य कर औरतों को आदर और सम्मान दिया है।

इस्लाम ने औरतों को समाज

में आदर और सम्मान दिलाने में एक महत्वपूर्ण, विशिष्ट और निर्णायक (फेसलाकुन) भूमिका निबाही है और उन्हें उत्पीड़न से निजात दिलाया है। उस ने उसे मर्दों के ज़ुल्म ज़्यादती तथा धर्मों के अत्याचारी नियमों और आस्थाओं से सुरक्षा प्रदान की है। यदि आप इस्लाम की इन महान करनामों पर ध्यान दें तो आप की श्रद्धा इस्लाम से और बढ़ जाएगी। समाज में इस्लाम ने औरतों को जो आदर व सम्मान का स्थान दिया है उसकी प्रशंसा बड़े बड़े ज्ञाता भी करते हैं। ज़मान–ए–जाहीलियत और दौरे इस्लाम में औरतों की स्थिति पर एक सरसरी नज़र डालें तो दोनों में एक बड़ा अंतर नजर आएगा। औरतों के लिए पहला दौर (काल) बड़ा ही ज़ालिमाना और अन्यायपूर्ण है जबकि दूसरा नायायपूर्ण, संतुलित और आदरपूर्ण है।

इस्लाम में औरतें धार्मिक क्रिया कलापों और उपासना से वंचित नहीं हैं। इन क्रिया कालापों में उनके लिए अलग से नीति व नियम नहीं हैं। बल्कि इस क्षेत्र में भी उनको बराबरी का अधिकार प्राप्त है

इसी प्रकार वह इस्लाम के प्रचार प्रसार, नेक कार्य और मुसलमानों की सेवा तथा बेहतर समाज के निर्माण में भी सक्रिय भाग ले सकती हैं। पवित्र कुर्आन मर्दों के साथ औरतों के भी नेक काम और प्रार्थना तथा उपासना का निर्देश देता है–

अनुवाद "और जो कोई नेक काम करेगा चाहे वह मर्द हो या औरत, शर्त यह है कि वहँ मोमिन हो, सो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे और उन पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा" (सूरः निसा–१२४)

उपरोक्त विचार को स्पष्ट करना जरूरी है क्यों कि बहुत से धर्म हैं जो औरतों को धार्मिक क्रिया कलापों में भाग लेने की अनुमत नहीं देते। वह उन को वह आजादी नहीं देते जो उनका अधिकार है। ईसाइयत, जिसके मानने वाले दुनिया में सबसे अधिक हैं, वह औरतों को सामजिक, धार्मिक और राजनैतिक अधिकारों से वंचित रखता है। मध्यकालीन युग औरतों के लिए एक ऐसा अन्धकार काल था जिसमें उनका जमीन, जायदाद आदि में कोई हक् नहीं दिया जाता था उन को बहुत सी प्रार्थनाओं (इबादत) में भाग लेने की अनुमत नहीं थी। मर्द उन की परछाईं से दूर भागते थे उन्हें नफ़रत अंगेज़ समझा जाता था। यह इस्लाम का चमतकार है जो दुनिया के धार्मिक विश्वासों में सूरज की तरह चमकता है कि उसने औरतों को समाज में उचित स्थान, सम्मान व आदर तथा मर्दों के बराबर अधिकार दिलाया

इस शानदार बराबरी के फल स्वरूप मर्दों के साथ महान और विशिष्ट औरतों को भी बहुत से क्षेत्रो में देखा जा सकता है जैसे ज्ञान, नस्लों के उत्थान तथा उच्च आदर्शो प्राप्ति के संघर्ष क्षेत्र में इन में बहुत सी लेखिकाएं, साहित्यकार, विचारक, दार्शनिक और हाफिज़े कुर्आन मिलेंगी। ऐसी स्त्रियां भी मिलेंगी जो हदीस की जानकार, इबादत गुजार, सूफी, प्रभावशाली तथा काफ़ी पढ़ी लिखी जिनसे लोगों ने शिक्षा और रूहानियत का पाठ पढ़ा है। औरतों को इस्लाम ने बहुत से अधिकार दिये हैं परन्तु हम यहां केवल इबादत (उपासना) और जमीन जायदाद में विरासत, खरीद फरोख्त के अधिकारों का वर्णन करते हैं, पति से तलाक़ लेने का अधिकार (अगर आवश्यक हो), सगाई को तोड़ने का अधिकार (अगर वह अपने होने वाले पति को पसन्द नहीं करती), ईद और जुमा तथा रोजाना की नमाजों में जमआत के साथ (सामूहिक) शामिल होने का अधिकार। जो लोग किसी न किसी बहाने इस्लाम को बदनाम करते हैं वह इस्लाम के खिलाफ़ यह प्रोपगोण्डा करते हैं कि इस्लाम औरतों को पर्दा करने का आदेश देता है। वास्तव में वह पर्दा करने का अर्थ नहीं समझते। पर्दा करने का अर्थ अपने शरीर को पूरी तरह कपड़े से इस प्रकार ढकना है कि औरत की सुन्दरता और ज़ीनत (श्रृंगार) छुपजाए। पर्दा उन अजनबियों से मेलजोल से बचना हैं जिन के साथ शरअ़ी तौर पर शादी हो सकती है। यह एक व्यवस्था है जो उन्हें सुरक्षा प्रदान करती है। यह इस्लाम का आदेश है जो औरतों को समाज में आदर और सम्मान दिलाता है। अतः यह एक वर्दान है श्राप नहीं। यह अल्लाह की तरफ से एक तुहफ़ा है जो उन्हें अनगिनत बुराइयों और खराबियों से बचाता है। पवित्र कुर्आन मुहम्मद (सल्ल०) को स्पष्ट आदेश देता है कि अपनी बीवियों और मुसलमान औरतों को पर्दा करने के लिए ताकीद करें।

पवित्र कुर्आन फरमाता है–

अनुवाद "ऐ पैग़म्बर अपनी बीवियों, अपनी सहबजादियों और दूसरे मुसलमानों की बीवियों से भी कह दीजिए (सिर) से नीचे कर लिया करें अपने ऊपर थोड़ी सी अपनी चादरें। इस से जल्द पहचान हो जाया करेगी तो आज़ार न दी ज सकेंगी (सताई न जा सकेंगी) और अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला मेहरबान है" (सूरः एहजाब ५६)

वास्तव में पर्दा किसी प्रकार औरतों को बाहर निकल कर कार्य करने से नहीं रोकता है और न तो यह औरतों को तालीम हासिल करने, अपने कैरियर

को बनाने, उच्च तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने से मना करता है। यद्यिपि उनका सबसे अच्छा कार्य क्षेत्र उनका घर है जहां वह अपने बच्चों का अच्छा पालन पोषण और घर की देखभाल कर सकती हैं, लेकिन आवश्यकता पड़े तो बिना किसी अजनबी से मेल जोल बढ़ाए घर के बाहर भी किसी भी कार्य क्षेत्र में भाग ले सकती हैं खास तौर से उन क्षेत्रों, विभागों में जो औरतों के लिए मख़्सूस (विशिष्ट) हो। फिर भी औरतें अपने घर के बाहर महफ़ूज़ व सुरक्षित नहीं हैं। घर में भी वह ख़तरे से बाहर नहीं हैं। उनके विरूद्ध अपराध इतना आम हो चुका है कि उनकी पवित्रता और सुरक्षा हर जगह ख़तरे में है। हर एक दिन दैनिक समाचार पत्रों में उनके खिलाफ अत्याचार और अपराध के समााचार प्रकाशित होते हैं। बलात्कार, छेड़छाड़, यौन उत्पीड़न यहां तक कि हत्या रोजाना की घटनाएं हो गई हैं। यह अपराध पहले इतने आम नहीं थे जब औरतें पर्दा करती थीं। सभी वर्गों, समुदायों के हर स्तर की महिलाएं शर्मीली व हयादार होती थीं। वह ऐसे वस्त्र पहनती थीं जो सिर से पैर तक शरीर को ढके रखते थे। वह अपनी सुन्दरता, और शरीर के हावभाव को छुपाए रखती थीं। वह छेड़छाड़ और बलात्कार के निशाने पर नहीं होती थीं। मैं पूछना चाहता हूं क्या आजादी का नाम नग्नता (उर्यानी) व नाज़ो नख़रे दिखाना है। अगर आजादी का अर्थ यही है तो वह क्यों शिकायत करती हैं जब उनके साथ छेड़छाड़ की जाती है। वह क्यों शोर मचाती हैं जब उनके साथ यौन उत्पीड़न व बलात्कार होता है। केवल मर्द ही नहीं अपराधी हैं बल्कि हकीक़त में जो मर्दों को अपने आदाओं, नाज़ो नखरों, फैशन से आकृष्ट करती हैं, वह भी बराबर की अपराधी और समाज में फेली हुई बुराइयों की जिम्मेदार हैं। इस्लामी पर्दे का रिवाज ही समाज की इन बुराइयों और समस्याओं का एक मात्र हल है

समाज की प्रथम एकाई पति पत्नी है जिसमें यह आवश्यक है कि एक को दूसरे पर बड़ाई हासिल हो। मर्द अपनी जवाब देही, कमाने की शक्ति, शारीरिक बनावट के कारण औरत से बेहतर (श्रेष्ठ) है। यही कारण है कि वह खानदान को चलाने वाला और जिम्मेदार शख़्स है। गृहस्ती चलाना, रोज़ी कमाना, बीवी बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करना उसका महत्वपूर्ण और प्रथम कर्तव्य है। अल्लाह पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है

अनुवाद " मर्द हाकिम हैं औरतों पर इस कारण कि अल्लाहतआला ने बाज़ो को बाजों पर फ़जीलत (बड़ाई) दी है और इस कारण कि मर्दों ने अपने माल ख़ार्च किये हैं, (अलनिसा–३४) जबकि स्त्रियां अपनी शारीरिक बनावट, बच्चे पैदा करने की क्षमता, उनका पालन पोषण और अपने दिमाग और शरीर की कमजोरी के कारण पुर्षों की मातहत बनाई गई हैं और उन्हें घर में रहने का आदेश दिया गया है ताकि वह बच्चों, पति और घर की जिम्मेदारियों को भलीभांत पूरा कर सकें अगर वह बच्चों को नेक पवित्र नागरिक बनाने में सफल हो जाती हैं तब ही माना जाएगा कि उन्हों ने अपने कर्तव्य को भलीभांत पूरी किया।

(पृष्ठ ३६ का शेष)

का शोर मचाती है कि सेक्युलर पार्टियां मुल्क के मुसलमानों की मुंह भराई कर रही है रिपोर्ट के मुताबिक आंध्र प्रदेश वाहिद रियासत है जहां मुसलमानों की आबादी के तनासुख के लिहाज से सरकारी मुलाजमतों में नुमाइंदगी बेहतर है। इसके अलावा कर्नाटक तमिलनाडु में भी नौकरियों में मुसलमानों की तादाद थोड़ी बेहतर है। असम जहां मुसलमानों की आबादी इक्तीस फीसद है। नौकरियों में मुसलमान सिर्फ ग्यारह फीसद हैं। केरल जहां तालीम का व्यवरा बेहतर है वहां भी सरकारी नौकरियों में मुसलमानों का तनासुब दस फीसद है जो कि मुसलमानों की अस्ल आबादी से कहीं कम है। सच्चर कमेटी ने जूडीशियरी में मुसलमानों की हिस्सादारी पर भी खास ध्यान दिया है यहां भी उसने पाया कि तमाम रियासतों में जूडीशियल सर्विस में भी मुसलमानों की तादाद खराब है। पच्छिमी बंगाल जहां मुसलमानों की तादाद पच्चीरा फीसद से ज्यादा है वहां जूडीशियल सर्विसेज में मुसलमानों की तादाद का तनासुब पांच फीसद है। सुप्रीम कोर्ट के साबिक चीफ जस्टिस जे.एम.वर्मा का कहना है कि मुल्क में जम्हूरियत बरकरार रखने के लिए समाज के सभी तबकों को साथ लेकर चलना जरूरी है और यही जम्हूरियत की निशानी है। रिपोर्ट में एक दिलचस्प इंकशाफ यह किया गया है कि तमाम शोबों (विभागों) में मुसलमानों की तादाद बेहद कम होने के बावजूद हिन्दुस्तान के जेलों में कैदियों की तादाद उनकी आबादी से कहीं ज्यादा है अगर चः तमाम रियासतों के जेलों का अलग अलग डाटा नहीं मिल सका है लेकिन कुल मिलाकर पूरे मुल्क की मुख्तालिफ जेलों में मुसलमानों की तादाद एक लाख छब्बीस हजार से भी ज्यादा है और उनमें ज्यादातर कैदी किसी दहशतगर्दी में मुलव्वस हैं। जेल में मुसलमानों की बढ़ती तादाद उनमें गरीबी और जेहालत के बढ़ते रूझहान की अक्कासी करता है। जराये के मुताबिक मनमोहन सरकार अब इस रिपोर्ट में ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखा रही है अगर मरकजी हुकूमत इस रिपोर्ट की संजीदगी से नहीं लेगी तो उससे यूपीए हुकूमत की हकीकत भी सामने आ सकती है।

अक़्ल हैरान है

इदारा

अल्लाह की मख़्लूक़ की कोई गिन्ती नहीं। मेरा ख़याल है इन आंखों से सीधे न दिखने वाली मख़्लूक की गिन्ती दिखने वाली मख़्लूक से कहीं ज़ियादा है। जिन्हें ख़ुर्द बनि (**Microscope**) से देखा जा सकता है। उनमें बीमारियों के जरासी (कीटाणू) पानी में पाये जाने वाले जरसूमे (कीटाणू) गन्दी जगहो में पाए जाने वाले जरासीम, खून में पाए जाने वाले जसीमें (**Corpuscles**) वीर्य के कीटाणु हैं। है कोई जो इन की गिन्ती कर सके। इन सबको ख़ुदा (ईश्वर) ने पैदा किया है, जिस मस्लहत से पैदा किया हो, लेकिन हम इन्सान हिन्दू हो या मुस्लिम, सिख हों या ईसाई, बौधी हों या जैनी इन कीटाणुओं में से अक्सर को मारना सवाब (पुण्य) समझते हैं। दिखने वाले कीड़े, मकोड़े, मक्खी, मच्छर, जूँ, चीलर की भी गिन्ती इन्सानी अक्ल के हिसाब के परे है मुख़्तलिफ़ दवाओं से, मुख़्तलिक तदबीरों से इनकी जान लेने में भी हम सभी इन्सानों को न कोई संकोच होता है न नागवारी बल्कि खुशी होती है।

हमारा किसान खेत की जुताई करता है चाहे हल बैल से जोतता हो या ट्रेक्टर से क्या कोई अन्दाज़ा लगा सकता है कि उस वक़्त कितने कीड़े मकोड़ों का क़त्ले आ़म होता है? जब फ़स्ल उगती है, तो उगने से लेकर फलने पकने तक आखों से दिखने वाले अरबों खरबों जानदार कीटाणुओं को क्या हम कीड़े मार दवाओं से मारकर अपना आहार नहीं बचाते हैं? उन कीटाणुओं को पैदा करने वाला भगवान ही तो है और उन कीटाणुओं की ग़िज़ा क्या हमारी फ़स्ल से अलग कोई और चीज़ रखी गई है? ग़रज़ कि वह अनाज जिस पर इन्सानी ज़िन्दगी का इन्हिसार (निर्भरता) है, वह खरबो जानों को मार कर हासिल होता है। कोई इन्सान चाहे जिस धर्म का हो अपने घर में बिच्छू देखता है तो बे खटके उकी जान ले लेता है, उसको पत्थर से कुचल देता है। यही हाल सांप का है। कुछ लोग सांप को नहीं मारते, अपने अन्ध विश्वास (वहम) या धार्मिक संकेत से उसे देवता मानते है। उसे पूजते हैं। बेशक उसकी बिल के मुंह पर दूध डालते हैं लेकिन कोई भी घर में निकले काले सांप को दूध नहीं दिखाता पूजने वाले भी किसी साहसी (जरी) डन्डे वाले को बुलाते हैं। मैं एक गांव में मेहमान था अ़स्र बअ़्द तन्हा टहलने निकला, एक हिन्दू घर के दरवाज़े से गुज़रा, वहां दस पन्दरह औरतें और मर्द जमा थे, एक जवान लड़की थर थर कांप रही थी उससे लोग पूछ रहे थे, छुवा तो नहीं? वह कह रही थी, नहीं, भगवान ने बचा लिया। मुझे देखते ही एक औरत ने कहा भय्या कीरा मार लेते हो? मैंने कहा कहाँ है? बताया गया ईंधन घर के झांखर के बोझ में। मैने कहा मारने के लिये कोई मजबूत बांस का डन्डा दो। मुझे एक डन्डा दिया गया जिस के एक सिरे पर सांप को छेद लेने वाला तीर की तरह का लोहा लगा था दीहात वाले उसको बीरू कहते हैं। मैं अन्दर गया एक बूढ़ी औरत ने साथ जाकर बताया :

इसी बोझ में है। हमारी बिटया तो बाल बाल बच गई। मैंने डन्डे से बोझ खोला काला सांप फन खोल कर खड़ा हो गया मैने फ़ौरन उसके चौड़े फन पर वार किया और तीर जैसे लोहे में फांस लिया और घसीट कर बाहर मजमे में ले आया, सांप के पुजारी बहुत ही खुश थे और मुझे दुआएं दे रहे थे मैंने सांप को तड़पाने के बजाए एक दूसरे डन्डे से उसका काम तमाम कर दिया।

इन तमाम जरासीम, कीड़े मकोड़े सांप बिच्छुओं को इन्सान इस लिये मारता है कि यह या तो इन्सान को तक्लीफ़ पहुंचाते है या इन्सान की जान ही ले लेते हैं। इसी तरह भेड़िया, गीदड़, शेर चीते वग़ैरह जब बस्ती में आकर इन्सानों पर हमला करने लगते हैं तो हर जतन से इन हिन्सक पशुओं (दरिन्दों) को मारने की कोशिश की जाती है उस वक़्त कोई इन्सान उन पर रहम नहीं जताता।

फिर क़ुदरत ने मख़्लूक इस तरह बनाई है कि कितने जानवरों की ग़िज़ा सिर्फ़ गोश्त है। शेर, चीते, भेड़िये जंगल में रहें या चिड़िया घर में गोश्त के बिना वह जीवित नहीं रह सकते, बाज़, उल्लू, चील, गिद्ध, इन सब की ग़िज़ा सिर्फ़ गोश्त है और बाज़ तो मुर्दार नहीं खाता शिकार कर के ताज़ा गोश्त खाता है। उल्लू चुहिया वग़ैरह का शिकार कर के खाता है। बिल्ली

दूध भी पी जाती है और रोटी भी खा लेती है लेकिन चूहों के शिकार के बिना उस का गुंज़र नहीं, सांप की पसन्दीदा (मन पसन्द) ग़िज़ा चूहे, चूहियां और मेढक हैं। मुर्गी, मुर्गे दाना भी खाते हैं और बअ़ज़ कीड़े मकौड़े भी मेढक कीड़े मकौड़ों का शिकार करता है, मछलियां पानी की काई वग़ैरह तो खाती ही हैं पानी में पाए जानेवाले कीड़े मकोड़े भी खाती है। फिर बड़ी मछलियां छोटी मछलियों को निगल जाती हैं। व्हेल मछली कितनी बड़ी होती है जिसका पेट समन्द्री जानवरों ही से भरता है।

क़ुदरत का अ़जीब निज़ाम है जितना ग़ौर करो, सोचो उतना ही अ़क्ल हैरानी में फंसती चली जाती है। तारीख़ के मुतालआ़ (अध्ययन) से पता चलता है कि यह इन्सान शुरूअ़ में दूसरे हैवानों (पशुओं) की तरह ही जीवन बिताता था यह नंगा रहता, (अगर्चि हम इस से सहमत नहीं हैं और अगले पैरा में इस को स्पष्ट (वाज़िह) करेंगे।) पहाड की खोहों, पेड़ों के फटानों में रहता, जंगलों के फल फलारी खाता, जानवरों का शिकार कर के उन का कच्चा गोश्त खा जाता, लेकिन वह अपनी तरक़्क़ी पिज़ीर अ़क्ल (प्रगतिशील बुद्धि) से आगे बढ़ता गया, मकान बना कर रहने लगा, जिन जंगली जानवरों को कारआमद (उपयोगी) समझा घेर कर पकड़ लिया, पाल लिया, उन का दूध काम में लाता, उन का गोश्त खाता, उनके बालों और खालों को अपने जिस्म पर पहनने लगा। फिर खेती करने लगा, कपास की रूई से सूत निकाल कर कपडे भी तैयार करने लगा और कपडे के लिबास पहनने लगा, लेकिन वह जानवरों को इन्सानों से अलग समझता रहा और उन का गोश्त खाना अपना हक़ समझता रहा।

हम तारीख़ की यह बात तो मानते हैं कि बहुत से इन्सान नंगे रहते होंगे और जानवरों जैसी ज़िन्दगी गुजारते रहे होंगे लेकिन सारे इन्सान ऐसे न रहे होंगे। यह बात दीने हक़ (सत्य धर्म) इस्लाम की मअलूमात के ख़िलाफ़ है। इस लिये कि जब पहले इन्सान आदम अलैहिस्सलाम ने जन्नत में शैतान के वरगलाने से शजरे ममनूअः (निषिद्ध वृक्ष) यअ़नी रोके गये पेड़ से कुछ खा लिया तो उन के जिस्म से जन्नती लिबास (वस्त्र) उतर गया तो वह शर्माए और जन्नती दरख़्तों के पत्तों से शर्मगाहें (लज्जा अंग) छुपाने लगे, फिर वह दुन्या में उतारे गये और काफ़ी दिनों तक अपनी भूल पर रोते और खुदा से क्षमा मांगते रहे, अल्लाह ने उन को क्षमा भी दी और उन का दर्जा भी बढ़ा दिया, हज़रत हव्वा से मिला दिया अब वह दुन्या में पहले इन्सान थे और अल्लाह के प्यारे नबी थे। उन के बेटे शीस (अ़०) भी नबी हुए, भला नबी का जीवन पशुओं जैसा कैसे हो सकता है? अस्ल में शैतान को रब की ओर से छूट मिली हुई है, उस ने क़सम खा रखी है कि वह आदम की औलाद को भटका कर बे राह करेगा तो जिन इन्सानों को शैतान ने भटका कर बेराह कर दिया उन्हीं की ज़िन्दगी जानवरों की तरह थी, तारीख़ वालों ने जिन साधनों (ज़रायिअ़) से तारीख़ लिखी उनसे उन की मअ़लूमात उन्हीं इन्सानों की हो पाई जिन को शैतान बहका कर जानवरों की सतह (स्तर) पर ले आया था, अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम और उन की औलाद की मअ़लूमात तारीख़ वाले न लगा सके। लेकिन इन्सानों के इब्तिदाई बअ़ज़ काम ऐसे हैं कि वह तरक़्क़ी पिज़ीर अ़क्ल (प्रगतिशील बुद्धि) के नहीं लगते बल्कि वहये इलाही (ईश संकेत) के लग रहे हैं। जैसे गोश्त खाने के लिए जानवरों का इन्तिख़ाब, दुध लेने के लिए जानवरों का इन्तिख़ाब, खेती करने के लिए जंगली घासों से कारआमद ग़ल्ले वाली घासों का इन्तिख़ाब रूई से सूत, सूत से कपड़ा बुनना इस तरह के सैकड़ां काम हैं जिन्हें उस इब्तिदाई ज़माने में ख़ुदा की रहनुमाई ही से हुए हैं और जिन को यह रहनुमाइयां हुईं वही नबी थे और नबी की ज़िन्दगी जानवरों की सतह की नहीं हो सकती।

क़ुदरत ने इन्सान को तरक़्क़ी पिज़ीर (उन्नति शील) अ़क्ल दी, उस के मन (दिल) में ऊंचा ज्ञान (इल्म) डाला बअ़ज़ को अपनी वह्य (ईश संकेत) के इनआ़म से नवाज़ा इस तरह से अशरफ़ुल मख़लूकात (सृष्टि में सब से ऊंचा) बनाया। यह इन्सान सदैव अपनी सुरक्षा के लिए दूसरे जीवों को अपनी अ़क्ल से या ईश संकेत से मारता रहा, अपनी रोज़ी की हिफ़ाज़त के लिए भी खेती को नुक़सान पहुचने वाले जीव जन्तुओं को मारता रहा। इन्सान खुद हल खींचने के बजाए, ख़ुद गाड़ी खींचने के बजाए, खुद भारी बोझ उठाने के बजाए जानवरों को मार पीट कर उन से यह सारे काम लेने का हक़ समझता रहा और आज भी समझ रहा है। ख़ुद ग़ल्ला खा कर उनको उस का भूसा खिलाता रहा, उन के बच्चों का हक़ दूध निकाल कर ख़ुद खाता पीता रहा। किसी इन्सान ने किसी जानवर को कभी अपने ऊपर सवार न कराया और यह हो भी नहीं सकता, मगर घोड़ो

गधों, भैसों, ऊंटों, हाथियों पर उन की मर्जी के बिना उन पर सवार होता, मार मार कर दौड़ाता और बोझ लादता रहा फिर बअ्ज जानवरों को काट कर या जब्ह कर के उन का गोश्त खाता रहा। यह सब इन्सान या तो अपनी ऊंची अक्ल से फ़ैसला कर के या वह्ये इलाही (ईश संकेत) से करता रहा।

इन्सान यही समझता रहा कि यह हैवान (पशु) इन्सान के दर्जे के नहीं हैं। जहां ज़रूरत हुई पाख़ाना पेशाब कर दिया अपने पाखाना पेशाब पर बैठ गया, भूख लगी तो जो खाने की चीज़ सामने आई खा लिया। हरा भरा गेहूं का खेत जिसे किसान ने बड़ी मेहनत और बड़े ख़र्चे से तैयार किया था बेरहमी से चरकर साफ कर दिया। जहां ख्वाहिश हुई जिन्सी तअ़ल्लुक़ क़ाइम कर लिय जो बैल जिस गाय से पैदा हुआ था उसी पर चढ़ गया लिहाज़ा उस ने इन हैवानों के साथ इन्सानों से अलग मुआमला किया, इन से काम लेना, इन से दूध लेना इन का गोश्त खाना दुरुस्त रखा, जितने आसमानी मज़ाहिब हैं सब ने इस के ज़ाब्ते (नियम) बनाए मगर गोश्त खाने को रोका नहीं बल्कि हुक्म दिया। सनातन धर्म में भी गोश्त खाने को रोका नही गया बल्कि यज्ञ में क़ुर्बानी करने और गोश्त खाने पर अ़मल होता रहा।

तारीख़ के अध्ययन से पता चलता है कि पहली बार जैन धर्म में जीव हत्या और गोश्त खोरी को रोका गया उस के बअ़्द बौध धर्म ने भी सिर्फ़ क़ुर्बानी को रोका। लेकिन ऐसा लगता है कि यह इन्सानी अक़्ल ने फ़ैसला किया, उस ने देखने, सुनने, चलने, फिरने, खाने, पीने, सिहत व बीमारी में मुब्तला होने वाले जानवरों को इन्सानों पर क़यास (अनुमान) कर के उन को ज़ब्ह़ करने और खाने को बेरहमी बताया और उसे रोका। यह ईश्वरीय संकेत तो हो नहीं सकता था इस लिए कि अगर ईश्वर को यह मंजूर होता तो वह ऐसे जीव जन्तुओं को पैदा न करता जिन की ज़िन्दगी का इन्हिसार सिर्फ़ गोश्त पर है।

रहा अ़क्ल का फ़ैसला तो बेचारे इन्सान की नाकिस (अपूर्ण) (अक्ल) ने ग़लत फैसला किया। उसको पहले बैलों से हल खिंचवाने, गाड़ी खिंचवाने, घोड़ों पर सवारी करने से रोकना चाहिए उन को हर खेत में चरने का हक़ देना चाहिए। खेतों में कीड़ा मार दवा डालने से रोकना चाहिए, अ़क्ल हैरान है कि हम इस अ़क्ल से किस तरह फैसला करवाएं जो कहीं क़त्ले आ़म करवाती है और उसे पुण्य (सवाब) बताती है कहीं ज़रूरत पर गोश्त ख़ोरी को ज़ुल्म ठहराती हैं, बहर हाल इसे तो अक़्ल वाले हल करें, हम सत्य धर्म इस्लाम के अनुयाई हैं वह हमें जिन जानवरों को ज़ब्ह़ कर के खाने का हुक्म देगा उन को ज़ब्ह़ कर के खाएंगे, उन से दूध लेंगे, उन से काम लेने में ज़ियादती न करेंगे, उन को खिलाने पिलाने में कोताही न करेंगे। हम को इस पर पूरा इतमीनान है हम नाक़िस अ़क्ल के पीछे न भागेंगे। अ़क्ल अल्लाह की अ़ज़ीम निअ़मत है। इस से ख़ूब काम लेंगे, सांइस, पढ़कर मुफ़ीद इजादात में हिस्सा लेंगे लेकिन जहां यह वह्येइलाही से टकराएगी वहां इसे नाक़िस समझ कर इस को खामोश रखेंगे।

●●●

नाम हम रौशन करें इस्लाम का

मौ०मु० सानी हसनी

दीने हक़ के हों अ़लम बरदार हम
बाद–ए–इर्फ़ां से हो सरशार हम
हम मुसलमां हैं मुसलमां ही रहें
हों मुतीअ़े अहमदे मुख़्तार हम
अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाह
नाम लें अल्लाह का हर बार हम
हरनफ़स हम शिर्क से नफ़रत करें
कुफ़्र से हर दम रहें बेज़ार हम
चप्पे चप्पे पर खिलाएं दमबदम
इल्मे दीं का गुलशने बेख़ार हम
हम करें क़ाइम मकातिब जा बजा
इल्म का घर घर करें परचार हम
आ़म कर के दीन की तअ़लीम को
रहमते हक़ के बने हक़दार हम
नाम हम रौशन करें इस्लाम का
बार–बार इस का करें इज़हार हम
आज के दौरे तज़बज़ुब में बनें
सानियस्नैनि इज हुमा फीलगार हम
जाग उठा फिर देव इस्तिब्दाद का
लें उमर की तेगे जौहर दार हम
हों गिना में मिस्ले उस्माने गनी
हों मसीले हैदरे कर्रार हम
फक्र में इल्मो वरअ़ में हिल्म में
हों जुनैदो शिब्लियो अ़त्तार हम
हम बुझाएं अब शरारे बूलहब
तोड़ दें बू जेहल का पिन्दार हम
बन के हम सर ता बपा अ़ज़्मो यक़ीं
सर करें हर मंज़िले दुशवार हम
इश्के इब्राहीम अपना कर करें
आतिशे नम्रूद को गुलज़ार हम
हम बनें इस्लाम के सीना सिपर
और हों अल्लाह की तलवार हम
मुस्कराते खोलते तूफ़ां से हम
दीन की कश्ती करें फिर पार हम
मिट नहीं सकते कि हम ख़ुददार हैं
ज़ुल्म से हैं बर सरे पैकार हैं
छोड़ दें हक़ अहले बातिल के लिये
तौबा करते हैं हज़ारों बार हम
ज़िन्दगी सद बार क़ुर्बां दीन पर
क्या करेंगे ज़िन्दगी से प्यार हम
दबने वाले अहले बातिल से नहीं
दीने हक़ के हैं निशां बरदार हम
गुलशने इस्लाम के सय्याद सुन
अब न होंगे तेरे हाथों ख्वार हम
कूच–ए–दारो रसन हक़ के लिए
कर चुके आबाद सदहा बार हम
दार पर चढ़ने का वक़्त आता है जब
मुस्कुरा कर चूमते हैं दार हम
ले के कोई क्या करेगा इम्तिहां
दे चुके हैं इम्तिहां सौ बार हम

सोंठ (जंजबील)

दीहाती चिकित्सक

सोंठ खाने को पचाती है, पेट की हवा को निकालती है और भूख खूब लगाती है, जिहन, हाफिजा और बाह (मरदाना ताकत) को बढ़ाती है। गठिया और कमर के दर्द को दूर करती है।

इस्तिअमाल का तरीका

सोंठ पचास ग्राम, काला नमक दस ग्राम को बारीक पीस कर लीमू के रस में भिगोएं, फिर सुखाएं, ऐसा तीन बार कर के शीशी में रख लें और खाना खाने के पश्चात एक ग्राम (एक चुटकी) खा लिया करें, खाना पच जाएगा, पेट का दर्द, अफारा यह सब दूर हो जाएंगे, भूख कम लगती होगी तो खुल जाएगी।

बाह की कमजोरी, भूल की जियादती में पचास ग्राम सोंठ बारीक पीस कर बीस ग्राम असली शहद में मिला कर सुब्ह व शाम तीन ग्राम खाना चाहिए। यह दवा सर्दी से होने वाले दर्दों में भी फाइदा देती है।

सोंठ बारीक पीस कर तिलों के तेल में मिला कर मालिश करने से गठिया तथा सर्दी के दर्दों में फाइदा पहुंचता है।

बीस ग्राम सोंठ, सौग्राम गुड़ में मिला कर सुब्ह शाम छे छे ग्राम खाने से सर्दी की तकलीफों से बचाव रहता है।

सेंदुर :

सेंदुर मशहूर चीज है, लाल पीलाहट लिये एक सुफूफ होता है जो सीसे से बनाया जाता है।

हिन्दू भाइयों की औरतें इस को मांग में भरती हैं।

सेंदूर सड़न की बदबू दूर करने वाली अच्छी दवा है। जख्म के कीड़े भी इस से मर जाते हैं, यह गन्दे से गन्दे जख्मों को गन्दगी से साफ करके बहुत जल्द अच्छा कर देता है।

मरहम बनाने का तरीका:

तिलों का तेल तीन सौ ग्राम कड़ाही में डाल कर पकाएं, जब वह पकने लगे तो सौ ग्राम सेंदुर (असली) डाल कर लोहे की सीख से या लोहे के करछे से घोटें और बराबर घोटते रहें, जब तेल काला होने लगे और किवाम सा गाढ़ा हो जाए इस तरह कि एक बून्द जमीन पर टपकाने से जम जाए तो आग पर से उतार कर ठण्डा कर लें। इस को काला मरहम भी कहते हैं। अगर इस में चार ग्राम नीला थोथा बारीक पीस कर मिला दें तो फाइदा बढ़ जाएगा। इस मरहम को साफ कपड़े पर लगा कर जख्म पर रखें और हर रोज बदलते रहें जख्म जल्द भर जाएगा।

सुहागा

सुहागा बड़े काम की चीज है। यह हाजिम (पाचक) है। पेट की हवाओं को और बलगम को निकालता है इसी लिये पेट की कई बीमारियों के काम में लाया जाता है। खांसी और दमा में दिया जाता है। अगर बच्चा दूध डालता हो, और उस से खट्टी बू आती हो, पेट फूल जाता हो। इन हालात में सुहागे को तवे पर भून कर खील बना लें और बारीक पीस कर शीशी में रख लें और जरूरत के वक्त बच्चे को एक रत्ती (जरा सा) दिन में दो तीन बार चटाएं।

अगर बच्चे का कान बहता हो तो पहले उस को साफ रूई से साफ करें फिर रूई की बत्ती बना कर असली शहद में लथेड़ें और उस पर सुहागा छिड़ कर कान में रखें चन्द रोज ऐसा करने से कान का बहना बन्द हो जाएगा। अगर कान में कीड़े पड़ गये हों तो सिरके में थोड़ा सा सुहागा डाल कर कान में टपकाने से कीड़े मर जाते हैं। सुहागा भुना हुआ दस ग्राम, मुलेठी २० ग्राम, शहद अस्ली १०० ग्राम मिला कर चाटने से बलगमी खांसी और दमे को फाइदा पहुंचता है।

(पृष्ठ ३७ का शेष)

की भीड़ नहीं हुई कारण वहां कई श्रद्धा स्थल (अकीदत की जगह) नहीं थी।

समुद्र में हैरत अंगेज जीव जन्तु पाये जाते है। जमीन के नीचे मीठे पानी का समुद्र है ऊपर खारे पानी का लेकिन दोनों अपनी सीमा में रहते हैं। बाज समुद्रों में एक गदहा मिलता है जो डूबते इंसानों को अपनी पीठ पर बैठा कर किनारे पहुंचाता है। यह सब चीजें अचम्भे में डालती है परन्तु इस को किसी बुज़ुर्ग की करामत बनाकर पेश करना स- नहीं है। करामतें बरहक (सच) हैं मगर हर अचम्भे की घटना को करामत समझ लेना या करामातों के प्रकट होने के इन्तजार में बेअमली को जिन्दगी बना लेना तबाही का कारण होता है।

क़ुर्बानी की कहानी (मंज़ूम)

अबू मर्गूब

गर कहो ईमान लाये
और हम इस्लाम लाये
पूज्य बस अल्लाह है
मअबूद इक अल्लाह है
पैदा करता है वही
ज़िन्दा रखता है वही
रोज़ी देता है वही
रोज़ी लेता है वही
दुख उसी के हाथ में
सुख उसी के हाथ में
रोग देता है वही
स्वस्थ रखता है वही
देता वही सन्तान है
लेता वही सन्तान है
मालिके रोज़े जज़ा
जन्नत व दोज़ख़ का खुदा
हां मुहम्मद हैं रसूल
रब्बि सल्लिम बर रसूल
ईमां हमारा आप पर
आप की हर बात पर
आख़िर नबी तो आप हैं
नबियों के ख़ातिम आप हैं
ईमां मलाइक पर भी है
ईमां किताबों पर भी है
इमां रसूलों पर भी है
ईमां क़ियामत पर भी है
ईमान है तक़दीर पर
अल्लाह की तहरीर पर
अच्छी कहो तुम या बुरी
अल्लाह ने है सब लिखी
बअ़द इन दअवों के क्या
छोड़ देगा यूं ख़ुदा

जांचे गा क्या तुम को नहीं
परखे गा क्या तुम को नहीं
पहलों को जांचा गया
अगलों को परखा गया
आदम से ले अहमद तलक
बहुतों की जांचों की झलक
मौजूद है क़ुर्आन में
अल्लाह के फ़ुर्क़ान में
यां ज़िक्र है बस एक का
अल्ला के बन्दे नेक का
हज़रत के हां दादाओं में
नबियों के बाबाओं में
इक ख़लीलुल्लाह थे
वह जो इब्राहीम थे
आज़र के घर पैदा हुए
और वहीं बाढ़े पले
वां बादशाह नम्रूद था
जो वक़्त का मरदूद था
आज़र का वां स्थान था
नम्रूद का शैतान था
नम्रूद का दअ़वा था ये
जग का ख़ुदा वो ही तो है
पर बुत की पूजा आ़म थी
उस की न रोक थाम थी
गढ़ता था, आज़र भी बुत
बेचता आज़र था बुत
और सनम ख़ाने में जा
पूजता आज़र था बुत
हुक्म से अल्लाह के
इब्राहीम ने रोका उसे
असनाम को पोजो नहीं
अब्बा मेरे मानो मेरी

वो तो बरहम हो गया
इब्राहीम को धमका दिया
घर से बाहर कर दिया
इब्राहीम ने सब सह लिया
बाप तो दुशमन बना
बादशह दुशमन हुआ
उस ने बुलाकर ये कहा
मेरे सिवा कोई है क्या
जिस को ख़ुदा कहते हो तुम
मुझ से यूं फिरते हो तुम
और दो क़ैदी बुला
एक को बध कर दिया
जा, दूसरे से कह दिया
वो और यूं कहने लगा
मैं भी जिलाता मारता
फिर क्यों नहीं हूं मैं ख़ुदा
हुक्मे ख़ुदा पाकरा कहा
इब्राहीम ने यूं बरमला
वो रब जो सब का दाता है
पूरब से सूरज लाता है
है तुझ में क़ुदरत कुछ ज़रा
पच्छिम से सूरज ला दिखा
मबहूत था इस मांग पर
हैरान था इस मांग पर
लेकिन न बदला बादशह
अहमक़ था कैसा बादशह
इब्राहीम वां से चल दिये
जाकर कहा ये क़ौम से
कुछ बुत तो कर सकते नहीं
अपने से हिल सकते नहीं
मक्खी उड़ा सकते नहीं
मच्छर भगा सकते नहीं

कोई हमला गर करे
ख़ुद को बचा सकते नहीं
किसने तोड़ा है उन्हें
यह भी बता सकते नहीं
तुम बुत की पूजा मत करो
बस रब की पूजा तुम करो
बात ये समझे सभी
पर अक्ल औन्धी ही रही
कौम अब दुशमन हुई
लकड़ी इकट्ठा उसने की
आग उस में दी लगा
जब शुअ़ला ख़ुब उठने लगा
इब्राहीम को पकड़ा गया
उस आग में फेंका गया
हुक्मे ख़ुदा से आग वो
इब्राहीम पर ठण्डी हुई
ठण्डी हवा देने लगी
पंखो सी वो झलने लगी
उन सब ने देखा आंख से
इब्राहीम तो सालिम रहे
इब्राहीम वां से चल दिये
और शाम में वो जा बसे
सारा भी उन के साथ थीं
तुहफ़े में हाजर थी मिलीं
हज़रत ख़लीलुल्लाह की
अस्सी से ऊपर उम्र थी
इस उम्र में बेटा मिला
और हुक्मे रब ये साथ था
मां बेटे को कर दे जुदा
गर चाहता है तू भला
मक्के में जाकर छोड़ दे
रब की रज़ा के वास्ते
तब हाजरा सी प्यारी को
और औरतों में न्यारी को
इस्माईल सा वो लाडला
फज्ले ख़ुदा से था मिला

मक्के में वां छोड़ा जहां
है अब बना कअ़बा जहां
उस वक़्त वां कुछ भी न था
खाना न था पानी न था
सब्ज़ा न था बस्ती न थी
आसां न थी वां ज़िन्दगी
वां पर कलेजा थाम कर
छोड़ा ख़ुदा के नाम पर
जब प्यास बच्चे को लगी
बेचैन मां होने लगी
मरवा सफ़ा के बीच में
पानी मिले इस खोज में
चक्कर लगाये सात थे
पर खाली उन के हाथ थे
मायूस हो आईं वहां
इस्माईल थे लेटे जहां
चश्मा दिखा जारी वहां
ज़म ज़म जिसे कहता जहां
आई मदद अल्लाह की
मां पूत की थी जिन्दगी
इस्माईल जब कुछ बढ़ गये
इब्राहीम इक दिन आ गये
मां पूत की तो ईद थी
और बाप की बक़रअ़ीद थी
हुक्मे ख़ुदा कुछ और है
इक इम्तिहां अब और है
लेकर छुरी रस्सी चले
लख़्ते जिगर को साथ ले
पहुंचे मिना में दोनों जब
इब्राहीम बोले हुक्मे रब
देखा है मैं ने ख़्वाब में
क़ुर्बां ख़ुदा की राह में
बेटे तुझे मैं कर रहा
क्या मैं करूं अब तू बता
बेटा ज़बीहुल्लाह था
बोला कि है हुक्मे ख़ुदा

बे खटके ऐ अब्बा मेरे
मुझ पर छुरी अब फेरिये
जब दोनों राज़ी हो गये
तब बेटा बोला बाप से
यह दोनों मेरे हाथ हैं
और दोनों मेरे पांव हैं
चारों बन्धे मज़बूत हों
ता ज़ब्ह में हारिज न हों
आंखों पे पट्टी बांध लें
ता ज़ब्ह में रूक ना सकें
यह सब किया फिर बाप ने
फेरी छुरी फिर बाप ने
जिन्नों मलक खामोश थे
और सब के गुम अब होश थे
खोने लगे जब होश सब
रहमत को आया जोश तब
आई सदा ये ग़ैब से
रब्बे जहां बे ऐब से
सच कर दिखाया ख्वाब को
नाजिह बनाया आप को
पट्टी जो खोली आंख से
मुज़बूह देखा सामने
जन्नत का दुंबा था पड़ा
इस्माईल लेटे थे ज़हां
बेटा खड़ा वां पास था
क्या इम्तिहाने बाप था
उस इम्तिहां की याद में
उम्मत नबी की ख़ास में
उम्र में हज फ़र्ज़ है
पर इस्तिताअ़त शर्त है
और जो हैं मालदार
उन पे है कुर्बानी का बार
रहमत हबीबुल्लाह पर
रहमत खलीलुल्लाह पर
दोनों नबी की आल पर
या रब मेरे हर आन कर

प्रदूषण को करामत समझ बैठे मुम्बई के लोग

शमीम तारिक

अन्ध विश्वास जब अकीदा (श्रद्धा) का रूप धारण कर लेता है तो अकीदा (आस्था) भी तबाह हो जाता है। और स्वास्थ और शान्ति भी। १६ अगस्त २००६ की शाम को मुम्बई में यही हुआ। किसी तरह यह खबर फैल गई कि मखदूम महाइमी की दरगाह के पीछे समुद्र का पानी मीठा हो गया है फिर क्या था माहिम जैसे भरे पूरे इलाके में लोगों की भीड़ लग गई फकीरों और दूसरे लोगों ने समुद्र का पानी बोतल में भर भर कर देने वालों ने एक दिन में पांच पांच हजार रूपये कमाए। चूंकि इस खबर को फैलाने में टीवी चैनलों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया, इसलिए दूसरे दिन से दूसरे शहरों के लोग भी आने लगे और भीड़ बढ़ती गई १२ अगस्त को महसूस किया गया कि पानी का खारा पन लौट रहा है इसके बावजूद भी लोग आते रहे और तबर्रुक (प्रसाद) की तरह पानी बोतलों में भरा जाता रहा तबर्रुक के नाम पर प्रदूषित पानी गटा गट पिया जाता रहा। पलभर में तहय्युर (अचम्भे) ने उम्र भर के इल्म और तजुरबे को मटियामेट कर देने वालों में यूं तो हर धर्म व समुदाय के लोग शामिल थे परन्तु मुसलमानों ने कुछ जियादा ही जोशो खरोश दिखाया। इसकी एक खास वजह थी। उन को खबर दी गई थी कि पानी समुद्र के केवल उस भाग का मीठा हुआ जो मखदूम महाइमी की दरगाह के पीछे उस स्थान तक फैला हुआ है जहां हजरत खिज्र मखदूम महाइमी को सुलूक की तालीम (दीक्षा) दिया करते थे। यह खबर सुन कर किसी ने यह नहीं सोचा कि मखदूम महाइमी की जीवन कथा मौजूद है और उसमें उस समय भी पानी के मीठा होने की किसी घटना का जिक्र नहीं है। जब मखदूम महाइमी सुलूक की मंजिलें तय कर रहे थे और उन की तालीम तर्बियत के लिए हजरत खिज्र खुद तशरीफ लाया करते थे।

मखदूम महाइमी की बुजुर्गी भी सही है और करामत भी लेकिन उनकी असल करामत "मीठापानी" नहीं मीठी वाणी है। वह मुफस्सिर (कुर्आन की व्याख्या करने वाले) व फकीह (शरअी कानूनदां) और शोधकरता और फलसफी थे। कुर्आन की व्याख्या करने की हैसियत से उन का यह कारनामा बहुत अहम है कि उन्होंने तमाम कुर्आनी विषयों के आपस में सम्बद्ध (मरबूत) होंने का पता लगाया है। इसी प्रकार 'हुरूफे मुकत्तआत" का अर्थ बताते हुए कुर्आनी विषयों से उन का सम्बन्ध बयान किया। विषय के अनुसार बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम की अलग व्याख्या की है, अनूठे विषयों पर कई पुस्तकें लिखीं और मुर्दादिलों को नई जिन्दगी प्रदान की। श्रद्धा (खुशअकीदगी) के नाम पर अन्ध विश्वास ने पहले ही उन पर जुल्म ढा रखे थे जिससे उन की इल्मी, रूहानी शख्सियत पर गैर हकीकी शख्सियत ने सिक्का जमा लिया था, १८ अगस्त को एक बार फिर साबित हो गया कि लोग बुजुर्गों की असली शख्शियत में नहीं कहानियों की हैसियत में दिलचस्पी रखते हैं। उन का अन्ध विश्वास हवा, पानी और रोशनी से भी तमाम सच्चाइयों को ताक पर रख कर नदी, नाले बारिश, सिवरेज और कलकारखानों से जमा होने वाले गन्दे पानी को समुद्री पानी में शामिल होने और उस की वजह से समुद्री पानी के खारेपन के समाप्त या कम होने को मखदूम महाइमी की करामत समझ लिया। यह भी भूल गये कि माहम खाड़ी का वह हिस्सा जहां का पानी मीठा होने की खबर है वह आधा बन्धा हुआ (**Semi Closed**) पानी है। दूसरे शब्दों में इस में पूरी तरह बहते हुए पानी की खुसूसियत नहीं है। जिस रोज पानी मीठा होने की घटना हुई उसी रोज भाटा ने लहरों को कम करके समुद्री पानी को पीछे ढकेल दिया था। इस के अतरिक्त यह भी याद रखना चाहिए कि इस खाड़ी में रोजाना एक हजार मिलयन लीटर गन्दा पानी शामिल होता है। उसी बीच मुम्बई में वर्षा से पूरा शहर जल थल हो गया था और वर्षा का पानी भी खाड़ी में एक बड़ी मात्रा में बह कर आया था।

माहम में जो हुआ वह कोई नई बात नहीं थी। इस प्रकार की घटनाएं समुद्र के उन तटों पर होती रहती हैं जो शहरों और बस्तियों के निकट हैं। जिस दिन माहम में यह घटना हुई उसके दूसरे दिन गुजरात के बलसाज के तट पर भी ऐसी ही घटना हुई लेकिन वह गटागट पानी पीने वालों

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

शैक्षिक पिछड़ापन दूर करने के कुछ एक सुझाव

सैयद हामिद

शिक्षा के फैलाव की कोई सीमा नहीं। हिन्दुस्तानी मुसलमानों का सामान्यतः शिक्षा से और विशेषकर शैक्षिक गुणवत्ता से वंचित रहना अब सर्वमान्य है। शैक्षिक पिछड़ापन दूर करने के लिए हम समय समय पर सुझाव रखते चले आये हैं। मगर इस उलझी हुई समस्या को अभी तक सुलझाया नहीं जा सका। इस के कारण कई हैं एक तो सोंच की दिशा सच और व्यवहारिक सम्भावनाओं से नाम मात्र था, दूसरे यह विचार की शिक्षा की सारी व्यवस्था और इसकी सारी जिम्मेदारी हुकूमकत पर है। हमारा काम ज्यादा से ज्यादा फीस जमा करना और किताबें कापियां खरीद देना है। अलगर्ज कारण बहुत से हैं। इनके विस्तार में जायेंगे तो समय बर्बाद होगा।

आज तो हम पांच बातें अपने पाठकों के सामने रखेंगे। जिन पर हम अमल कर सकते है, हमे अमल करना चाहिए, और जिन पर अमल करने का नतीजा बहुत जल्द सामने आ सकता है।

(१) पहला उपाय, उन लोगों को जो अन्य पिछड़े वर्ग या ओ०बी०सी० से सम्बन्धित हैं, कोशिश कर के और सुव्यवस्थित ढंग से, अपना ओ०बी०सी० की हैसियत से इन्द्राज कराना चाहिए। बाज राज्यो मे ओबीसी सर्टीफिकेट लेने में बड़ी रूकावटें अथवा बेएतनाइया (उदासीनता) खडी कर दी गई हैं जिन के कारण वह नौकरियां जिन पर हमारे पिछड़े वर्ग का हक है, हाथो से निकल जाती हैं। आप को मालूम होगा कि अभी कुछ दिन हुए लोक सभा ने सर्वसम्मति से भारतीय संविधान में संशोधन कर के उच्च शिक्षा में ओबीसी के लिए २७ प्रतिशत आरक्षण देने का फैसला किया है। इस के साथ यह निवेदन कर दिया जाय की वाइस चांसलरों के उस ग्रुप की अध्यक्षता, जो श्री मवेली की निगरां कमेटी ने यूनीवर्सिर्टियों के सिलसिले में कायम किया है, हुकूमत ने इन पंक्तियों के लेखक को सौंपी थी। इस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट निगरां कमेटी के सुपुर्द कर दी है। उन व्यक्तियों पर जिन्हें मुसलमानों की तालीम से विशेषकर दिलचस्पी है यह वाजिब होगा कि लोक सभा के इस फैसले और यूनीवर्सिटियों में इस की अमल आवरी (क्रियान्वयन) से ओबीसी हल्कः को जल्द से जल्द बाखबर (सचेत) कर दें और जिन रियासतों या जिलों में ओबीसी मुसलमानों को सर्टिफिकेट देने मे टाल मटोल किया जा रहा है वहा मुनज्जम तौर पर सम्पर्क और प्रोटेस्ट किया जाय। ओबीसी नेतृत्व को इस समय अपना सारा ध्यान अपने पर केन्द्रित करना चाहिए । याद रखिये कि यूनिवर्सिटी में अतिरिक्त नियुक्तियां और दाखिले तीन साल के अन्दर पूरे कर लिये जायेंगे। मुसलमान ओबीसी को इन यूनिवर्सिटी के बारे में मालूमात हासिल करना और उसे उस का हक रखने वालों तक पहुचाना ओबीसी के नेतृत्व का फर्ज है। कहीं ऐसा न हो कि वक्त और मौका जरा सी गफलत या अनुपात की भावना से तनिक उपेक्षा के कारण हाथों से निकल जाय। जिन यूनिवर्सिटयों में ओबीसी कोटा पहली किस्त में लागू हो रहा है वह निम्नलिखित है –

१. बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी
२. दिल्ली यूनिवर्सिटी
३. हैदराबाद यूनिवर्सिटी
४. जामिआ मिल्लिया इस्लामिया
५. जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी
६. नार्थ इस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी
७. पान्डेचेरी यूनिवर्सिटी
८. विश्व भारती
९. आसाम यूनिवर्सिटी
१०. तेजपुर यूनिवर्सिटी
११ नागालैण्ड यूनिवर्सिटी
१२. मीजोरम यूनिवर्सिटी
१३. बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर यूनिवर्सिटी
१४. मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी
१५. एम.जी. अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी
१६. इलाहाबाद यूनीवर्सिटी
१७. मणीपुर यूनिवर्सिटी

दूसरा उपाय जो पहले से कम महत्वपूर्ण नहीं है, मुसलमान विद्यार्थियो का अंग्रेजी भाषा में महारत हासिल करना है। वह अंग्रेजी टूटी फूटी लिख तो लेते हैं लेकिन जब बोलने की बारी आती है तो उन्हें सिफर मिलता है। हमने अंग्रेजी की गफलत बरत कर पिछले डेढ सौ साल मे भारी तालीमी

नुकसान उठाया है, और अगर यह गफलत अब जारी रही तो हम रोजगार के मैदान में खसारा ही खसारा में रहेंगे। आज कल हर तरफ इस कार्य–प्रणाली की चर्चा है जिसे हम 'आउट सोर्सिंग' कहते हैं, इस का शाब्दिक अनुवाद हुआ 'अपना काम बाहर वालों से कराना।' पश्चिमी देशों ने महसूस किया कि हिन्दुस्तान पढी लिखी मानव–ताकत से माला माल है। इन्फारमेशन टेक्नालाजी के इस दौर में उन के लिए यह मुमकिन हो गया कि हिन्दुस्तान या किसी दूसरे पूर्वी देश में जहां मजदूरियां पश्चिम के मुकाबले में बहुत कम हैं अपना काम दल के हिसाब से, विश्लेषण इत्यादि भेजते रहे। और हमारे शहरियों से वह काम कम उजरत में करा लें और २४ घंटे के अन्दर वांछित नतीजा हासिल कर लें। तखमीना लगाया गया है कि अगले दस वर्षों में ३५ लाख काम पच्छिम से पूर्वी देशों में आउट सोर्सिंग के बतौर भेजे जाएंगे। जहन हिन्दी की चमक और हिन्दुस्तान में शिक्षित बेरोजगारी और मजदूरी की दरों का आकर्षण, इस बात की तरफ इशारा करती हैं कि इन अरबों कामों या अवसर में से हिन्दुस्तान को एक बड़ा हिस्सा मिलेगा। मुसलमानों को जो शिक्षित बेरोजगारी में निशाने इम्तियाज सरकारी नौकरियों में तो उन्हें अपना हिस्सा मिलने से रहा। वर्णित सम्भावनाओं से फायदा उठाने का सब से महत्वपूर्ण जरिया यह है कि अंग्रेजी बोलने में महारत हासिल की जाय और तहरीरी अंग्रेजी में इमला और व्याकरण की गलतियों से दूर रहा जाय। इसके लिए मेआरी (स्टैण्डर्ड) क्लास खोलने पड़ेंगे। यह काम देशव्यापी स्तर पर होना चाहिए।

तीसरा कदम बड़े शहरों में कई जगह छोटे शहरों में एक जगह किसी स्कूल में इस्लाही या रेमिडयल क्लासेज खोलना है। यह बात टीचर की कुर्सी और मेंबर व मेहराब से बार बार दोहराने लायक है कि हमारे घरों में हमारे बच्चे मुकाबला की दौड में पीछे रह जाते हैं, घसिटते हुए चलते हैं। क्या यह समाज का फर्ज नहीं है कि जो कुछ हमारे घर हमारे बच्चों को नहीं दे सकते हैं वह हमारा समाज उन्हें दे ताकि वह कमर कस कर पूरे विश्वास के साथ जीवन के कर्म क्षेत्र में कदम रख सकें। इन पंक्तियों के लेखक को अन्देशा यह है कि हिन्दुस्तान के सत्ताधारी मुसलमानों की तालीमी और रोजगारी हालत में बेहतरी लाने के लिए रिजर्वेशन जैसा प्रभावी कदम उठाने में बड़ी आना कानी करेंगे। (अफसोस इस बात का है कि दूरगामी अन्देशा और बे बुनियाद खौफ के तहत मुसलमानों ने रिजर्वेशन के लिए मुताल्बा करना ही छोड़ दिया। इकका दुक्का आवाजें मुल्क के गोशों से कमी कमी उठ गयीं तो उनका असर जाहिर है।) लक्षण अब यह हैं कि हम न सरकार से अपने हुकूक मागेंगे, न उसे पाने के लिए खुद सरोसामान करेंगे। अगर कुछ करेंगे तो हुकूमत या अपनी तकदीर की शिकायत।

चौथा कदम पढे लिखे व्यक्तियों को उठाना है। इसे पड़ोसी के प्रति कर्तव्य का नाम दिया गया है। हमारे यहां अनपढ़ या अर्द्ध साक्षर व्यक्तियों की कसरत है। वह लोग बहुत कम हैं जिन्हें परवरदिगार ने बाखबरी की दौलत दी है। उन से भी कम तादाद उन लोगों की है जिन के दिल में इन्सानियत का दर्द है और जो मुसलमानों की या अपने बच्चों को अच्छी तालीम दिला देते हैं। लेकिन इस प्रकार हम अपने कर्तव्य से छुट्टी नहीं पाते। कोई पिछड़ी कौम हुकूमत की इस्कीमों, उस के प्रोग्रामों और उस के उदासीन अहलकारों के बल पर तरक्की नही कर सकती। अतएव इस कौम में जो लोग सूझ बूझ रखते हैं, जो अपनी आखें और कान खुले रखते हैं, जो चिन्तनशील हैं उन का फर्ज है कि अपने पड़ोसी को आगाही देने की जिम्मेदारी खुद लें। अपने हमसायों को उनके बच्चों के फाइदे के लिये तालीम रोजगार और जमाने की रफतार की बाबत सारी जरूरी सूचनायें उपलब्ध करायें, बतायें और उन के बच्चों के लिए कुछ समय निकाल कर उनका मार्गदशन करें और उन्हें तालीमी मदद दें। अगर ऐसा नहीं करते तो कौम के पिछड़ेपन की शिकायत भी न करे।

पांचवा कदम सीधे तालीम से सम्बन्धित नहीं है लेकिन तालीम के इमकानात पर हर दिशा से प्रभाव डालता है। यह एक सामूहिक उपाय है जिस में स्वास्थ की चिन्ता समाज सुधार और साम्प्रदायिक सदभाव व मेल जोल शामिल हैं। स्वास्थ से गफलत बरती गई और समाज के बढ़े मेल जोज और एक सी आवाज (एकजुटता) के लिए जतन नहीं किये गये तो तालीमी पेशरफत (शैक्षिक प्रगति) स्वप्न मात्र हो कर रह जायेगी।

यह पांच ठोस कदम हमारे उठाने के हैं। हमने न उठाये तो कौन उठायेगा।

(राष्ट्रीय सहारा उर्दू दैनिक लखनऊ २० सितम्बर २००६ से साभार)

प्रस्तुति : एम० हसन अन्सारी

सच्चर कमेटी ने सेक्युलर हुकूमतों की भी पोल खोल दी

अन्दलीब अख्तर

नई दिल्ली । मुल्क में मुसलमानों की समाजी, तालीमी और इक्तेसादी सूरतेहाल का जायजा लेने के लिए वजीर–ए–आजम डाक्टर मनमोहन सिंह के जरिये मुकर्रर कर्दा आला इख्तयारीसच्चर कमेटी की रिपोर्ट भले ही हुकूमत की किसी लाइब्रेरी में दफना दी जाए लेकिन इस कमेटी ने अपने एक साल के वक्फे के दौरान जो इन्किशाफात अवाम के सामने रख दिये हैं उस को छुपा पाना किसी भी हुकूमत के लिए टेढ़ी खीर होगा। वाजेह हो कि सच्चर कमेटी अपनी रिपोर्ट इस माह के आखिर में वजीर–ए–आजम को सौंप देगी जाहिर है कि इस रिपोर्ट को सौंपे जाने के बाद यूपीए हुकूमत को यह कहने का मौका नहीं मिलेगा कि वह मुल्क के मुसलमानो के लिए क्या करे क्या न करे। बहरहाल रिपोर्ट का जो भी हश्र हो सच्चर कमेटी ने अपनी कड़ी मेहनत से और मुल्क भर के दोरे के बाद यह साबित कर दिया है कि पिछले पचास सालों में मुल्क में किसी भी हुकूमत ने मुसलमानों का भला नहीं चाहा बल्कि उनको जिन्दगी के हर शोबे में पीछे ढकेलने की भरपूर कोशिश की है। पूरे मुल्क में मुसलमानों को सिर्फ जान व माल का दिलासा देकर तरक्की के हर मौके से दूर रखा गया हद तो यह हो गई कि मुस्लिम दोस्ती और सेक्यलुरिज्म का दम भरने वाली पार्टियों ने भी मुसलमानों के साथ ऐसा धोका किया है कि जेहन बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर देता है सच्चर कमेटी के जराये से इस नुमाइंदे को जो तफसीलात मालूम हुई हैं। पहले भी रियासती सतह पर सच्चर कमेटी के जरिये किये गये सर्वे का खुलासा किया था कि अब रिपोर्ट मुकम्मल होने के बाद यह वाजेह हो गया कि मुल्क के सभी हिस्सों में मुसल्लमानों के साथ भेदभाव बरता जाता है वह इस भेदभाव की वजह से जिन्दगी के हर शोबे में दिन ब दिन पीछे होते जा रहे हैं। यहां तक कि उनकी हालत दलितों से भी बदतर हो गयी है। मुसलमानों को सरकरी नौकरियां देने में तमाम सियासी पार्टियों का एक जैसा रवैया रहा है और हैरत की बात यह है कि सेक्युलरिज्म का दम भरने वाली पार्टियों की हुकूमत में भी सरकारी मुलाजमतों में मुसलमानों के साथ भेद भाव बरता गया। सच्चर कमेटी की रिपोर्ट का सबसे अफसोसनाक पहलू यह है कि जिन रियासतों में सियासी पार्टियां मुसलमानों के बहबूद का डंका सबसे ज्यादा पीटती हैं वहां मुसलमानों की हालत और भी खराब है और इसकी सबसे अफसोसनाक मिसाल पच्छिम बंगाल है। जहां तकरीबन तीन दहाइयों से लेफ्ट पार्टियों की हुकूमत और रियासत में मुसलमानों की आबादी का तनासुब पच्चीस फीसद से भी ज्यादा है लेकिन सरकारी मुलाजमतों में उनकी तादाद सिर्फ ४.२ फीसद हैं जो मुल्क में मुसलमानों की सबसे कम तनासुब वाली रियासतों में से एक है, उत्तर प्रदेश और बिहार जहा मुसलमानों की एक अच्छी आबादी बस्ती है वहां भी सरकारी नौकरियों में मुसलमानों का तनासुब बहुत कम है यानी आबादी के लिहाज से नौकरी में मौजूदगी एक तिहाई से भी कम है। सच्चर कमेटी के जराये के मुताबिक उत्तर प्रदेश में मुसलमानों की आबादी का तनासुब तकरीबन उन्नीस फीसद है जबकि सरकारीा नौकरियो में उनकी तादाद सिर्फ पांच फीसद है। इसी तरह बिहार में मुसलमानों की आबादी सत्रह फीसद है लेकिन सरकारी नौकरी में उनकी तादाद सात फीसद है। पब्लिक कंपनियों में तो मुसलमानों की तादाद उंगलियों पर गिनी जा सकती है पच्छिम बंगाल में पब्लिक सेक्टर कंपनियों में आला ओहदों पर मुसलमानों की तादाद जीरो है। उत्तर प्रदेश में यह तादाद छः फीसद, बिहार में आठ फीसद, दिल्ली में दो फीसद महाराष्ट्र में दो फीसद, तमिलनाडु में तीन फीसद जबकि केरल में यह तादाद नौ फीसद है जो सबसे ज्यादा है। इस रिपोर्ट से एक दिलचस्प बात यह सामने आयी है कि फिरकावाराना लिहाज से निहायत हस्सास रियासत गुजरात में आबादी के तनासुब से मुसलमानों की तादाद सरकारी नौकरियो में और पब्लिक सेक्टर दोनों में दूसरी रियासतों के मुकाबले ज्यादा बेहतर है। रियासत के मुसलमानों की आबादी नौ फीसद है और यहा सरकारी नौकरियों में उनकी तादाद पांच फीसद और पब्लिक सेक्टर में तकरीबन आठ फीसद हैं। सच्चर कमेटी से जुड़े एक मेम्बर का कहना है कि कमेटी की रिपोर्ट इस बात की कलई खोल देगी कि मुल्क की मुख्तलिफ सियासी पार्टियां मुसलमानों की मुंह भराई (तुष्टिकरण) कर रही है या नहीं वाजेह हो कि मुल्क की फिरकापरस्त पार्टियां बार–बार इस बात

(शेष पृष्ठ २६ पर)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

बाकसिंग की दुन्या के बादशाह मुहम्मद अली को संयुक्त राष्ट्र के रीलीफ कामों और नागरिक अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए जर्मनी ने शान्ति पुरस्कार स पुरिसकृत किया। यह शान्ति पुरस्कार जर्मनी के रसायन शास्त्र वि ोशज्ञ आरोहन की याद में दिया जाता है। बर्लिन मेयर कलाऊज़ वावर्ट ने यह पुरस्कार देने के बाद कहा कि मुहम्मद अली केवल बाक्सिंग चैम्पियन नहीं हैं बल्कि वह शान्ति दूत हैं। यह पुरस्कार हर दोसाल बाद दिया जाता है। इससे पहले यह पुरस्कार रूस के रा ट्रपति मीखाइल गर्वाचोफ और समून व जेनीयल को मिल चुका है इस औसर पर मौजूद मुहम्मद अली की बीवी ने कहा कि मुहम्मद अली ने मुश्किलतरीन हालात में काम किया लेकिन हालात उन पर हावीन हो सके।

• यूरोपियन इस्लामिक इनवेस्ट बैंक शरअी सीमाओं की पाबन्दी के साथ ऐसा बैंक बन गया है जिसे ब्रिटेन में पूंजी निवेश और लोगों को धन जमा करने की इजाजत मिलाई है। ब्रिटेन की फाइनानशियल सर्विसेज अथार्टी की तरफ से इजाजत दिये जाने के बाद ईआइ आई बी के लिए लन्दन के एआइ एक स्टाक मार्केट में प्रारम्भिक शेयर जारी करने का रास्ता खुल गया है। बैंक के मैनेजिंग डाइरेकटर जान वागलन ने बताया कि हमारी इच्छा है कि लन्दन स्टाक एक्सचेंज मार्केट में हमारा नाम शीघ्र दर्ज हो जाए। उन्होंने कहा कि बैंक अप्रैल में काम करना शुरू कर देगा और तीन महीने के भीतर स्टाक एक्सचेंज में हमारा ना दर्ज हो जाने की आशा है। इ.आइ इ.आइ. बैंक २००४ में स्थापित किये गए इसलामिक बैंक आफ बर्लिन के बाद दूसरा बैंक है जिसे एक गैर मुसलिम देश में पूर्ण इस्लामिक शरअी कानून के साथ कारोबार करने की इजाज़त दी गई है जिसके अनुसान मुसलमानों को न तो सूद लेने और नही देने की अनुमत है। इसी प्रकार शराब,जूवा और सूद आदि से सम्बन्धित उद्योगों में भी पूंजीनिवेश की अनुमत नहीं है। बैंक को आशा है कि उसे मध्यपूर्व के बहुत से ग्राहक मिल जाएंगे जहां तेल की कीमतों में इजाफे की वजह से पैसे की रेलपेल हो गई है।

• ई. आइ. ·आइ. बी. के बुनियादी शेयर हो लडरों में खाड़ी देशों की बाज संस्थाएं और लोग तथा इस्लामी बैंक यूरोप की कुछ कम्पनियां शामिल हैं। मिस्टर वैगलन ने बताया कि खाड़ी और शियाई मर्केट के ऐसे पूजानिवेशब्द जो इस्लामी शरीअत के अनुसार पश्चिमी दुन्या में काम करने वाली किसी कम्पनी में पूंजी निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए यह एक अच्छा विकल्प (मुतबादिल) होगा। उन्होंने बताया कि पश्चिम में भी लोगों के अन्दर नैतिक (अखलाक़ी)पूंजी निवेश की ओर रूचि में वृद्धि हो रही है और शरअी क़ानून की पाबन्दी करने वाले उद्योग ऐसे लोगों के लिए एक बेहतरीन विकल्प है। उन्होंने कहा हम खायती फाइनानशिमले मार्केट और इस्लामी पूंजीव्यापार के दर्मियान खाई को पाटना चाहते हैं यूरोपियन इस्लामिक इनवेस्टमेंट बैंक ने जनवरी २००५ में ब्रिटेन में अपना रजिस्ट्रेशन क़राया था और कारोबार शुरू करने के लिए वित्त विभाग (महकम–ए–मालियात) को अगस्त में नियमनुसार प्रार्थना पत्र दिया था।

शाही फरमान से ८ हजार कैदियों को रिहाई मिलेगी

हरमैन शरीफ (काबा) के सेवक शाह अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अजीज के शाही हुक्मनामे के जारी होने के बाद ४८ घंटे के अन्दर कैदियों को रिहा कर दिया जायेगा। इस हुक्म नामे के अनुसार ३८०० से लेकर ४००० तक कैदी सऊदी शहरी और अन्य देशों के रहने वाले रिहा किये जायेंगे। सऊदी गृहमंत्री (वजीरे दाखिला) प्रिंस नाइफ बिन अब्दुल अजीज ने शाह अब्दुल्लाह के हुक्म पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए रिहाई के आदेश का स्वागत किया है। शाहजादा नाइफ बिन अब्दुल अजीज ने कहा सऊदी अरब इंसानियत नवाज राज्य का दर्जा रखता है।

आप अपना चन्दा वक़्त पर भेजें ताकि सच्चा राही माली दुश्वारियों से बचा रहे।